लोक कथाओं में वाद्य

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title : Lok Kathaon Mein Vaadya (Musical Instruments in Folktales)
Cover Page picture : Drum, Flutes and Harp
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : hindifolktales@gmail.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

लोक कथाओं में वाद्य 7

1 शिकारी और उसकी करामाती बॉसुरी 9

2 जादू की बॉसुरी 18

3 बॉसुरी 28

4 आश्चर्यजनक बॉसुरी वादक 37

5 बॉसुरी बजाने वाला गूँगा 41

6 मोर का पंख 50

7 चतुर सँपेरा 57

8 बर्फ की लड़की 62

9 तीन उम्मीदवार 78

10 बन्दर और उसकी वायलिन 84

11 एक लड़का और वायलिन 90

12 राजा का जादू का ढोल 98

13 जादू का ढोल 113

14 कछुआ और ढोल 127

15 गाता हुआ ढोल 134

16 ढोल बजाने वाला और मगर 145

17 कैन्डी वाला आदमी 158

18 बन्दर का ढोल 165

19 ऐकन ढोल 174

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में वाद्य

बहुत पुराने समाज में अपने आप को व्यक्त करने के लिये शायद "बोला हुआ शब्द" ही सबसे पहला साधन रहा होगा। इस शब्द में यह जरूरी नहीं है कि कोई भाषा ही हो, कोई भी और किसी भी प्रकार की आवाज हो सकती है – मुँह से निकाली हुई या फिर किसी बर्तन से निकाली हुई या फिर किसी संगीतमय वाद्य से निकाली हुई।

शब्द के बाद आती है बारी संगीत का। संगीत भी पुराने समाज का एक अटूट हिस्सा है। संगीत सुनने में मधुर होता हे और गाने में आसान होता है। अब गाने के साथ साथ वाद्य तो चलना ही चाहिये। तो पुराने समाज में सबसे पहले ढोल का आविष्कार हुआ। गाने नाचने में इसके बिना काम नहीं चलता था। स्त्री पुरुष और बच्चे सभी इसकी ताल पर नाचते थे।

उन दिनों यह केवल संगीत के साथ बजाने के ही काम नहीं आता था बल्कि और भी कई काम आता था जैसे, किसी गॉव के सरदार को अगर अपने लोगों से कुछ कहना होता था तो एक आदमी गॉव के बीच में खड़ा हो कर ढोल बजाता था जिससे सब लोग यह सुनने के लिये वहॉ आ जाते थे कि उनका सरदार उनसे क्या कहना चाहता था। उस समय ये ढोल "बोलते हुए ढोल"[1] कहलाते थे।

यह बहुत पुरानी बात नहीं है। क्या तुमको मालूम है कि जब सम्राट अकबर की रानी के बच्चा होने वाला था तो उसको लड़ाई के लिय दक्षिण की तरफ जाना पड़ा। वह चाहता था कि उसको अपने बच्चे के जन्म की खबर सबसे जल्दी मिल जाये। पर यह कैसे हो क्योंकि उस समय खबर भेजने का कोई ऐसा साधन नहीं था जिससे वह इतनी दूर बैठा यह खबर जल्दी से जल्दी पा सके। सो कुछ कुछ दूरी पर एक एक ढोल बजाने वाला खड़ा किया गया जहॉ से वह आगे पीछे खड़े होने वाले ढोल बजाने वाले के ढोल की आवाज सुन सके।

सो जब बच्चा हुआ तो पहले ढोल वाले ने अपना ढोल बजाया। उसके ढोल की आवाज सुन कर दूसरे ने अपना ढोल बजाया, फिर तीसरे ने, फिर चौथे ने... । इस तरह से यह ढोल बजाने की आवाज अकबर तक पहुँची और उसको पता चला कि उसके बेटा हुआ है। तो यह है ढोल की करामात।

दुनियॉ में बहुत सारे संगीत के वाद्य हैं जैसे भारत में सितार, वीणा, सरोद; पश्चिनी देशों में गिटार, सैक्सोफोन, हार्प, पियानो आदि। इनमें से कुछ वाद्यों ने वहॉ की लोक कथाओं में भी अपनी जगह बना ली है जैसे बॉसुरी, ढोल, हार्प, वायलिन।

इस पुस्तक "लोक कथाओं में वाद्य" में हम कुछ ऐसी ही लोक कथाऐं दे रहे हैं जो वाद्यों पर आधारित हैं। ये लोक कथाऍ हमने दुनियॉ के कई देशों की लोक कथाओं से संकलित की हैं और उनको तुम्हारे लिये यहॉ दे रहे हैं। अफ्रीका में ढोल का आज भी बहुत महत्व है पर दूसरे देशों मं भी वाद्यों की महत्ता कम नहीं है। इस पुस्तक में कुछ लोक कथाऐं अफ्रीका के नाइजीरिया, मिश्र, और सोमालिया देशों की हैं एक लोक कथा उत्तरी अमेरिका के कैनेडा देश की है और कुछ यूरोप के देशों की हैं जैसे स्काटलैंड।

तो लो पढ़ो वाद्यों पर आधारित ये लोक कथाऐं संसार के विभिन्न देशों से ली गयी और देखो कि कहॉ कहॉ वाद्य किस किस तरह इस्तेमाल किये जाते है।

---

[1] Talking Drums

1 शिकारी और उसकी करामाती बॉसुरी[2]

वाद्यों की यह पहली लोक कथा हमने अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार नाइजीरिया देश में ओजो[3] नाम का एक बहुत ही अच्छा शिकारी रहता था। वह भी दूसरे योरुबा[4] शिकारियों की तरह कई कई महीनों तक शिकार के लिये बाहर रहता था।

ओजो जंगल में जा कर ताड़ के पत्तों और डंडियों आदि से अपने रहने के लिये एक झोंपड़ी बना लेता और फिर वहॉ से अपना तीर कमान ले कर वह रोज शिकार के लिये निकल जाता।

हर रात सोने से पहले वह अपने लाये शिकार का मॉस भूनता। जब उसके पास काफी भुना मॉस इकट्ठा हो जाता तब वह अपनी पत्नी के पास जाता और उसकी पत्नी उस भुने मॉस को बेच कर घर की जरूरत की चीज़ें खरीद लाती।

ओजो के पास तीन कुत्ते थे। उसने उनके बड़े अजीब से नाम रखे हुए थे। एक का नाम था "टुकड़े कर दो", दूसरे का नाम था "खा डालो" और तीसरे का नाम था "साफ कर दो"।

इन तीन कुत्तों के अलावा उसके पास एक पुरानी बॉसुरी भी थी जिसके बारे में ओजो का कहना था कि वह बड़ी करामाती थी।

---

[2] The Hunter and His Magic Flute - a Yoruba folktale from Nigeria, Africa.

[3] Ojo – the name of a Nigerian male

[4] There are three main tribes in Nigeria – Yoruba, Hausa and Ibo or Igbo.

उसका यह भी कहना था कि जंगल में वह कितनी भी दूर चला जाये पर जब भी वह बॉसुरी बजाता था उस बॉसुरी की आवाज सुन कर उसके तीनों कुत्ते उसके पास भागे चले आते थे।

एक बार शिकार पर जाते समय उसने अपने तीनों कुत्तों को घर में बॉध कर छोड़ दिया और अपनी पत्नी से कहा कि वह उनकी ठीक से देखभाल करे और किसी भी समय अगर वे ज़रा से भी बेचैन दिखायी दें तो वह उनको तुरन्त ही छोड़ दे। ऐसा कह कर वह वहॉ से शिकार के लिये चल दिया।

तीन दिन के सफर के बाद वह एक ऐसी जगह पर आया जहॉ उसको अपना कैम्प लगाना था। वह इस तरफ पहले कभी नहीं आया था। उसकी अनुभवी ऑखें बता रहीं थीं कि उसको शिकार के लिये यहॉ पर काफी जानवर मिलेंगे।

ओजो अपना तम्बू लगाने में लग तो गया पर वहॉ उसको बहुत डर लग रहा था। उसको ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई उसको चोरी छिपे देख रहा है। और वह भी कोई आदमी या जानवर नहीं बल्कि कोई भूत देख रहा है।

जब वह छोटा था तो अक्सर जंगल में रहने वाले भूतों के बारे में सुनता रहता था। वह उनसे डरता भी था हालॉकि उसका उनसे कभी सामना नहीं हुआ था।

दूसरे शिकारियों ने तो उनको देखा भी था यहाँ तक कि उनकी जंगल की माँ इयाबोम्बा[5] से मुलाकात भी हुई थी। उनका कहना था कि माँ इयाबोम्बा दस आदमियों के बराबर बड़ी है और उसके शरीर पर बहुत सारे भूखे मुँह लगे हुए हैं।

जब ओजो का तम्बू लग गया तो वह उसमें अन्दर आराम करने के लिये लेट गया। उसको अभी भी ऐसा लग रहा था कि कोई कहीं से उसे देख रहा है। यह ख्याल अभी भी उसके दिमाग से निकल नहीं पा रहा था।

पर कुछ ही देर में उसको लगा कि कोई चीज़ उसके पास आती जा रही थी। वह चीज़ क्या थी वह उसको देखने के लिये उठ कर खड़ा हो गया कि इतने में उसने देखा कि जंगल की माँ इयाबोम्बा उसके सामने खड़ी है।

वह उसको देख कर इतना डर गया कि उससे भागा भी नहीं जा सका। वह तो बस जहाँ का तहाँ खड़ा ही रह गया।

अचानक इयाबोम्बा बोली — "शिकारी, तू डर नहीं। मुझे मालूम है कि तू यहाँ क्यों आया है। अगर तू मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा तो मैं भी तुझे नहीं खाऊँगी।" और जैसे वह अचानक आयी थी वैसे ही अचानक वह चली भी गयी।

ओजो का शिकार करने का समय आ गया था पर वह सोच रहा था कि क्या इयाबोम्बा के वायदे पर भरोसा किया जा सकता

[5] Iyabomba – the mother of Forest

है? वह सारा दिन शिकार करता रहा और जब वह शाम को शिकार करके लौटा तो जंगल की मॉ का डर उसके दिमाग से निकल चुका था। रात को उसने मॉस काटा और उसे भूनने के लिये आग जलायी। मॉस भूना, खाना पकाया, खाना खाया और सो गया।

अगले दिन वह फिर शिकार पर निकल गया और जब वह अपना सारे दिन का शिकार ले कर अपने तम्बू में लौटा तो उसे लगा कि कोई उसके पीछे उसके तम्बू में आया था। उसे इयाबोम्बा के बड़े बड़े पैरों के निशान पहचानने में देर नहीं लगी।

जब वह अपनी झोंपड़ी में घुसा तो उसने देखा कि कल का भुना हुआ मॉस वहॉ से गायब था। ओजो ने सोचा अगर उसका मॉस गायब हो गया तो कोई बात नहीं क्योंकि अब शायद जंगल की मॉ सन्तुष्ट हो गयी होगी इसलिये उसने आग जला कर उस दिन का लाया मॉस भूनना शुरू कर दिया।

पर इयाबोम्बा अभी भी सन्तुष्ट नहीं हुई थी क्योंकि ओजो जब भी शिकार कर के वापस लौटता तो अपना पहले दिन का लाया मॉस गायब पाता। इसलिये वह अपने घर ले जाने के लिये भुना हुआ मॉस जमा ही नहीं कर पा रहा था।

उसको यह भी डर था कि वह किससे पूछे कि इयाबोम्बा ऐसा क्यों करती थी। वह रोज उसका मॉस क्यों ले जाती थी। इयाबोम्बा से तो वह यह बात पूछ ही नहीं सकता था क्योंकि तब तो शायद वह उसी को खा जाती।

एक हफ्ता गुजर चुका था। ओजो रोज शिकार करता, रोज मॉस भूनता पर उसके पास भुना हुआ मॉस ज़रा सा भी जमा नहीं हो पा रहा था।

ओजो का गुस्सा इसलिये और भी ज़्यादा बढ़ रहा था क्योंकि इतने ज़्यादा शिकार उसको पहले कभी किसी एक जगह पर और जगह नहीं मिले थे। पर इस तरीके से तो अगर वह वहॉ पर एक साल भी और रहता तो भी शायद वह कुछ नहीं बचा पाता।

एक दिन ओजो के सब्र का बॉध टूट गया और उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया। इस गुस्से ने उसका डर दूर कर दिया और उस दिन वह इयाबोम्बा का अपनी झोंपड़ी में बैठ कर इन्तजार करने लगा पर उस दिन वह वहॉ आयी ही नहीं।

अन्त में उसने अपना सामान बॉधा और वापस जाने लगा। जाते जाते वह चिल्लाया — "तुमने मेरे मारे शिकार का मॉस क्यों खाया? क्या तुम्हारे जंगल में जो भी शिकारी आता है तुम हर उस शिकारी का मॉस चुरा लेती हो?"

उसका इतना बोलना था कि इयाबोम्बा अपने सारे मुँह खोले हुए जंगल में भयानक आवाज करती हुई ओजो के सामने आ खड़ी हुई जैसे कि वह उसको खा ही जायेगी।

उसको देखते ही ओजो वहॉ से भाग खड़ा हुआ। इयाबोम्बा उसको पीछे से बुला रही थी परन्तु ओजो तो रुकने का नाम ही नहीं

ले रहा था। वह तो बस भागा जा रहा था, भागा जा रहा था, भागा जा रहा था।

पर उसके भागने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि जंगल की मॉ बहुत बड़ी थी और वह पल भर में ही ओजो के पास तक आ गयी। उसको पास आया देख कर ओजो एक पेड़ पर चढ़ गया।

आश्चर्य की बात कि जंगल की मॉ पेड़ पर नहीं चढ़ सकती थी इसलिये उसने नीचे से पेड़ का तना काटना शुरू कर दिया।

ओजो डर गया कि जब पेड़ कट जायेगा तब क्या होगा। पेड़ के कटते ही पेड़ गिर जायेगा और साथ में ओजो भी और फिर वह जंगल की मॉ ओजो को खा जायेगी। तभी ओजो को अपनी बॉसुरी याद आयी और उसने अपनी बॉसुरी बजानी शुरू कर दी।

बॉसुरी की आवाज सुनते ही उसके घर में उसके तीनों कुत्ते भौंकने लगे। ओजो की पत्नी ओजो के कहे अनुसार उनकी रस्सी खोलने गयी तो उसने देखा कि उसके रस्सी खोलने से पहले ही उन कुत्तों ने अपनी रस्सी तोड़ ली थी और वे बॉसुरी की आवाज की तरफ भाग लिये थे।

इधर इयाबोम्बा जल्दी जल्दी पेड़ का तना काट रही थी। ओजो ने कुछ पल तो अपने कुत्तों का इन्तजार किया पर उसने देखा कि पेड़ तो बस गिरने ही वाला था सो उसने अपनी जेब से एक चमड़े का बटुआ निकाला और उसमें रखा जादुई पाउडर पेड़ पर डाल दिया। इससे वह पेड़ फिर से साबुत हो गया।

इयाबोम्बा को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि अभी अभी तो उसने इतना सारा पेड़ काटा था पर फिर से यह साबुत कैसे हो गया?

पर उसको तो पेड़ काटना ही था सो उसने फिर से उस तने को काटना शुरू कर दिया। पर जब भी पेड़ गिरने को होता तो ओजो उस पर थोड़ा सा अपना जादुई पाउडर डाल देता और वह पेड़ फिर से साबुत हो जाता।

इस तरह पेड़ को काटते और साबुत करते करते काफी देर हो गयी। अब तो ओजो का पाउडर भी खत्म हो गया था और अब पेड़ फिर से गिरने वाला था।

वह बहुत परेशान था कि अब क्या होगा था। जैसे ही यह पेड़ गिरा नहीं कि यह जंगल की मॉ इयाबोम्बा उसको खा जायेगी। तभी उसने देखा कि उसके तीनों कुत्ते भागे चले आ रहे हैं।

कुत्तों को देखते ही उसकी जान में जान आ गयी। देखते देखते उसके वे तीनों कुत्ते इयाबोम्बा पर टूट पड़े और थोड़ी ही देर में उन्होंने इयाबोम्बा को मार दिया और उसका काफी सारा मॉस भी खा लिया।

ओजो पेड़ से नीचे उतर आया और अपने सामान और कुत्तों के साथ अपने घर वापस आने लगा कि तभी उसने देखा कि उसके सामने एक बहुत सुन्दर लड़की खड़ी है।

वह बोली — "मुझे इयाबोम्बा ने कैदी बना कर रखा हुआ था और अब जब तुमने उसे मार दिया है तो मैं आजाद हो गयी हूँ। क्या तुम मुझे अपने घर ले चलोगे ओजो और मुझे अपनी पत्नी बनाओगे?"

ओजो को उसके मुँह से अपना नाम सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह लड़की उसका नाम कैसे जानती थी पर फिर भी वह उसको अपनी पत्नी बना कर अपने घर ले आया।

उसकी पहली पत्नी उन सबको देख कर बहुत खुश हुई और यह जान कर भी कि जंगल की माँ इयाबोम्बा मर चुकी है और उसके पति ने इस लड़की को उसके चंगुल से बचा लिया है।

पर उसी रात को एक अजीब घटना हुई। ओजो की दूसरी पत्नी उठी और एक बहुत बड़ी औरत के रूप में बदलने लगी जिसके बहुत सारे मुँह थे।

असल में यह इयाबोम्बा की बहिन थी और उसकी हत्या का बदला लेने के लिये ओजो की पत्नी बन कर आयी थी। पर तीनों कुत्तों को उसकी सूँघ आ गयी और उन्होंने उसको भी खा लिया। इस तरह से ओजो के कुत्तों ने इयाबोम्बा और उसकी बहिन दोनों को मार डाला।

ओजो अब जब उस जंगल में शिकार के लिये जाता था तो उसको कोई तंग नहीं करता था। अब वह वहाँ से बहुत सारा शिकार कर के लाता था।

पर इयाबोम्बा के मरने के बाद भी वह अपनी बॉसुरी अपने साथ ले जाना नहीं भूलता था। पता नहीं कब उसको अपनी उस बॉसुरी की जरूरत पड़ जाये। लेकिन उसने फिर कभी दूसरी शादी नहीं की।

2 जादू की बॉसुरी[6]

वाद्यों की यह दूसरी लोक कथा भी अफ्रीका की ही है पर यह मिश्र देश की है और यह भी बॉसुरी की ही कथा है।

एक बार मिश्र देश में एक सुन्दर राजकुमार रहता था। उसका नाम तमीनो[7] था। वह एक अक्लमन्द और चतुर आदमी बनना चाहता था इसलिये वह एक अच्छे गुरू की खोज में भटक रहा था।

एक दिन जब वह नील नदी के पास से गुजर रहा था तो अचानक एक बहुत बड़े अजगर[8] ने उस पर हमला कर दिया।

तमीनो को अपनी जान के लाले पड़ गये। वह बेचारा अपनी जान बचाने के लिये इतना भागा, इतना भागा कि उससे और ज़्यादा नहीं भागा गया और वह जमीन पर गिर गया और गिरते ही थकान और डर से बेहोश हो गया।

उस अजगर ने भी उसका पीछा किया और अपना सिर उठा कर उसे काटने ही वाला था कि न जाने कहॉ से तीन सुन्दरियॉ प्रगट हुईं और उन्होंने बिजली की सी तेजी से तलवार के एक ही वार से अजगर के दो टुकड़े कर दिये।

[6] Magical Flute – a folktale from Egypt, Africa.
[7] Tamino – the name of the Prince
[8] Translated for the word “Python”. See its picture above

उन्होंने आपस में कहा — "अब हमें चल कर इस सुन्दर राजकुमार के बारे में रात की रानी को बताना चाहिये।" सो वे रात की रानी को उस राजकुमार के बारे में बताने चली गयीं।

जब रात की रानी ने तमीनो के बारे में सुना तो वह उसे देखने के लिये खुद वहाँ आयी। उसने राजकुमार से कहा — "राजकुमार, यह देखो, यह मेरी बेटी पामीना[9] की तस्वीर है। इसे एक दुष्ट जादूगर चुरा कर ले गया है जिसका नाम सारस्त्रो[10] है। अगर तुम इसे उस जादूगर से छुड़ा कर ले आओगे तो यह तुम्हारी रानी बन जायेगी।"

तमीनो ने उस तस्वीर को देखा तो वह उसको देखते ही बोला — "मैं तुरन्त ही चला जाता हूँ और इस राजकुमारी को सारस्त्रो के चंगुल से छुड़ा कर ले आता हूँ।" वह तुरन्त ही उस राजकुमारी को लाने के लिये इसलिये राजी हो गया था क्योंकि उसे उस तस्वीर वाली लड़की से प्यार हो गया था।

रात की रानी बोली — "रुको, तुम अकेले नहीं जाओगे। मैं पापाजीनो[11] को तुम्हारे साथ भेजती हूँ। वह मेरा चिड़िया पकड़ने वाला आदमी है और सारस्त्रो[12] का पता जानता है।

[9] Pamina – the daughter of the Queen of Night
[10] Sarastro – the name of the magician.
[11] Papagino – the bird catcher of the Queen of Night
[12] Sarastro – the magician who took away Pamina, the daughter of the Queen of Night

मैं तुम दोनों को एक एक जादू का बाजा दूँगी जो तुम्हारे काम आयेगा। पापाजीनो के पास जादू की घंटियॉ होंगी और तुम्हारे पास जादू की बॉसुरी। वे तुम दोनों के काम आयेंगीं।"

पापाजीनो ऊपर से ले कर नीचे तक सुन्दर पंखों से सजा हुआ था। उसके पास एक चिड़ियों का पकड़ने वाला बाजा भी था। उस बाजे से वह चिड़ियों को पकड़ कर अपने सुनहरे पिंजरे में बन्द कर लेता था।

रात की रानी ने राजकुमार को जादू की बॉसुरी दी और पापाजीनो को जादू की घंटियॉ। जब दोनों को अपने अपने जादू के बाजे मिल गये तो वे दोनों अपने सफर पर निकल पड़े।

पापाजीनो को सारस्त्रो का घर मालूम था सो जब वे नील नदी के किनारे बने एक महल के पास पहुँचे तो पापाजीनो बोला — "यही है सारस्त्रो का घर।"

तभी तमीनो ने पामीना को एक खिड़की में खड़े देखा। उसको लगा कि पामीना तो अपनी तस्वीर से भी ज़्यादा सुन्दर है। पापाजीनो बोला — "हम लोग खिड़की से चढ़ते हैं और पामीना को ले कर रात की रानी के पास चलते हैं। अभी हमें कोई देख भी नहीं रहा है।"

तमीनो व पापाजीनो दोनों खिड़की के रास्ते चढ़ कर महल के अन्दर पहुँचे। पामीना उनको देख कर डर गयी लेकिन तभी तमीनो ने अपने होठों पर उँगली रखते हुए कहा — "चुप, शोर न करो

और डरो भी नहीं। हम तुम्हारे दोस्त हैं और तुम्हें सारस्त्रो से बचाने तथा तुम्हें तुम्हारी मॉ रात की रानी के पास ले जाने के लिये आये हैं।"

तभी दरवाजा खुला और सारस्त्रो के आदमी अन्दर आ गये । उनके सरदार ने पामीना को पकड़ लिया और उसे रस्सी से बॉधना शुरू कर दिया।

पापाजीनो को अपनी घंटियों की याद आयी तो उसने वे घंटियॉ बजा दीं। घंटियों के बजते ही वे सभी आदमी ऐसे गिर गये जैसे किसी ने उनको मार कर गिरा दिया हो।

पापाजीनो ने आश्चर्य से कहा — "अरे, मैंने तो सोचा भी नहीं था कि मेरी घंटियॉ ऐसा काम करेंगी।"

तमीनो बोला — "आओ पापाजीनो, पामीना की रस्सियॉ खोलने में मेरी मदद करो।"

पापाजीनो पामीना की रस्सियॉ खोलने में तमीनो की मदद करने लगा। वे अभी रस्सियॉ खोल ही रहे थे कि फिर कोई दरवाजे पर दिखायी दिया। वह आदमी बहुत ही लम्बा था और बहुत ही शानदार कपड़े पहने था।

पापाजीनो ने हकलाते हुए पूछा — "तु तु तुम क कौन हो?"

उस लम्बे आदमी ने जवाब दिया — "मैं सारस्त्रो हूॅ, अक्लमन्दी के मन्दिर का बड़ा पुजारी।"

पापाजीनो ने झुक कर कहा — "मेहरबानी कर के हमें कोई नुकसान न पहुँचाइये, सारस्त्रो जी। अगर आप हमें अभी चले जाने देंगे तो हम वायदा करते हैं कि हम आपको फिर कभी तंग नहीं करेंगे।"

सारस्त्रो ने अपना हाथ ऊपर उठाया और बोला — "तुम इतने डरे हुए क्यों हो? तुम बिल्कुल मत डरो। मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूँगा।"

तमीनो बोला — "मगर रात की रानी तो कहती है कि आप एक दुष्ट जादूगर हैं।"

सारस्त्रो बोला — "रात की रानी झूठ बोलती है। वह तो खुद ही एक चुड़ैल जादूगरनी है। मैंने यहाँ पामीना को उसके पंजों से बचा कर रखा हुआ है।"

पापाजीनो ने पूछा — "और तुम्हारे ये रक्षक जिन्होंने हमको बाँधने की कोशिश की?"

सारस्त्रो बोला — "वे तुम्हारे साथ इतनी निर्दयता का बर्ताव नहीं कर सकते। अगर उन्होंने ऐसा किया है तो उनको इसकी सजा जरूर मिलेगी। आओ तुम लोग मेरे साथ आओ।"

कहता हुआ सारस्त्रो उन सबको एक बड़े से सुन्दर कमरे में ले गया जहाँ उसने उनको मीठे रसीले फल खिलाये। इस बीच तमीनो ने सारस्त्रो को बताया कि वह अक्ल और सत्य की खोज में इधर उधर भटक रहा है।

सारस्त्रो ने कहा — "तब भगवान ने तुमको ठीक जगह पर भेजा है क्योंकि तुम अगर हमारे साथ रहोगे तो एक दिन जरूर ही अक्लमन्द बन जाओगे।

लेकिन हमारे साथ रहने से पहले तुम्हें दो इम्तिहान देने पड़ेंगे — पहला तो यह कि तुम मन्दिर के एक कमरे में रहोगे जिसका नाम है "शान्ति घर"।

वहाँ कुछ भी हो पर तुम कुछ बोलोगे नहीं और न ही तुम अपना मुँह खोलोगे। यह तुम्हारी इच्छा शक्ति का इम्तिहान होगा। क्या तुम इस इम्तिहान के लिये तैयार हो?"

तमीनो ने जवाब दिया — "हाँ मैं तैयार हूँ। आओ पापाजीनो, हम और तुम दोनों एक साथ मिल कर यह इम्तिहान देंगे।"

सारस्त्रो का एक पुजारी तमीनो और पापाजीनो दोनों को जमीन के नीचे बने एक कमरे में ले गया जो मन्दिर के काफी भीतर था। उसमें कोई खिड़की नहीं थी और जब उस कमरे का दरवाजा भी बन्द हो गया तब तो उस कमरे में बिल्कुल ही अँधेरा हो गया।

पापाजीनो गिड़गिड़ाया — "तमीनो, मुझे डर लग रहा है।"

तमीनो ने फुसफुसाते हुए कहा — "चुप पापाजीनो, यह हमारे चुप रहने का इम्तिहान है।"

कुछ देर के बाद उस कमरे का दरवाजा खुला और दो सुन्दर लड़कियाँ दो थाल में बहुत ही बढ़िया खाना लिये अन्दर आयीं।

पापाजीनो तो उनको देख कर बिल्कुल ही भूल गया कि वह चुप रहने का इम्तिहान दे रहा है, वह तुरन्त बोला — "मुझे तो बहुत ज़ोर की भूख लग रही है।" पर तमीनो ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया।

जब उनका वह इम्तिहान खत्म हो गया तो सारस्त्रो उनको देखने आया और बोला — "बहुत अच्छे तमीनो। तुम इस इम्तिहान में तो पास हो गये, अब तुम मेरे पीछे आओ।" कह कर वह उन दोनों को अपने साथ ले गया।

दोनों उसके पीछे पीछे चल दिये। चलते चलते वे लोग मन्दिर के पीछे वाली गुफा में पहुँचे। सारस्त्रो ने उनसे कहा — "यहाँ भी कुछ भी होता रहे तुमको बस यहीं खड़े रहना है।" और वह उनको वहीं खड़ा छोड़ कर चला गया।

जब तमीनो और पापाजीनो वहाँ खड़े हुए थे तो अचानक एक भट्टी का दरवाजा खुला और उसमें से लपटें निकलने लगीं। वह गुफा गर्म होती गयी और उसमें धुँआ भी भरता गया और फिर उस गुफा में इतना अधिक धुँआ भर गया कि उस धुँए की वजह से पापाजीनो और तमीनो दोनों को साँस लेना भी मुश्किल हो गया।

पापाजीनो चिल्लाया — "बचाओ बचाओ, मेरे पंख जले जा रहे हैं।" और वह गुफा से निकल कर नील नदी में कूद गया।

लेकिन तमीनो वहीं शान्त खड़ा रहा। आखिर धीरे धीरे गर्मी कम होती गयी और धुँआ भी छँट गया। और फिर भट्टी का दरवाजा भी बन्द हो गया।

सारस्त्रो वहाँ आ गया था। वह तमीनो से बोला — "तमीनो बहुत अच्छे, यह तुम्हारी अग्नि परीक्षा थी। इससे वीरता का इम्तिहान होता है।

तुमने ये दोनों ही इम्तिहान पास कर लिये हैं इसलिये अब तुम हमारे साथ रह सकते हो और मिश्र के आइसिस और ओसिरिस[13] देवताओं से अक्ल ले सकते हो।"

पापाजीनो ने तुरन्त पूछा "और मैं?"

सारस्त्रो ने जवाब दिया — "तुम्हारे लिये मैं कुछ नहीं कह सकता क्योंकि तुम यह दोनों ही इम्तिहान पास नहीं कर सके। पर अगर तुम चाहो तो यहाँ रह कर तमीनो की सेवा कर सकते हो।"

इसी समय एक बिजली चमकी और कड़की और वहाँ रात की रानी प्रगट हुई। वह चिल्लायी — "रुक जाओ, पापाजीनो मेरा है, और पामीना भी। मैं यहाँ उनको लेने आयी हूँ। अब तुम मुझे नहीं रोक सकते सारस्त्रो, मेरी ताकत तुमसे ज्यादा है।"

कह कर रात की रानी ने अपनी जादू की छड़ी उठायी और पापाजीनो और पामीना को अपने पीछे आने के लिये कहा। लेकिन

[13] Isis and Osiris are the gods of Egyptians

उसी समय तमीनो को अपनी जादू की बॉसुरी का ध्यान आया जो उसे रात की रानी ने दी थी।

उसे उस बॉसुरी पर भरोसा तो नहीं था कि वह बॉसुरी पापाजीनो और पामीना को रात की रानी के चंगुल से निकाल लेगी परन्तु फिर भी उसने उसे बजाना शुरू कर दिया। एक अजीब सी धुन उस बॉसुरी में से निकली।

रात की रानी के हाथ से उसकी जादू की छड़ी छूट गयी और एक बार फिर वह बिजली की चमक और कड़क के साथ गायब हो गयी।

पापाजीनो खुश हो कर बोला — "अहा, अच्छा हुआ रात की रानी चली गयी। मैं रात की रानी का चिड़िया पकड़ने वाला नहीं बनना चाहता था। वह हमेशा ही मुझसे लड़ती झगड़ती रहती थी। अच्छा हुआ यह सब खत्म हो गया।"

पामीना बोली — "बहादुर राजकुमार तमीनो, मैं भी तुम्हारे साथ इस मन्दिर में रहना चाहती हूँ।"

इस पर सारस्त्रो ने कहा — "हॉ हॉ, क्यों नहीं। और जब यह पढ़ लिख कर लायक बन जाये तब तुम इससे शादी भी कर सकती हो।" इस सबसे तमीनो बहुत अधिक खुश था।

उसका उद्देश्य पूरा हो चुका था। वहॉ रह कर उसने मिश्र के देवताओं से बहुत सारी अक्लमन्दी हासिल की और उसके बाद पामीना के साथ वह अपने राज्य वापस लौट गया।

घर पहुँच कर तमीनो ने पामीना से शादी कर ली और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

3 बॉसुरी[14]

वाद्यों की लोक कथाओं के इस संग्रह में यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नइजीरिया देश से ली गयी है। इस लोक कथा को वहॉ के बच्चे बड़े शौक से कहते सुनते हैं। तो लो तुम भी पढ़ो वहॉ की यह लोक कथा अब हिन्दी में।

इस लोक कथा में एक बच्चा अपनी बॉसुरी तो भूतों से वापस लाता ही है साथ में उनसे खजाना भी साथ में ले आता है।

बहुत साल पुरानी बात है एक आदमी अपनी दो पत्नियों के साथ रहता था। उसकी बड़ी पत्नी के तो कई बच्चे थे परन्तु छोटी पत्नी के केवल एक ही बेटा था।

एक दिन वह आदमी अपने सारे परिवार के साथ खेत पर गया। वहॉ सारे दिन सबने मिल कर काम किया फिर शाम को अपने अपने चाकू हल टोकरियॉ आदि इकट्ठी कीं और जल्दी जल्दी अपने घर चल दिये।

सात जंगल और सात नदियॉ पार कर वे सब अपने घर आये। अचानक उसकी छोटी पत्नी का बेटा बोला कि वह अपनी बॉसुरी तो खेत पर ही भूल आया था और अब वह उसको लाने के लिये अभी अभी वापस खेत पर जाना चाहता था।

[14] Flute – a folktale from Nigeria, Africa.

उसकी माँ ने रो कर उससे कहा भी कि इस समय रात को वह बाँसुरी लेने वहाँ न जाये। वह अगले दिन सुबह होते ही उसको नयी बाँसुरी दिला देगी।

पर वह तो अड़ गया कि उसको तो वही बाँसुरी चाहिये क्योंकि वह बाँसुरी उसकी अपनी बनायी हुई थी और वह उस बाँसुरी को किसी भी कीमत पर बदलना नहीं चाहता था।

उसके पिता ने भी उसको बहुत समझाया और मना किया कि इस समय उसको खेत पर अपनी बाँसुरी लेने नहीं जाना चाहिये पर वह नहीं माना। आखिरकार उसके माता पिता ने उसको जाने तो दिया पर उससे होशियारी से जाने के लिये कहा।

जब वह खेत पर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वहाँ उसे भूत दिखायी दिये क्योंकि यह समय वहाँ भूतों के काम करने का था।

उन्होंने जब वहाँ एक बच्चे को देखा तो वे बहुत गुस्सा हुए। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहाँ इस समय किसने भेजा है और तू यहाँ क्यों आया है?"

बेचारा बच्चा डर के मारे वहीं की वहीं खड़ा रह गया। बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से निकला — "दिन में मेरे माता पिता यहाँ खेत पर काम करने आये थे। उस समय मैं यहाँ अपनी बाँसुरी भूल गया था अभी मैं वही लेने आया हूँ।"

भूतों के नेता ने पूछा कि अगर उसे उसकी बाँसुरी दिखायी जाये तो क्या वह उसे पहचान सकता है?

लड़का खुशी से बोला — "हॉ हॉ, क्यों नहीं। वह मेरी बॉसुरी है। मैं उसे पहचानूँगा क्यों नहीं।"

भूतों के नेता ने खाल के थैले में से एक सोने की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का बोला — "नहीं नहीं? यह मेरी बॉसुरी नहीं है।"

भूतों के नेता ने एक बार फिर उस चमड़े के थैले में हाथ डाला और अबकी बार उसने उसमें से एक चॉदी की बॉसुरी निकाली और उसको दिखा कर उस लड़के से पूछा कि क्या वह थी उसकी बॉसुरी?

लड़का उदास हो कर बोला — "नहीं, यह बॉसुरी भी मेरी नहीं है।"

अबकी बार भूतों के नेता ने अपने थैले में से एक बॉस की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का उस बॉस की बॉसुरी को देखते ही खुशी से चिल्ला पड़ा — "हॉ, यही है मेरी बॉसुरी।"

भूतों का नेता बोला — "अगर यही है तेरी बॉसुरी तो इसे बजा कर दिखा न।"

लड़के ने भूतों के नेता के हाथ से बॉसुरी ले ली और उसे बजाना शुरू किया।

भूत उस लड़के की बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए। भूतों का नेता बोला — "बच्चे, हम तेरी बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए इसलिये हम तेरे माता पिता को एक भेंट देना चाहते हैं।"

ऐसा कह कर उसने दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे दो बर्तन लाने के लिये कहा। दोनों भूत तुरन्त ही दो बर्तन ले आये। भूतों के नेता ने उस लड़के से एक बर्तन लेने के लिये कहा।

बर्तन दोनों एक से थे, दोनों बन्द थे पर दोनों में से एक छोटा था और एक बड़ा। लड़के ने उनमें से छोटा वाला बर्तन उठा लिया।

भूतों के नेता ने कहा — "खुश रह बच्चे। जब तू घर पहुँच जाये तो अपने माता पिता के सामने ही इस बर्तन को तोड़ना।" लड़के ने भूतों के नेता का सिर झुका कर धन्यवाद किया और अपने घर चल पड़ा।

घर पहुँच कर लड़के ने वैसा ही किया जैसा कि भूतों के नेता ने उससे करने के लिये कहा था। उसने अपने माता पिता को बुलाया और सबसे पहले तो उसने अपने माता पिता को खेत पर जो कुछ भी हुआ था वह बताया और फिर उनके सामने ही उसने उस बर्तन को तोड़ दिया।

तुरन्त ही उनके घर का ऑगन अच्छी अच्छी चीज़ों से भर गया जैसे सोना, चॉदी, कॉसा, अच्छे अच्छे कपड़े मखमल, अनेक प्रकार के खाने, गाय, बकरियॉ आदि। लड़के की मॉ ने उस सामान से दो टोकरियॉ भरीं और अपनी सौत को दे आयी।

परन्तु उस आदमी की बड़ी पत्नी यह सब देख कर इतनी जली भुनी कि उसने वह भेंट भी नहीं ली और चिन्ता की वजह से वह रात भर सो भी नहीं पायी।

सुबह उठते ही उसने अपनी सौत से उन सब चीज़ों को पाने का तरीका पूछा। छोटी पत्नी ने जो कुछ भी हुआ था वह सब उसको सच सच बता दिया।

अगले दिन तड़के ही उसने अपने बड़े बेटे को उठाया और उसको अपनी बॉसुरी लाने के लिये कहा। फिर बोली — "आज हम लोग अपने खेत पर जायेंगे।"

"पर मॉ हम लोग कल ही तो खेत पर गये थे।" लड़का बोला।

मॉ ने कहा — "लेकिन हम आज भी जायेंगे।" कह कर वह अपने बेटे के साथ खेत पर चली गयी। जब वे खेतों पर गये तो वहॉ कोई काम तो था नहीं क्योंकि सारा काम तो पहले ही दिन खत्म हो चुका था फिर भी सारा दिन वे लोग वहॉ रहे।

जब शाम हुई तो बड़ी पत्नी ने अपनी टोकरी उठायी और घर चलने के लिये तैयार हुई। तो लड़के ने भी अपनी बॉसुरी उठायी और वह भी अपनी मॉ के साथ घर चलने लगा।

जब वे घर की ओर चलने लगे तभी मॉ ने कहा — "अरे बेवकूफ लड़के, क्या तुझे मालूम नहीं कि बॉसुरी को कैसे भूला जाता है? चल छोड़ अपनी बॉसुरी यहीं और घर चल।"

अब क्योंकि यह बॉसुरी लड़के की अपनी बनायी हुई तो थी नहीं और न उसको बजानी ही आती थी इसलिये यह सुन कर लड़के ने बॉसुरी वहीं फेंक दी और मॉ के साथ घर चल दिया।

जैसे ही वे लोग घर में घुसे कि उसकी मॉ ने अपने बेटे से कहा "जा और खेत पर से अपनी बॉसुरी उठा ला।" लड़का बेचारा यह सुन कर रोने लगा।

वह रात में अकेले खेत पर जाने से डर रहा था इसलिये कि वह वहॉ अकेले नहीं जाना चाहता था क्योंकि उसको मालूम था कि रात को वहॉ पर भूत आते थे और वह उनसे बहुत डरता था।

परन्तु उसकी मॉ ने उसे घर के बाहर धकेलते हुए कहा — "जा और बिना बॉसुरी और बिना बर्तन के वापस नहीं आना।"

लड़का बेचारा डरते डरते खेत पर पहुँचा। वहॉ पहले दिन की तरह से भूत आ चुके थे। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहॉ इस समय किसने भेजा है और तू यहॉ क्यों आया है?"

लड़का डर के मारे रोते रोते बोला — "आज हम यहॉ खेत पर बिना किसी काम के आये थे। मैं दिन में यहॉ अपनी बॉसुरी छोड़ गया था तो मेरी मॉ ने मुझे मेरी बॉसुरी और भेंट वाला बर्तन लाने के लिये भेजा है।"

भूतों के नेता ने पहले की तरह से थैले में से एक सोने की बॉसुरी निकाली और उसको उस लड़के को दिखा कर पूछा "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

अब इस लड़के ने तो बॉसुरी अपने हाथ से बनायी नहीं थी जो उसे उससे लगाव होता। वह सोने की बॉसुरी देख कर ललचा गया और बोला — "हॉ, यही है मेरी बॉसुरी।"

भूतों के नेता ने कहा — "अच्छा, यही है तेरी बॉसुरी? तो यह ले अपनी बॉसुरी। पर ज़रा इसे बजा कर तो दिखा।"

उस लड़के को तो बॉसुरी बजानी भी नहीं आती थी सो उसकी बॉसुरी से ऐसे ही कुछ बेमतलब आवाजें निकलने लगीं। वह लड़का बहुत परेशान हुआ पर कुछ कर नहीं सका क्योंकि उसने तो कभी बॉसुरी बजायी ही नहीं थी। थोड़ी ही देर में वह थक कर रुक गया।

सभी भूत खामोश खड़े थे किसी से कुछ कहते नहीं बन पा रहा था। तब भूतों के नेता ने ही दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे बोला — "लाओ वे दोनों बर्तन उठा लाओ।"

जैसे ही वे दो भूत दो बर्तन उठा कर लाये लड़के ने एक भूत के हाथ से बड़ा वाला बर्तन छीन लिया और जाने के लिये तैयार हुआ तो भूतों का नेता बोला — "बेटा, जब तू घर पहुँच जाये तभी अपने माता पिता के सामने ही इस बर्तन को तोड़ना।"

लड़का बोला "हॉ मुझे मालूम है।" और बिना धन्यवाद दिये अपने घर की तरफ दौड़ गया।

हॉफता हॉफता वह घर पहुँचा। बर्तन बहुत बड़ा था और भारी भी। उसकी मॉ घर के बाहर ही उसका इन्तजार कर रही थी। अपने बेटे को बड़ा सा बर्तन लाते देख कर वह बहुत खुश हुई।

लड़का हॉफते हॉफते ही बोला — "उन्होंने कहा है कि इस बर्तन को मैं अपने माता पिता के सामने ही तोड़ूँ सो पिता जी को और बुला लो।"

मॉ तुनक कर चिल्लायी — "तुम्हारे पिता को उस बर्तन के बारे में क्या मालूम है जो हम उनको बुलायें। इसको तो हम अपने आप ही तोड़ लेंगे।" और लड़के को अन्दर ला कर उसने अपनी झोंपड़ी का दरवाजा बन्द कर लिया।

उसने अपने सभी बच्चों को इकट्ठा किया और अपनी झोंपड़ी में बने सभी छेद और दरारें भी बन्द कर दीं ताकि कोई भी चीज़ उनमें से निकल कर बाहर दूसरी झोंपड़ियों की तरफ न जा सके।

फिर उसने वह बर्तन तोड़ दिया। बर्तन के टूटते ही उसमें से सब प्रकार की बीमारियॉ जैसे कोढ़, चेचक, तपेदिक आदि निकल पड़ीं और उन्होंने उस स्त्री और उसके बच्चों को वहीं मार दिया।

यह कहानी हमें कई शिक्षा देती है। पहली बात तो हमको लालची नहीं होना चाहिये। क्योंकि पहला वाला बच्चा लालची नहीं था इसी लिये वह दूसरों का आदर पा सका।

दूसरी बात यह कि बिना सोचे समझे दूसरों की नकल करने की आदत अच्छी नहीं होती। दूसरी मॉ ने अपने बच्चे से छोटी पत्नी के बच्चे की नकल करवायी तो क्या फल पाया।

और तीसरे हमें दूसरों के उपकारों का धन्यवाद जरूर देना चाहिये।

भारत में यही कहानी बॉसुरी की जगह कुल्हाड़ी से कही जाती है। बच्चा कुल्हाड़ी भूल जाता है और भूत लोग उसे तीनों प्रकार की कुल्हाड़ी दे देते हैं।

4 आश्चर्यजनक बॉसुरी वादक[15]

वाद्यों की यह चौथी लोक कथा हमने तुम्हारे लिये कैनेडा की लोक कथाओं से ली है। यह कथा भी बॉसुरी वाद्य पर आधारित है।

यह एक सच्ची कहानी है जो आज से दो सौ साल से भी ज़्यादा पुरानी है। कैनेडा के केप ब्रैटन जगह में एक बहुत ही गरीब आदमी रहा करता था। उसकी पत्नी एक बेटे को छोड़ कर मर गयी थी। इसके बाद उसने एक अमीर विधवा से शादी कर ली।

उस स्त्री के अपने भी दो बेटे थे। वह स्त्री अपने बेटों को तो बहुत प्यार करती थी पर उस सौतेले बेटे को वह बहुत तंग करती थी।

वह उस सौतेले बेटे को रसोईघर में ही खाना देती थी और उसको सारा दिन वहीं रखती थी जबकि उसके अपने बेटे खाने के कमरे में खाना खाते थे और फिर इधर उधर खेलते थे।

उस स्त्री के अपने बेटों को बॉसुरी बजाने का बहुत शौक था और वे बॉसुरी अच्छी बजाते भी थे सो उसने उनको दो नयी बढ़िया बॉसुरी ला कर दे दी थीं।

इस सौतेले बेटे को भी बॉसुरी बजाने का बहुत शौक था पर उसके पास एक बहुत ही पुरानी बॉसुरी थी और एक पुरानी धुन। उसको भी वह अच्छी तरह बजा नहीं पाता था।

[15] Wonderful Flute Player – a folktale from Cape Breton, Canada, North America

एक बार वह सौतेला बेटा जानवर चरा रहा था और अपनी पुरानी बॉसुरी पर पुरानी धुन निकालने की कोशिश कर रहा था कि इतने में उसने देखा कि एक बहुत ही सुन्दर परियों के राजकुमार जैसा सुन्दर आदमी चला आ रहा है।

उसने इस सौतेले बेटे से पूछा — "क्या तुम अपने भाइयों की तरह बॉसुरी बजाना सीखना चाहते हो?"

सौतेला बेटा बोला "हॉ"।

वह परियों वाला आदमी बोला — "अच्छा तो तुम अपनी उँगलियॉ मेरे मुँह में रखो।" उसने ऐसा ही किया।

उस आदमी ने कहा — "अब तुम अपनी बॉसुरी बजाओ।" उसने फिर अपनी बॉसुरी बजायी।

यह क्या? उस बॉसुरी में से तो इतनी मीठी धुनें निकलने लगीं कि हवा बहना रुक गयी, मछलियॉ तैरना भूल गयीं, जानवर चरना छोड़ कर उसके पास आ कर खड़े हो गये। पक्षी अपने अपने घोंसले छोड़ कर उसके चारों तरफ आ कर बैठ गये।

कुछ देर बाद वह घर आ गया। घर आ कर उसने किसी से कुछ नहीं कहा और जा कर रोज की तरह रसोईघर में बैठ गया।

अगले दिन एक आदमी उनके घर आया और कहने लगा कि वह उन दोनों भाइयों में से एक को अपने स्टीमर पर बॉसुरी बजाने की नौकरी देना चाहता था इसलिये वह उन दोनों का बॉसुरी वादन सुनना चाहता था।

जब वह उन दोनों का बॉसुरी वादन सुन चुका तो उसकी निगाह रसोईघर में बैठे उस सौतेले बेटे पर पड़ी। उसने उन दोनों बेटों की मॉ से पूछा कि रसोईघर में बैठा वह लड़का कौन था।

मॉ बोली — "ओह वह लड़का? वह तो हमारे जानवर चराता है।"

वह आदमी बोला — "पर लगता है कि वह लड़का भी बॉसुरी बजाता है क्योंकि मुझे उसके हाथ में भी बॉसुरी दिखायी दे रही है। क्या मैं उसकी बॉसुरी सुन सकता हूँ?"

मॉ बोली — "हॉ हॉ क्यों नहीं, वह बॉसुरी बजाता तो है पर वह अभी ठीक से नहीं बजा पाता है। उसकी बॉसुरी में से तो बस केवल शोर ही निकलता है।"

आदमी बोला — "फिर भी मैं उसकी बॉसुरी सुनना चाहूँगा।"

लड़के को बुलाया गया और उसको बॉसुरी बजाने को कहा गया तो उसने बॉसुरी बजानी शुरू की।

उसने इतनी ज्यादा मीठी बॉसुरी बजायी कि उसकी सौतेली मॉ को भी मानना पड़ा कि वह उसके अपने बेटों से भी ज़्यादा अच्छी बॉसुरी बजाता है।

उस लड़के की बॉसुरी सुन कर उस आदमी ने उस लड़के को अपने स्टीमर पर बॉसुरी बजाने की नौकरी दे दी। और अब वह उस आदमी के स्टीमर पर लोगों के लिये बॉसुरी बजाने लगा।

एक दिन जब वह स्टीमर धरती के किनारे से अठारह बीस मील दूर था कि उसमें पानी आने लगा। स्टीमर का कप्तान घबरा गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

लड़का बोला — "तुम घबराओ मत, मैं एक ऐसी धुन बजाऊँगा जिसे सुन कर किनारे के लोगों को पता चल जायेगा कि हम लोगों पर कोई मुसीबत आ पड़ी है और वे हमारी सहायता का कोई न कोई इन्तजाम जरूर करेंगे।"

यह कह कर वह जहाज़ के डैक पर चढ़ गया और ऐसी दुख भरी धुन बजायी कि कुछ ही देर में किनारे वाले लोगों ने एक दूसरा स्टीमर उनकी सहायता के लिये भेज दिया।

कप्तान यह देख कर बहुत खुश हुआ और उस लड़के को बहुत सारा इनाम दिया।

इस घटना के बाद से वह बच्चों को बॉसुरी बजाना सिखाने लगा। और तभी से उस घाटी का नाम पाइपर्स ग्लैन[16] पड़ गया।

[16] Piper's Glenn

5 बॉसुरी बजाने वाला गूँगा[17]

यह लोक कथा हमने एशिया के चीन देश की लोक कथाओं से ली है। इस लोक कथा का बॉसुरी बजाने वाला गूँगा है पर उसकी बॉसुरी क्या रंग लाती है यह देखने की बात है।

हालॉकि आह चिन गूँगा था पर जब वह गूँगा बॉसुरी बजाता था तो जिन्होंने उसको सुना था उनका कहना था कि जो कोई भी आदमी उस समय जो कुछ भी कर रहा होता था वह अपना वह काम छोड़ कर उसकी बॉसुरी सुनने लग जाता था।

चिन की खासियत यह थी कि वह बिना रुके दिन रात बॉसुरी बजा सकता था। गॉव के लोग उसको बहुत प्यार करने लगे थे पर पॉच साल तक उसकी बॉसुरी सुनने के बाद उसकी पत्नी को लगा कि बस अब काफी हो गया और उसने उसकी बॉसुरी काफी सुन ली।

एक सुबह जब उसका पति तीन दिन तक बॉसुरी बजाता रहा और उसके बाद भी उसके बॉसुरी बजाना खत्म नहीं हुआ तो उसने अपने पति को घर से बाहर निकाल दिया और चेतावनी देते हुए

[17] The Dumb Flute Player – a folktale from China, Asia. Adapted from the book: "Chinese Myths and Legends" translated by Kwok Man Ho. 2011. Its English version may be read at https://www.scribd.com/doc/57934877/Chinese-Myths-and-Legends

उससे कहा कि वह तब तक घर वापस लौट कर न आये जब तक उसको कोई काम न मिल जाये।

इससे उस बॉसुरी बजाने वाले का दिल टूट गया। वह समुद्र के किनारे चला गया और बहुत देर तक वहॉ घूमता रहा। वहीं उसने फिर एक दुख भरी धुन बजानी शुरू कर दी।

समुद्र की मछलियॉ उस धुन को सुन कर उस पर इतनी मोहित हो गयीं कि वे तैर कर समुद्र के किनारे पर आ गयीं। यहॉ तक कि समुद्र की लहरें भी उसकी धुन के ऊपर नाच नाच कर किनारे की तरफ आ रही थीं।

एक घंटे के अन्दर अन्दर ही समुद्र का किनारा बहुत सारी सीपियों[18], केकड़े[19], जैली मछली आदि समुद्री जानवरों से भर गया और वे सब उसकी धीमी धुन पर जो हवा और पानी में गॅूज रही थी नाच रहे थे।

अचानक मछलियों में तभी एक हलचल मची और समुद्र का पानी अलग हो गया और इससे समुद्र में समुद्र तल का रास्ता दिखायी देखने लगा।

[18] Translated for the word “Oyster”. See its picture above – oyester’s picture is above the picture of Crab. Pearl is produced by an Oyster

[19] Translated for the word “Crab”. See its picture above – below the picture of Oyster.

बॉसुरी बजाने वाले ने देखा कि उसके सामने से केकड़े और प्रौन मछली[20] की एक फौज उसी की तरफ चली आ रही थी। उस फौज के आगे आगे समुद्री ड्रैगन राजा[21] था।

गूँगे बॉसुरी बजाने वाले ने अपना बॉसुरी बजाना तब तक जारी रखा जब तक राजा उसके सामने आ कर खड़ा नहीं हो गया और उसने अपना हाथ उठा कर सबको शान्त रहने का हुक्म नहीं दे दिया।

राजा ने बॉसुरी बजाने वाले को हाथ पकड़ कर उठाया और उसको समुद्र में बने रास्ते से ले कर समुद्र के अन्दर चल दिया। रास्ते में वह बोला — "तुम्हारा संगीत उन सबमें मीठा है जो मैंने अब तक सुने हैं। मेरी रानी बीमार है पर वह भी तुम्हारा संगीत सुन कर अच्छा महसूस करने लगी है। क्या तुम रोज अपनी यह बॉसुरी बजाओगे ताकि मेरी पत्नी ठीक हो सके?"

बॉसुरी बजाने वाले ने हॉ में सिर हिलाया और राजा के महल के मोती वाले दरवाजे में से हो कर महल के अन्दर घुसा। क्योंकि रानी बीमार थी इसलिये महल में सब जगह उदासी छायी हुई थी।

[20] Prawn is a kind of fish. See its picture above.

[21] Sea Dragon King – the King of the Sea

यह देख कर बॉसुरी बजाने वाले ने एक धुन बजानी शुरू की जिससे महल की वह दुख और उदासी दूर हो गयी और रानी बिल्कुल ठीक हो गयी।

इसके इनाम में बॉसुरी बजाने वाले को राजा के महल में आने जाने की आजादी दी गयी और वह शाही परिवार का एक बहुत ही अच्छा दोस्त बन गया।

बॉसुरी बजाने वाला अक्सर खुशी की धुनें बजाया करता था पर एक शाम राजा ने अपने महल के बागीचे से एक दुख भरी धुन सुनी तो राजा उस बॉसुरी बजाने वाले की खोज में चल दिया।

राजा ने देखा कि बॉसुरी बजाने वाला एक दीवार के सहारे बैठा बॉसुरी बजा रहा था और उसकी ऑखों से ऑसू बह रहे थे।

राजा ने पूछा — "क्या बात है तुम रो क्यों रहे हो? क्या तुम अकेले हो इसलिये?"

बॉसुरी बजाने वाले ने हॉ में सिर हिलाया।

"क्या तुमको अपने घर परिवार की याद आ रही है?"

बॉसुरी बजाने वाले ने फिर हॉ में सिर हिलाया।

राजा बोले — "तो फिर मैं अब तुमको तुम्हारी इच्छा के बिना यहॉ और नहीं रख सकता। हालॉकि तुमको छोड़ते हुए मुझे बहुत दुख हो रहा है फिर भी मैं अपने केकड़े चौकीदारों को बोलूॅगा कि वे तुमको तुम्हारे घर छोड़ आयें।

पर इससे पहले कि तुम जाओ मैं तुमको यह सीपी देना चाहता हूँ जो जैसे ही तुम्हारा संगीत सुनेगी यह खुलेगी और तुमको वह सब कुछ देगी जो कुछ तुम उससे माँगोगे।"

कह कर राजा ने वह सीपी उस बाँसुरी बजाने वाले की रेशमी पोशाक की जेब में रख दी और उसको अन्तिम विदा किया। समुद्र का पानी फिर एक बार फटा और समुद्री ड्रैगन राजा के चौकीदार केकड़े उस बाँसुरी बजाने वाले को सुरक्षित समुद्र के किनारे पर पहुँचा आये।

बाँसुरी बजाने वाला जब अपने घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पहले तो उसका बड़ी सावधानी से स्वागत किया पर जब उसने उसकी सीपी की कहानी सुनी तो उसका बर्ताव उसके साथ बिल्कुल बदल गया। अब वह बहुत खुश थी।

आह चिन ने वह सीपी रसोईघर की मेज पर रखी और अपनी बाँसुरी बजानी शुरू की। उसका सँगीत सुन कर वह सीपी मेज पर चारों तरफ नाचने लगी। फिर फर्श पर कूद पड़ी और फिर उसने आह चिन और उसकी पत्नी के आगे अपना मुँह खोल दिया।

पत्नी ने उत्सुकता से कहा — "क्या तुम मेरे पति के घर आने की खुशी में इस मेज पर बहुत बढ़िया खाना लगा सकती हो?" और उस सीपी ने कहना मानते हुए उस मेज पर बहुत सारी स्वादिष्ट खाने की प्लेटें लगा दीं।

यह देख कर पत्नी चिल्लायी — "तुम्हारे बॉसुरी बजाने का यह तो बढ़िया इनाम है। अब तुम हमेशा बॉसुरी बजा सकते हो।"

गॉव के लोग अब आह चिन के घर ज़्यादा आने लगे क्योंकि अब उनके लिये वहॉ आने की दो वजहें थीं – बढ़िया संगीत और बढ़िया खाना या फिर वे लोग और जो कुछ भी चाहें।

जादुई सीपी की यह बात वहॉ के चालाक जिला मजिस्ट्रेट के कानों में भी पड़ी तो उसने उस सीपी को उस बॉसुरी बजाने वाले से ले लेने का निश्चय कर लिया और उसके घर पहुॅच गया।

जिला मजिस्ट्रेट को अपने घर आया देख कर आह चिन की पत्नी खुशी से भर गयी और अपने आपको बहुत ही खुशकिस्मत समझने लगी। उसने तुरन्त ही सीपी को खाने की एक बहुत बढ़िया मेज लगाने के लिये कहा।

जब वे सब खाना खा चुके तो जिला मजिस्ट्रेट ने आह चिन की बॉसुरी की और उसकी सीपी की बहुत तारीफ की और उसको उन दोनों को उसे बेचने के लिये कहा।

आह चिन की पत्नी तो मजिस्ट्रेट को मना करने से डरती थी पर आह चिन ने अपना सिर ना में बहुत जोर से हिलाया। फिर भी मजिस्ट्रेट ने आह चिन की खामोशी को हॉ में लिया और अपने चमड़े के थैले में से एक तराजू निकाली।

वह बोला — "मैं अपनी ईमानदारी से आह चिन की बॉसुरी और सीपी के बराबर सोना और चॉदी तौल कर उसको दे दूँगा।"

आह चिन ने एक बार फिर मजिस्ट्रेट को रोकने की कोशिश की पर मजिस्ट्रेट ने उसको एक तरफ को धक्का दे दिया और सीपी को तराजू के एक पलड़े में रख कर सोने के तीन टुकड़े उसने उसके दूसरे पलड़े में रख दिये।

पर सीपी भारी थी सो उसने तराजू के दूसरे पलड़े पर सोने के तीन टुकड़े और रखे पर फिर भी सीपी भारी ही रही। मजिस्ट्रेट तराजू के दूसरे पलड़े पर सोना चॉदी और दूसरी कीमती धातु रखता रहा पर सीपी का पलड़ा बराबर भारी ही रहा। कोई भी चीज़ सीपी के पलड़े को ऊपर नहीं उठा पा रही थी।

आखिर मजिस्ट्रेट ने अपने नौकरों को एक और बड़ी तराजू लाने का हुक्म दिया। जब बड़ी तराजू आ गयी तो उसने अपने सारा सोना चॉदी उस तराजू के एक पलड़े पर रख दिया और सीपी दूसरे पलड़े पर। पर फिर भी सीपी वाला पलड़ा भारी ही रहा।

अब तक वहॉ बहुत सारे लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गयी थी और मजिस्ट्रेट को डर था कि वह कहीं अपनी इज़्ज़त न खो बैठे सो वह अपने कीमती हीरे जवाहरात उस तराजू पर रखता ही रहा। उधर सीपी भी मजिस्ट्रेट के पैसे के मुकाबले में भारी ही रही।

जब मजिस्ट्रेट का सारा पैसा खत्म हो गया तो उसने अपनी सरकारी पोशाक और अपना ओहदा उस पलड़े पर रख दिया क्योंकि

वह सीपी तो उस पैसे से कहीं ज़्यादा कीमती थी जो वह मजिस्ट्रेट बन कर कमा रहा था।

जैसे ही मजिस्ट्रेट ने अपनी सरकारी पोशाक और टोप उस तराजू पर रखा तो सीपी वाला पलड़ा हवा में ऊपर उठ गया और तराजू के दोनों पलड़े बराबर हो गये।

मजिस्ट्रेट ने चैन की सॉस लेते हुए वह सीपी और बॉसुरी तुरन्त ही उठा ली और उस सीपी को जॉचने के लिये तुरन्त घर दौड़ा। उसने अपने घर के दरवाजे और खिड़कियॉ बन्द किये और बॉसुरी बजाना शुरू किया और फिर सीपी से इतना सोना मॉगा जिससे उसका सोने वाला कमरा भर जाये।

जब मजिस्ट्रेट ने वह बॉसुरी बजानी शुरू की तो उसकी बॉसुरी की आवाज इतनी ऊॅची थी कि उसके घर के पास से गुजरने वाले भी डर गये।

हालॉकि बॉसुरी की आवाज सुन कर सीपी ने अपना मुॅह नहीं खोला और पड़ोसी भी उस बॉसुरी को बन्द करने के लिये कहने के लिये मजिस्ट्रेट का दरवाजा पीटते रहे पर वह मजिस्ट्रेट फिर भी निडर हो कर बॉसुरी बजाता ही रहा।

आखिर वह सीपी और देर तक यह सब नहीं सह सकी और फर्श पर कूद कर एक आलमारी में छिप गयी।

मजिस्ट्रेट की बॉसुरी के चीखते हुए स्वर गॉव भर में गूँजते ही रहे जब तक कि सीपी दर्द से हवा में उछल कर छत के एक लकड़ी के लट्ठे से टकरा कर टूट नहीं गयी।

सीपी के टूटने पर मजिस्ट्रेट के घर की छत टूटने लगी, उसमें लगे लकड़ी के लट्ठे भी टूटने लगे, उसके घर की दीवारें गिरने लगीं पर मजिस्ट्रेट तो बस वह बॉसुरी बजाता ही रहा बजाता ही रहा। टूट टूट कर उसका सारा घर उसके ऊपर आ पड़ा।

जब मकान के गिरने की धूल सब बैठ गयी तब मजिस्ट्रेट उस मलबे में से बाहर निकला। कई दिनों तक वह उस सीपी को ढूँढता रहा पर वह उसको नहीं मिली।

इस बीच आह चिन नया मज्स्ट्रेट घोषित कर दिया गया और उसने जो अपनी नयी दौलत हासिल की थी उसके सहारे उसने अपनी सारी ज़िन्दगी अमर लोगों की तरह से जी जबकि वह पुराना मजिस्ट्रेट एक गरीब की मौत मरा।

6 मोर का पंख[22]

वाद्यों की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है। इस कहानी का वाद्य कोई स्टैन्डर्ड वाद्य नहीं है बस यूँ ही सरकंडे से बनाया गया बॉसुरी की तरह का एक वाद्य है जो अक्सर चरवाहे अपने जानवर चराने के समय बजाते रहते हैं।

एक बार की बात है कि एक राजा की दोनों ऑखें जाती रहीं और उसको दोनों ऑखों से दिखायी देना बन्द हो गया था। डाक्टरों को दिखाया गया पर कोई डाक्टर यह नहीं बता पा रहा था कि उसको हुआ क्या था।

जब उनको यह ही नहीं पता चल रहा था कि उसको हुआ क्या था तो वे राजा का इलाज भी कैसे करें और उसकी ऑखों की रोशनी कैसे वापस लाये। अन्त में एक डाक्टर बोला कि उसकी ऑखों की रोशनी वापस लाने का एक ही तरीका है और वह है मोर का पंख।

इस राजा के तीन बेटे थे। उसने अपने तीनों बेटों को बुलाया और पूछा — "बच्चो, क्या तुम मुझे प्यार करते हो?"

---

[22] The Peacock Feather – a folktale from Italy from its Province of Caltanissetta.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980. Its HIndi translation is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

तीनों बेटे बोले — "पिता जी, यह कैसा सवाल है? आप तो हमको हमारी ज़िन्दगी से भी ज़्यादा प्यारे हैं।"

राजा बोला — "तब बेटा तुम मेरे लिये एक मोर का पंख ले कर आओ ताकि मेरी ऑखों की रोशनी वापस आ सके। जो भी मुझे मोर का पंख ला कर देगा उसी को मेरा राज्य मिलेगा।" सो उसके तीनों बेटे मोर का पंख लाने चल दिये।

राजा के दो बड़े बेटे यह नहीं चाहते थे कि उनका छोटा भाई उनके साथ आये पर वह उनसे पीछे रहना नहीं चाहता था सो वे तीनों एक साथ ही चले।

चलते चलते वे एक जंगल में घुसे और थोड़ी देर में ही रात हो गयी। रात बिताने के लिये वे तीनों एक पेड़ पर चढ़ गये और उस पेड़ की शाखों पर ही सो गये।

सुबह सबसे छोटे बेटे की ऑख सबसे पहले खुली। वह पेड़ पर से उतरा। उसने सुबह सुबह मोर की आवाज सुनी तो वह उसी ओर चल दिया। चलते चलते वह एक साफ पानी के फव्वारे के पास आ पहुँचा।

वहॉ वह पानी पीने के लिये झुका और जब पानी पी कर उसने अपना सिर उठाया तो उसने हवा में एक मोर का पंख उड़ कर नीचे आता हुआ देखा। उसने और ऊपर देखा तो कुछ चिड़ियॉ भी ऊपर उड़ रही थीं। बस उसने वह मोर का पंख उठा कर अपनी जेब में रख लिया।

जब बड़े भाइयों को पता चला कि उनके छोटे भाई को मोर का पंख मिल गया है तो वे जलन से भर उठे क्योंकि उन्होंने सोचा कि अब उनको तो पिता का राज्य मिलेगा नहीं और उनके छोटे भाई को पिता का राज्य मिल जायेगा।

उन्होंने बिना किसी हिचक के, बिना एक पल भी सोचे विचारे उसको पकड़ लिया। दोनों ने उससे उसका मोर का पंख ले लिया। फिर एक भाई ने उसको पकड़ा, दूसरे ने उसको मार दिया और दोनों ने मिल कर उसे गाड़ दिया।

उस पंख को ले कर वे अपने पिता के पास वापस आ गये और उनको वह पंख दे दिया। राजा ने उसको अपनी ऑखों से छुआया तो उसकी ऑखों की रोशनी वापस आ गयी।

जैसे ही उसको दिखायी देना शुरू हुआ तो उसने पूछा — "तुम्हारा छोटा भाई कहॉ है?"

"ओह पिता जी, अगर आप जानते। हम लोग जंगल में सो रहे थे कि एक जानवर आया। वही उसको ले गया होगा क्योंकि तभी हमने उसको आखिरी बार देखा था।"

राजा को अपने उन दोनों बेटों की यह सफाई कुछ समझ में नहीं आयी पर उसके पास और कोई चारा नहीं था सो वह बेचारा अपने छोटे बेटे के दुख में केवल रो कर ही रह गया।

इस बीच उस छोटे भाई को जहाँ गाड़ा गया था वहाँ एक सुन्दर सा सरकंडे का पेड़[23] उग आया। एक आदमी उधर से गुजर रहा था तो उसको सरकंडे का वह पेड़ दिखायी दे गया।

उसने सोचा यह तो बहुत ही सुन्दर सरकंडा है मैं इसको काट लेता हूँ और इससे चरवाहे वाला बाजा बनाऊँगा। उसने वही किया। उसने उसमें से थोड़ा सा सरकंडा काट लिया और उसका एक बाजा बना लिया।

जब उसने उसको बजाने के लिये उसके ऊपर अपने होठ रखे तो उस बाजे ने गाया —

ओ चरवाहे, जिसने मुझे पकड़ रखा है मुझे धीरे से बजाना मुझे चोट न पहुँचे
उन्होंने मुझे मोर के पंख के लिये मार दिया, मेरा भाई यकीनन धोखेबाज था

यह गीत सुन कर चरवाहे ने सोचा कि अब तो मेरे पास यह बाजा है तो मैं अब भेड़ चराना छोड़ दूँगा। मैं अब सारी दुनियाँ में घूमूँगा और यह बाजा बजा बजा कर अपनी रोजी रोटी कमाऊँगा। सो उसने भेड़ चराना छोड़ दिया और नैपिल्स[24] चल दिया।

वहाँ जा कर वह सड़कों पर घूम घूम कर अपना वह चरवाहों वाला बाजा बजाने लगा।

[23] Translated for the “Reed” plant. See its picture above.
[24] Naples is a port and historical city of Italy just south of Rome on Italy’s west coast.

एक बार वह वहॉ के राजा के महल के पास से गुजर रहा था कि राजा ने उसका बाजा सुना तो अपने महल से बाहर झॉका और बोला — "ओह कितना मीठा संगीत है।"

फिर उसने अपने एक नौकर से कहा कि वह उस आदमी को अन्दर बुला कर लाये जो वह बाजा बजा रहा था। नौकर उस चरवाहे को अन्दर बुला कर ले गया। वह चरवाहा अन्दर गया तो उसने राजा के दरबार में अपना वह बाजा बजाया।

राजा को वह संगीत अच्छा लगा तो राजा बोला कि वह भी उसको बजाना चाहता था। चरवाहे ने वह बाजा राजा को दे दिया। राजा ने उस बाजे को बजाया तो उसमें से आवाज आयी —

ओ पिता जी, जिसने मुझे पकड़ रखा है, मुझे धीरे से बजाना मुझे चोट न पहुॅचे
उन्होंने मुझे मोर के पंख के लिये मार दिया, मेरा भाई यकीनन धोखेबाज था

यह सुन कर राजा ने रानी से कहा — "प्रिये, ज़रा इस बाजे को तो सुनो और फिर तुम भी इसको बजा कर देखो।"

यह कह कर राजा ने वह बाजा अपनी रानी को दे दिया। रानी ने जब उसको बजाया तो उसमें से आवाज अअयी —

ओ मॉ, जिसने मुझे पकड़ रखा है, मुझे धीरे से बजाना मुझे चोट न पहुॅचे
उन्होंने मुझे मोर के पंख के लिये मार दिया, मेरा भाई यकीनन धोखेबाज था

यह सुन कर रानी की तो बोलती ही बन्द हो गयी। उसने उस बाजे को अपने बीच वाले बेटे से बजाने के लिये कहा। बीच वाले

बेटे ने अपने कन्धे उचकाये और कहा कि ये सब बेकार की बातें है। पर जब रानी ने उससे जिद की तो उसे बजाना ही पड़ा। जैसे ही उसने वह बाजा बजाया उसमें से आवाज आयी —

ओ मेरे भाई,

पर वह बाजा तो वहीं रुक गया क्योंकि उसका वह भाई तो पत्ते की तरह कॉप रहा था। उसने कॉपते हाथों से वह बाजा अपने बड़े भाई के हाथों में दे दिया और बोला "अब तुम बजाओ"।

पर बड़े भाई ने उसे बजाने से बिल्कुल ही इनकार कर दिया और चिल्लाया — "क्या इस चरवाहे के बाजे को बजा कर तुम पागल हो गये हो?"

अबकी बार राजा चिल्लाया — "मैं कहता हूँ कि तुम इस बाजे को बजाओ।"

यह सुन कर बड़ा भाई तो पीला पड़ गया पर क्या करता पिता का हुकुम था सो उसको वह बाजा बजाना पड़ा। उसने बाजा बजाया तो उस बाजे में से निकला —

ओ मेरे भाई, जिसने मुझे मारा, मुझे धीरे से बजाना मुझे चोट न पहुँचे
तुमने मुझे मोर के पंख के लिये मारा, तुम यकीनन धोखेबाज हो

ये शब्द सुन कर राजा तो दुख से पागल हो कर वहीं फर्श पर गिर पड़ा। फिर जब सँभला तो चिल्लाया — "ओ नीच लड़कों, तुम

ने वह मोर का पंख खुद लेने के लिये मेरे बच्चे और अपने सबसे छोटे भाई को मार दिया?"

उसने अपने उन दोनों बेटों को आग में जला कर मारने का हुक्म दे दिया। उस चरवाहे को चौकीदारों का कैप्टेन बना दिया।

राजा ने अपनी बची हुई जिन्दगी अपने महल में अकेले रह कर ही गुजार दी। अब वह चरवाहा बस बाजा ही बजाता रहता था।

7 चतुर सँपेरा[25]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के मोरक्को देश की लोक कथाओं से ली है और यह भी बाँसुरी पर आधारित है।

खुदा सुलतान जादी[26] का भला करे कि एक बार उसका अपने महल में मन नहीं लग रहा था सो उसने अपने एक बाजा बजाने वाले को जिसका नाम मुहम्मद था बुलाया।

कुछ दिन उसने उस बाजा बजाने वाले के संगीत का आनन्द लिया और फिर अपने अच्छे मूड में आ गया। उसने फिर से हँसना शुरू कर दिया और सबसे हँसी मजाक करना शुरू कर दिया।

पर इस बात को बहुत दिन नहीं बीते थे कि वह अपने बाजा बजाने वाले से थक गया और उसने उस बदकिस्मत का सिर कटवा दिया।

फिर उसने अपने हार्प[27] बजाने वाले को जिसका नाम जोसेफ था उसको बुलाया। पर कुछ दिनों बाद हार्प का संगीत भी उसके कानों में चुभने लगा और उसने उस हार्प बजाने वाले का सिर भी कटवा दिया।

---

[25] The Clever Snake Charmer – a folktale from Morocco, Africa. Taken from the book: "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
[It is like the Beginning story of Arabian Nights, read more such stories in the Book "Pustakon Ka Janma" in Hindi. Obtain it from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

[26] King Zaadee

[27] Harp is a western kind of string musical instrument. See its picture above.

और भी बहुत सारे लोग सुलतान का दिल बहलाने के लिये आये पर हर बार वह केवल कुछ ही दिनों के लिये खुश होता उसके बाद वह फिर बेचैन और गुस्सा सा हो जाता। सो वह फिर अपने सिपाहियों को बुलाता और उनके सिर काटने का हुक्म दे देता।

ये हालात इतने बिगड़े कि अब उसके राज्य में हर आदमी बैठा बैठा कॉपने लगता। हर आदमी यही सोचता कि पता नहीं कब सुलतान उसको बुला ले और फिर कुछ दिन बाद उसको तलवार से मारने का हुक्म दे दे।

जल्दी ही हर आदमी उस सुलतान के शहर को छोड़ छोड़ कर जाने लगा — कहानी कहने वाले, गाने बजाने वाले, नाचने वाले, मदारी आदि आदि।

लेकिन एक सुबह सेल्हम[28] नाम का एक सॅपेरा महल में आया और उसने बड़ी बहादुरी से यह ऐलान किया कि वह सुलतान का दिल बहलायेगा।

सुलतान के नौकर उसको सुलतान के पास ले आये। सुलतान ने भी उस सॅपेरे की तरफ बड़े शौक से देखा जो अपनी बॉसुरी की धुन पर सॉपों को खिलाता था। वह जब बॉसुरी बजाता था तो वे सॉप उसके थैले, टॉगें और गर्दन के चारों तरफ लिपट जाते थे।

[28] Selham – the name of the Muslim snake charmer

उसने भी कुछ दिन सुलतान का दिल बहलाया पर बहुत दिन बीतने से पहले ही सुलतान का उससे भी दिल भर गया। वह अब उस सँपेरे को साँपों के साथ खेलते देखना नहीं चाहता था।

उस शाम सेल्हम जब अपनी बाँसुरी बजाने बैठा और उसके साँप इधर उधर घूमने लगे तो सुलतान बोला — "दोस्त, अब तुम्हारी यह बाँसुरी और तुम्हारे ये साँप काफी हो गये अब मैं अपने नौकरों को तुम्हारा सिर काटने का हुक्म दूँगा।"

सेल्हम डर कर बोला — "जहाँपनाह, जैसे आपकी मर्जी होगी वैसा ही होगा। पर आप मुझे एक मौका और दें। अगर आप मुझे एक मौका और देंगे तो यह आप ही के भले के लिये होगा।"

सुलतान ने कहा — "ठीक है। मैं खुशी से तुमको एक मौका और दूँगा पर तुमको यह मौका मुझसे लेना पड़ेगा। तुमको यह मौका तब मिलेगा जब तुम कल मेरे सामने एक सवार और एक पैदल दोनों के रूप में एक साथ आओगे।

यह मेरा हुक्म है। और यह तुम जानते हो कि जो मेरा हुक्म नहीं मानते मैं उनको तलवार से मरवा दिया करता हूँ।"

सेल्हम ने सुलतान को सिर झुकाया और चला गया। अगले दिन सुबह सवेरे उस सँपेरे को देखने से पहले सुलतान अपने छत पर खड़ा हुआ था ताकि जब वह सँपेरा आये तो वह उसको देख सके।

जब महल के दरवाजे खुले तो सुलतान की आँखें तो फटी की फटी रह गयीं। वह कुछ बोल ही नहीं सका। सेल्हम एक बहुत ही

छोटे से गधे पर चढ़ा दरवाजे में से हो कर आ रहा था। इतना छोटा गधा सुलतान ने पहले कभी नहीं देखा था।

यह गधा इतना छोटा था कि कि सेल्हम के उस पर बैठने के बावजूद उसके दोनों पैर जमीन को छू रहे थे। सो जब वह सुलतान के सामने आया तो वह एक सवार भी था क्यों कि वह गधे पर सवार था और वह एक पैदल चलने वाला भी था क्योंकि उसके दोनों पैर जमीन से छू रहे थे।

सुलतान यह देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "बहुत अच्छे। तुमने वही किया जो तुम्हें करना था। पर अभी तुमने अपना काम पूरा नहीं किया है।

अगर तुम यह चाहते हो कि मैं तुमको तलवार वाले आदमी के हवाले न करूँ तो तुमको मेरे तीन सवालों के जवाब देने होंगे। मेरा पहला सवाल है – आसमान में कितने तारे हैं?"

सँपेरा बोला — "जहाँपनाह, आसमान में उतने ही तारे हैं जितने कि मेरे गधे के शरीर पर बाल हैं, उसकी पूँछ के बालों को छोड़ कर। आप चाहें तो गिन सकते हैं।"

सुलतान उसकी तारीफ करते हुए बोला — "बहुत अच्छे। अब मेरा दूसरा सवाल है – हम धरती के कौन से हिस्से में हैं?"

सँपेरा बोला — "हम लोग धरती के बीच में है जहाँपनाह।"

यह सुन कर सुलतान फिर हँस दिया और फिर बोला — "मेरा तीसरा और आखिरी सवाल। मेरी दाढ़ी में कितने बाल हैं?"

सॅपेरा बोला — "आपकी दाढ़ी में उतने ही बाल हैं जितने बाल मेरे गधे की पूॅछ में हैं। आप अपनी दाढ़ी कटवा दें और मैं अपने गधे की पूॅछ कटवा देता हूॅ फिर हम उनको साथ साथ गिन सकते हैं।"

आखीर में सुलतान बोला — "नहीं नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं। तुम बहुत चतुर हो। ऐसा कोई सवाल नहीं जिसका जवाब तुम नहीं दे सकते।"

उसने अपने एक दरबारी को बुलाया और उसको कुछ लाने के लिये कहा। कुछ ही देर में दरबारी वापस आया और उसने सेल्हम के हाथों में सोने के सिक्कों की एक थैली रख दी।

सॅपेरे ने काफी झुक कर सुलतान को सलाम किया और बाहर खड़े अपने गधे के पास चला गया।

सुलतान एक बार फिर उस चतुर सॅपेरे को अपने महल के दरवाजे से बाहर उस गधे पर सवार होते हुए और उसी समय पैदल चलते हुए देखने के लिये अपनी छत पर गया।

सेल्हम अपने उस छोटे से गधे पर सवार होते हुए और पैदल चलते हुए अपने घर की तरफ चलता चला जा रहा था।

8 बर्फ़ की लड़की[29]

वाद्यों की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

उस समय आधी रात हो रही थी। पूरे चॉद की चॉदी जैसी किरनें सारी धरती पर पड़ रही थीं।

अचानक सारा आसमान उन चिड़ियों से भर गया जो गरम जगहों से वापस लौट आयी थीं। वहॉ वसन्त सारी धरती पर अपनी पूरी शान से आ गया था और वहॉ हंस और सारस[30] भी दिखायी देखने लगे थे।

उनमें से एक चिड़िया फ़र[31] के पेड़ों से घिरे हुए एक खुले मैदान में उतरते हुए बोली — "उफ़, यहॉ कितना ठंडा है। ठंड ने तो यहॉ के पेड़ों की सब शाखाओं को कितना सख्त बना दिया है। घास के मैदानों मे घास नहीं है, पेड़ सब चुपचाप नंगे और जमे पड़े हैं, पेड़ों के ठंडे तनों पर उनके गोंद जमे हुए और लटके पड़े हैं।"

---

[29] Snowmaiden – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book : "Russian Folk-Tales". Retold by James Riordan. Oxford, OUP. 2000. 96 p.

[30] Translated for the words "Swans and Cranes"

[31] Fir is a kind of evergreen tree which has conical leaves. It is used a s Christmas tree too. It is of several kinds, but one of its kinds is shown here in the picture above.

वह कुछ देर के लिये वहाँ रुकी पर फिर वह ऊपर आसमान की तरफ देख कर बोली — "अपने ऊपर तो साफ आसमान है। चाँद तारों को देखो तो वे कितने प्यार से चमक रहे हैं पर इस धरती को देखो यह तो इतनी सख्ती से चमक रही है जैसे हीरे का हार।"

जब वह यह सब कह रही थी तो उसके असपास की सब चिड़ियें ठंड और शर्म से काँप रही थीं।

वह चिड़िया फिर बोली — "मैं ही तुम्हारे इन सब दुखों की जड़ हूँ। सोलह साल पहले मैंने ही लाल नाक वाले पाले[32] से प्यार किया था। तभी से वह मेरे ऊपर राज कर रहा है।

क्योंकि हमारी एक बेटी है इसलिये मैं उसके खिलाफ भी नहीं जा सकती। वह उसको बहुत ही गहरे जंगल में अपने बर्फ के महल में रखता है।

उसी की वजह से मैं उससे झगड़ने से भी डरती हूँ। और इसी वजह से हम लोग बहुत दुख में हैं – उफ़ यह बेरहम ठंड और जाता हुआ वसन्त का मौसम।"

सुन्दर वसन्त अपनी बेटी को बहुत प्यार करती थी। उसने अपनी बेटी के बारे में सोचते हुए एक लम्बी साँस भरी। तभी वह बड़ा सा बूढ़ा लाल नाक वाला पाला जंगल में से बाहर आया।

वह सुन्दर वसन्त से खुशी से बोला — "हलो ओ सुन्दर वसन्त।"

[32] Red-nosed Frost

सुन्दर वसन्त बोली — "हलो मिस्टर पाले। हमारी बेटी बर्फ की लड़की कैसी है?"

पाला बोला — "वह ठीक है। मैं उसको अपने बर्फ के महल में अपने साथ ही रखता हूँ। अब तो वह इतनी बड़ी हो गयी है कि अब उसको किसी आया की भी जरूरत नहीं है।"

सुन्दर वसन्त ने उससे कुछ नाराज होते हुए कहा — "ओ बूढ़े, तुम किसी लड़की के दिल के बारे में कुछ नहीं जानते। वह अब सोलह साल की है। तुमको अब उसे जहाँ भी वह जाना चाहे वहाँ जाने देना चाहिये।"

बूढ़ा पाला बोला — "और सूरज उसको देख ले तो? क्या उसका दिल आदमियों के प्यार के लिये पिघल नहीं जायेगा? और फिर यारीलो सूरज देव[33] उसको अपने कब्जे में ले लेंगे।"

इस तरह से दोनों माता पिता रात भर जंगल में बैठे बैठे अपनी बेटी की किस्मत का फैसला करते रहे कि उनको उसके बारे में क्या करना चहिये और फिर आखीर में एक नतीजे पर पहुँचे।

लाल नाक वाला पाला बोला — "मुझे मालूम है कि एक जवान लड़की को ठीक से देखभाल की जरूरत होती है पर क्योंकि तुम्हारे पास तो उसको देखने भालने का समय ही नहीं है इसलिये हम उसको ऐसे अच्छे दिल वाले किसानों की देखभाल में रख देंगे जो बहुत ही नम्र हों और जिनके अपना कोई बच्चा न हो।

[33] Yarilo Sun God

वहॉ बर्फ की लड़की के पास रोज के करने के लिये काफी काम होगा तो वह सपने देखना भी छोड़ देगी। इसके अलावा वहॉ उस पर किसी आदमी की निगाह भी नहीं पड़ेगी।"

सो बस यही तय रहा।

अगली सुबह एक बूढ़ा और उसकी पत्नी जंगल में अपनी अॅगीठी में आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठी करने आये। उस दिन क्योंकि वसन्त की छुट्टी थी सो वह बूढ़ा बहुत खुश था और बड़े उत्साह में था। वह गाना गाता चला आ रहा था और उसके पैर भी जमीन पर सीधे नहीं पड़ रहे थे।

पर उसकी पत्नी बहुत खुश नहीं थी। गॉव से आती बच्चों की आवाज उसको अच्छी नहीं लग रही थी क्योंकि उसको अपने शान्त घर की याद आ रही थी।

उस बूढ़े ने पत्नी से कहा — "अरे खुश रहा करो। मैं तुम्हें एक बात बताऊॅ? चलो हम लोग यहॉ अपने लिये बर्फ की एक बेटी बनाते हैं।"

बुढ़िया उसकी बेवकूफी पर गुस्सा हो गयी और उस पर चिल्लायी — "तुमको शर्म नहीं आती? अगर लोग हमको ऐसे बच्चों वाले खेल खेलते देख लेंगे तो।"

बूढ़े ने उसकी बातों पर ध्यान न देते हुए नीचे पड़ी बर्फ इकट्ठी करनी शुरू कर दी। पहले उसने बर्फ का एक गोला बनाया फिर उसके बॉहें और टॉगें लगायीं और फिर उसके कन्धों पर सिर रखा।

उसके एक नाक लगायी और उसके चेहरे पर मुँह और ऑखें बना दीं।

जैसे ही वह यह बना कर चुका तो एक अजीब सी बात हुई जिससे दोनों बूढ़े पति पत्नी का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

उस बर्फ की बनी लड़की के होठ तो लाल हो गये। उसकी ऑखें खुल गयीं। उसने प्यार से उस बूढ़े जोड़े की तरफ देखा और मुस्कुरायी। उसने अपने शरीर से अपनी बर्फ झाड़ी और उस बर्फ के ढेर में से बाहर निकल आयी – एक जीती जागती लड़की।

दोनों पति पत्नी तो उस ज़िन्दा लड़की को देख कर भौंचक्के रह गये। बूढ़े को लगा कि वह जो पी कर आया था शायद इसी लिये उसकी ऑखें उसके साथ चालें खेल रही थीं पर उसकी तो पत्नी भी उस लड़की को ही घूरे जा रही थी।

आखिर बूढ़ा बोला — "प्यारी बेटी, तुम्हारा नाम क्या है?"

लड़की बोली — "मेरा नाम बर्फ की लड़की[34] है।"

बिना किसी हिचकिचाहट के वे उसको अपने घर ले गये। जब वह लड़की उनके साथ जा रही थी तो उसने मुड़ कर कहा — "विदा पिता जी, विदा मॉ, विदा मेरे जंगल के घर।"

पर क्या वह जंगल के पेड़ों की पत्तियों के हिलने की आवाज थी या फिर सचमुच में ही उस बर्फ की लड़की की आवाज का किसी

[34] Translated for the word "Snowmaiden"

ने जवाब दिया — "विदा ओ बर्फ की बेटी, विदा, विदा, विदा, विदा... ।"

उनको ऐसा लगा जैसे पेड़ों ने उसको झुक कर विदा दी और घनी झाड़ियों ने हट कर उसको जाने का रास्ता दिया।

समय गुजरता गया और वह बर्फ की लड़की बड़ी होती गयी – दिन ब दिन नहीं, बल्कि हर घंटे। वह हर रोज पहले से भी बहुत ज़्यादा सुन्दर होती जाती थी।

उसकी खाल बर्फ से भी ज़्यादा सफेद थी। उसके सफेद बाल सफेद राख जैसे थे या फिर चॉदी के बिर्च के पेड़[35] जैसे रंग के थे। उसकी ऑखें नीले आसमान से भी ज़्यादा नीली थीं।

उन बूढ़े पति पत्नी के पास उस बर्फ की लड़की के लिये प्यार की कोई कमी नहीं थी। वे तो बस सारा दिन उसी को देखते रहते थे।

वह जब बड़ी हो गयी तो वह बहुत ही दयालु थी। वह घर में सारा काम करती थी। जब वह गाना गाती थी तो सारा गॉव उसका गाना सुनने के लिये रुक जाता था।

जल्दी ही वसन्त का मौसम आ गया और उसके साथ साथ आ गयी सूरज की धूप। धरती गर्म होने लगी। बर्फ की जो गन्दगी पड़ी

[35] Silver Birch Tree. See its picture above.

रह गयी थी उसके बीच में हरी हरी घास दिखायी दिखायी देने लगी और लार्क चिड़िया[36] गाने लगी।

इस धूप के आने से सब लोग बहुत खुश थे पर वह बर्फ की लड़की बहुत दुखी थी। उसको दुखी देख कर उसके माता पिता ने पूछा — "क्या बात है बेटी, क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है?"

लड़की फुसफुसाती हुई बोली — "नहीं मॉ मेरी तबियत ठीक है। पिता जी मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है।"

धीरे धीरे पहले फूल खिलने लगे। फिर घास के मैदान पीले गुलाबी और नीले रंग के फूलों से भर गये। वसन्त की सारी चिड़ियॉ वहॉ वापस आ गयी थीं।

बर्फ की लड़की धीरे धीरे और ज़्यादा शान्त और दुखी होती गयी। वह सूरज से छिप जाती। वह किसी ठंडी जगह को ढूँढती रहती। जब बारिश होती तो वह अपने हाथ उसके नीचे फैला देती।

एक बार काले बादलों का एक टुकड़ा फट गया और उसमें से बटन जितने बड़े बड़े ओले पड़ने लगे। उन ओलों को देख कर तो वह इतनी खुश हुई कि वह उनको पकड़ने के लिये ऐसे दौड़ी जैसे वे कोई कीमती जवाहरात हों।

पर जैसे ही सूरज ने उनको पिघला दिया तो वह ऐसे रो पड़ी जैसे किसी भाई के मरने पर उसकी अपनी बहिन रोती है।

[36] Lark is a small bird with yellow breast

एक दिन जब गर्मियॉ आने वाली थीं तो गॉव की कुछ लड़कियों के एक झुंड ने बर्फ की लड़की को खेलने के लिये बाहर बुलाया।

उन्होंने कहा — "आओ न हमारे साथ, हम लोग गर्मियॉ मनाने के लिये बाहर जा रहे हैं।" पर बर्फ की लड़की तो उनसे बच कर साये में जा कर सिकुड़ कर बैठ गयी।

यह देख कर उसकी बुढ़िया मॉ ने कहा — "जाओ न बेटी, अपनी दोस्तों के साथ खेल आओ। तुमको हम बूढ़ों के साथ घर में नहीं बैठना चहिये। जाओ और धूप का आनन्द लो।"

उन लड़कियों में से एक लड़की ने जिसका नाम अन्ना[37] था बर्फ की लड़की का हाथ पकड़ा और उसको मैदान की तरफ खींच ले गयी।

उन्होंने वहॉ साथ साथ फूल इकट्ठे किये, उनकी माला बना कर अपने बालों में गूँधे। फिर उन्होंने गाने गाये और जंगल के रास्तों के बराबर बराबर कूदती फॉदती रहीं।

उस दिन सारा गॉव ज़िन्दादिल हो रहा था। खुशियॉ मना रहा था। लड़के लड़कियॉ सब एक दूसरे के साथ खेल रहे थे।

पर केवल बर्फ की लड़की दुखी थी। वह अकेली घूम रही थी। उसका सिर नीचे लटका हुआ था। उसके जमे हुए होठों पर कोई मुस्कुराहट नहीं थी।

[37] Anna – name of one of the village girls

अचानक उसने बॉसुरी पर एक संगीत सुना तो उसने इधर उधर देखा। उसने देखा कि एक चरवाहा लड़का उसके सामने खड़ा है और उसको नाच के लिये बुला रहा है।

पहले तो उसने मना कर दिया और हिचकते हुए दूसरी लड़कियों के पीछे छिप गयी पर वह लड़का उसको बार बार बुलाता ही रहा।

चरवाहा लड़का बोला — "आओ प्रिय बर्फ की लड़की आओ, मेरे साथ नाचो। मैं अपनी बॉसुरी केवल तुम्हारे लिये ही बजाऊँगा और इस तरह मैं तुम्हारे होठों पर मुस्कुराहट ले कर आऊँगा।"

इस चरवाहे लड़के का नाम लैल[38] था। उसको इस बर्फ की लड़की से प्यार हो गया था। उसने उस लड़की का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

दूसरी लड़कियों ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा क्योंकि वह तो उस चरवाहे लड़के के साथ गोल गोल नाच रही थी और उसके पीले गालों पर गुलाबी चमक आ गयी थी।

उस दिन के बाद से लैल उसकी खिड़की के नीचे अक्सर ही बॉसुरी बजाया करता था। वह उसको बातें करने के लिये खेतों और मैदानों में बुला लेता।

[38] Lel – the name of the shepherd boy

वह नीली ऑखों वाली लड़की भी खुशी से अपने दोस्त के साथ दौड़ी चली जाती। वह उसके साथ घूमती और फूलों के हार बनाती। फिर उनसे अपने आपको सजाती।

लैल भी उसको बहुत प्यार करता था पर उसने कभी यह महसूस नहीं किया कि वह लड़की भी अपने दिल में उसको प्यार करती थी। उसकी दोस्ती उस लड़के को एक बच्चे की दोस्ती जैसी भोली भाली दोस्ती लगती थी।

एक दिन लैल जंगल में अकेला ही टहल रहा था कि उसने वहॉ गहरे रंग की ऑखों वाली अन्ना को देखा। अन्ना जब देखती कि लैल उस बर्फ की लड़की को तो बहुत प्यार करता था और उससे ऑखें चुरा लेता था तो उसको बहुत जलन होती थी

पर जब आज अन्ना ने देखा कि लैल अकेला ही टहल रहा है तो उसने सोचा कि उसको उसका ध्यान अपनी तरफ खींचने की एक बार फिर कोशिश करनी चाहिये।

वह उसके पास पहुॅची और बड़े मीठे शब्दों में बोली — "आज मैं तुमको यहॉ अकेले घूमते देख कर कितनी खुश हूॅ लैल। मेरे दिल में तुम्हारे लिये बहुत प्यार उमड़ रहा है। मुझे अपनी ऑखें और गाल चूमने दो। मैं तुम्हारा दिल अपने प्यार से भर दूॅगी।" कह कर उसने लैल को गले से लगा लिया।

उस नौजवान चरवाहे का दिल भी यह सुन कर प्यार से भर गया। पर तभी बर्फ की लड़की पेड़ों के बीच में से निकली और

अन्ना और लैल के सामने आ खड़ी हुई। वह कुछ समझी नहीं कि वहाँ क्या हो रहा था सो वह वहीं रुक गयी।

तुरन्त ही लैल अन्ना से अलग हो गया और बर्फ की लड़की को समझाने के लिये दौड़ा। वह उससे बड़ी नर्मी से बोला — "देखो बर्फ की लड़की, अन्ना का दिल मेरे दिल जैसा बहुत प्यारा है पर तुम्हारा दिल बहुत ठंडा और खाली है। तुम उसकी तरह से प्यार क्यों नहीं कर सकतीं?"

यह सुन कर बर्फ की लड़की के गालों पर ऑसू बहने लगे। वह जंगल की तरफ मुड़ी और उधर भाग गयी। वह जब तक भागती रही जब तक कि वह एक गहरी झील के पास नहीं आ गयी जिसमें गुलाबी और सफेद लिली खिली हुई थी।

उस झील के चारों तरफ फूलों वाली झाड़ियॉ और पेड़ थे जिनकी शाखाऐं झील के चमकते हुए पानी की तरफ झुकी हुई थीं।

उसके किनारे पर खड़े हो कर वह सिसकते हुए बोली — "ओ मेरी मॉ, इन दुख भरे ऑसुओं से तुम्हारी यह बेटी तुमसे कहती है कि तुम मुझे प्यार करना सिखा दो। मुझे एक इन्सान का दिल दे दो मॉ, मैं तुमसे भीख मॉगती हूँ।"

यह सुन कर झील में से सुन्दर वसन्त निकली और अपनी सिसकती हुई बच्ची की तरफ प्यार से देख कर बोली — "मैं तुमको केवल एक घंटा दे सकती हूँ बेटी क्योंकि कल जब सुबह होगी तो यारीलो सूरज देवता अपना गर्मी का मौसम शुरू कर देंगे और फिर

मुझे यहॉ से एक साल के लिये चले जाना पड़ेगा। तुम्हारी क्या इच्छा है मेरी बच्ची बोलो?"

बर्फ की लड़की के मुँह से बस एक शब्द निकला "प्यार"।"

कॉपते हुए दिल से बर्फ की लड़की आगे बोली — "मेरे आस पास के सब लोग प्यार करते हैं मॉ। सब खुश हैं और सन्तुष्ट हैं। केवल मैं ही हूँ जिसमें प्यार नहीं है।

न तो मैं किसी को प्यार करती हूँ और न ही मैं किसी को प्यार करने के काबिल हूँ। मॉ मैं प्यार करना चाहती हूँ पर मुझे मालूम नहीं कि मैं किसी को कैसे प्यार करूँ?"

उसकी मॉ दुखी हो कर बोली — "बेटी, क्या तुम अपने पिता की बात भूल गयीं? तुम अच्छी तरह जानती हो कि प्यार का क्या मतलब है। उसका मतलब है तुम्हारी मौत।"

बर्फ की लड़की बोली — "तो इससे तो अच्छा यह है कि मैं जल्दी से जल्दी मर जाऊँ। प्यार का एक पल, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो मुझे इस बिना प्यार वाली ज़िन्दगी से ज़्यादा प्यारा है।"

सुन्दर वसन्त एक आह भर कर बोली — "ऐसा ही हो मेरी बच्ची। प्यार का स्रोत मेरे सिर पर लगे इस लिली के ताज में है तुम इसको ले लो और अपने सिर पर पहन लो।"

बर्फ की लड़की ने खुशी से मॉ के सिर पर से वह लिली के फूलों वाला ताज ले लिया और अपने सिर पर रख लिया।

जैसे ही उसने वह ताज अपने सिर पर रखा वह चिल्लायी — "मॉ मेरे दिल में यह कैसी अजीब सी हलचल मच रही है। दुनियॉ की सुन्दरता देखने के लिये मेरी तो ऑखें खुल रही हैं। मैं चिड़ियों का गाना सुन पा रही हूॅ। मॉ मेरे दिल में वसन्त की खुशी भरी जा रही है।"

उसकी मॉ बोली — "मेरी प्यारी बच्ची वसन्त की खुशबू ने तुम्हारी आत्मा को भर दिया है। तुमको अपने दिल में प्यार की पूरी ताकत का बहुत जल्दी ही पता चल जायेगा।

पर मेरी बच्ची, एक बात का ध्यान रखना। तुम अपने प्यार को यारीलो की तेज़ नजर से बचा कर रखना। उसकी गुलाबी किरनों की तारीफ करने के लिये सुबह को बाहर मत खड़ी रहना। जल्दी से पत्तों के साये में या जंगल की ठंडक में दौड़ जाना। अच्छा विदा मेरी बच्ची।"

इन आखिरी शब्दों के साथ ही सुन्दर वसन्त झील में डूबती चली गयी। बर्फ की लड़की जंगल के रास्तों पर कूदती फॉदती चल दी। रास्ते में जब उसने बॉसुरी की आवाज सुनी तो उसका दिल तो बहुत ज़ोर से धड़कने लगा। वह उस आवाज की तरफ दौड़ पड़ी।

जल्दी ही वह एक खुले मैदान में आ पहुॅची जहॉ सूरज चमक रहा था। वहॉ फ़र के पेड़ के पास एक लकड़ी का लट्ठा पड़ा हुआ

था और उस लट्ठे के ऊपर लैल बैठा हुआ बहुत दुखी मन से अपनी बॉसुरी बजा रहा था।

वह जिस लड़की को प्यार करता था उसको देखते ही वह कूदा और खुशी से चिल्लाया — "ओ बर्फ की लड़की, मैं तुम्हें सारा दिन ढूँढता रहा। मुझे अपने उन जल्दी में कहे गये शब्दों के लिये माफ कर दो। तुम तो मुझसे बहुत गुस्सा होगी न?"

बर्फ की लड़की धीरे से बोली — "नहीं लैल। वह गुस्सा नहीं था जो मेरे दिल में भरा हुआ था, वह तो प्यार था। अब मुझे पता चला कि दुनियॉ में कहीं प्यार तो है ही नहीं।"

लैल बोला — "ओ बर्फ की लड़की तो तुम्हारे भी दिल है? तुम भी मुझसे प्यार करती हो?"

बर्फ की लड़की बोली — "हॉ मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ। मैं तुमसे प्यार करना कभी नहीं छोड़ूँगी लैल, कभी नहीं।"

उसी समय उसने आसमान की तरफ देखा तो बोली — "हमको जल्दी करनी चाहिये। यारीलो की किरनें मुझे बहुत डरा रही हैं। मुझे उनसे बचा लो लैल, क्योंकि उनसे मुझे बहुत तकलीफ पहुँचती है।"

लैल कुछ गुस्सा सा हो गया क्योंकि वह यह समझ ही नहीं पा रहा था कि वह बर्फ की लड़की क्या कह रही थी।

लैल बोला — "प्रिय बर्फ की लड़की, हम अपना प्यार दिन की रोशनी से हमेशा के लिये नहीं छिपा सकते।"

जब वह यह सब बोल रहा था तो सूरज की चमकती हुई किरनें आसमान में और ऊपर चढ़ती जा रही थीं। सुबह का धुँधलका गायब होता जा रहा था और जमीन पर पड़े बर्फ के आखिरी टुकड़े भी पिघलते जा रहे थे।

कि तभी सूरज की एक किरन बर्फ की लड़की पर पड़ी। दर्द से चिल्लाते हुए वह बर्फ की लड़की लैल से दूर हट गयी और फुसफुसाते हुए लैल से प्रार्थना की कि वह उसके लिये अपनी बाँसुरी आखिरी बार एक बार फिर से बजा दे।

लैल ने अपने काँपते होठों पर बाँसुरी रखी और उसे बजाना शुरू किया। जैसे ही उसने बाँसुरी बजाना शुरू किया बर्फ की लड़की की आँखों से आँसू बह निकले।

उसके चेहरे का रंग उतर गया। उसके पैर नीचे से पिघलने लगे। धीरे धीरे उसका शरीर भीगी हुई जमीन में धँसता चला गया केवल उसके सिर का लिली के फूलों का ताज ही जमीन पर रखा रह गया। बस।

धीरे से एक सफेद कोहरे का बादल उठा और उठ कर साफ आसमान में जा कर गायब हो गया।

यह देख कर लैल चिल्लाया — "ओ बर्फ की लड़की, मेरी प्यारी बर्फ की लड़की, तुमने मुझसे सूरज से अपनी रक्षा करने के

लिये कहा था पर मैंने नहीं सुना और अब मेरी ऑखों के सामने सामने तुम वसन्त की आखिरी बर्फ की तरह से पिघल गयीं। मुझे माफ कर दो, ओ बर्फ की लड़की मुझे माफ करदो।"

पर उसका रोना तो किसी ने सुना नहीं।

किसी ने नहीं, मतलब सिवाय एक दुखी मॉ के जो लिली से भरी झील में रहती थी और दूसरे उस बूढ़े लाल नाक वाले पाले ने जो दूर उत्तरी बर्फ में रहता था।

9 तीन उम्मीदवार[39]

वाद्यों की यह कहानी अफ्रीका महाद्वीप के सोमालिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

सोमाली लोग अपनी लोक कथाओं में पहेलियॉ पूछना बहुत पसन्द करते हैं। तुम इसको पढ़ो और सोचो कि तुम इस पहेली को हल कर सकते हो या नहीं। इस लोक कथा में एक लड़का हार्प बहुत अच्छा बजाता है।

एक बार की बात है कि सोमालिया के एक गॉव में तीन लड़के एक ही लड़की से प्यार करते थे। तीनों बराबर के अमीर थे और बराबर की हैसियत के थे सो तीनों ने ही उस लड़की से शादी का प्रस्ताव रखा।

हालॉकि इस बात से उस लड़की के पिता को बहुत खुश होना चाहिये था परन्तु ऐसा नहीं हुआ। उस लड़की के पिता का मन खुशी से भरने की बजाय और दुखी हो गया क्योंकि वह जिस किसी लड़के से भी अपनी बेटी की शादी करता उससे दूसरे दो लड़कों का अपमान होता।

उधर उस लड़की को इस बात से कोई मतलब नहीं था कि उसकी शादी किससे होती है और न ही उसने कभी यही कहा कि

[39] Three Suitors – a folktale from Somalia, Eastern Africa

वह उनमें से किससे प्यार करती थी इसलिये इस चिन्ता का बोझ भी उसके पिता पर ही था।

उन तीनों लड़कों के पिता रोज आ कर उस लड़की के पिता से कहते कि अब उसको उनके बेटों के बारे में कुछ न कुछ निश्चय कर लेना चाहिये कि वह उनमें से किसके बेटे से अपनी बेटी की शादी करना चाहता है परन्तु वह उनको रोज ही टाल देता।

उसने अपने देश के बड़े बड़े समझदार लोगों से सलाह ली, कुरान में देखा, परन्तु उसको अपनी समस्या का कहीं कोई हल नहीं मिला। आखिर में उसे एक तरकीब सूझी कि क्यों न वह उन तीनों का इम्तिहान ले कि उनमें से कौन सा लड़का उसकी बेटी के लायक है।

देश के तीन सबसे बड़े और अक्लमन्द लोग इस इम्तिहान के जज बनाये गये। इम्तिहान यह था कि कोई भी लड़का, जो भी उसकी बेटी से शादी करना चाहे, अपनी अपनी होशियारी दिखायेगा और उनमें से जो भी लड़का सबसे ज्यादा होशियार होगा वह अपनी बेटी की शादी उसी से कर देगा।

पहला लड़का तीनों में बलवान था सो उसने दो आदमियों को अपने कन्धों पर बिठाया और उन्हें नदी पार ले गया और वापस आ गया। गॉव वाले उसका बल देख कर बहुत प्रभावित हुए।

दूसरा लड़का भाला और राइफल चलाना बहुत अच्छी जानता था। उसने चैट[40] की डंडियॉ जो उसके एक दोस्त के मुँह में लगी हुई थीं अपने निशाने से उड़ा दीं। एक उड़ती हुई चिड़िया को आसमान में ही मार दिया और एक चॉदी के उड़ते हुए सिक्के को भेद दिया।

तीसरा लड़का सबसे सुन्दर था। यह लड़का हार्प[41] बजाता था और गाता था। और ऐसा गाता था कि चिड़ियॉ उड़ना भूल जाती थीं और जंगली जानवर अपना चिल्लाना बन्द कर के उसका गाना सुनने लग जाते थे।

इस लड़के ने अपना हार्प बजाया और गाया। गॉव की सारी लड़कियॉ आहें भरने लगीं और अपने अपने परदों में से बाहर निकल कर आ गयीं। यह देख कर गॉव के सारे लड़कों को गुस्सा आ गया।

तीसरे लड़के के हार्प बजाने के बाद तीनों अक्लमन्द लोग तय करने के लिये एक काफी की दूकान पर गये कि उनमें से किसको उस लड़की के लिये चुना जाये।

और उनका फैसला क्या था? क्या उनके फैसले ने लड़की के पिता को उसकी समस्या को हल करने में सहायता की?

---

[40] Chat – a kind of tree. Queen Sheba of Ethiopia took many of its brances on her journey to Jerusalem when she went to see King Solomon.

[41] Harp is a western string musical instrument. See its picture above.

इन तीनों अक्लमन्दों ने यह फैसला सुनाया — "पहले लड़के ने असाधारण ताकत का प्रदर्शन किया है, दूसरे लड़के ने असाधारण निशानेबाजी दिखायी है और तीसरा लड़का सबसे अच्छा गवैया है।" यद्यपि यह फैसला था तो अक्लमन्दी से भरा हुआ पर इससे लड़की के पिता का तो कोई भला नहीं होता था।

दिन और महीने बीतते गये और वे तीनों लड़के अब इतने अधिक चिन्तित हो गये कि उन्होंने अपने अपने तम्बू उस लड़की के घर के पास बहने वाली नदी के किनारे गाड़ लिये।

रोज उन लड़कों के पिता लड़की के पिता पर फैसला करने के लिये दबाव डालते ताकि उनके बच्चे घर लौट सकें परन्तु लड़की का पिता कोई फैसला ही नहीं कर पा रहा था।

एक दिन वह लड़की नदी पर कपड़े धोने गयी तो तीनों लड़के उसे देख रहे थे। लड़की कपड़े धोते समय किनारे से फिसल कर नदी में गिर गयी और बहने लगी।

उसी समय एक मगर उसकी तरफ बढ़ा तो हार्प बजाने वाले लड़के ने तुरन्त अपना हार्प उठाया और उसे बजाना शुरू कर दिया। हार्प के संगीत ने मगर पर जादू डाल दिया। उसने लड़की को छोड़ दिया और वह खुशी से नदी में इधर उधर लोटने लगा।

इसी बीच शिकारी ने अपनी राइफल उठा ली और मगर को मार डाला। तीसरा बलवान लड़का नदी में कूद कर लड़की को और ज़्यादा बहने से पहले ही बचा कर किनारे पर ले लाया।

तीनों लड़के उस लड़की को ले कर उसके घर गये। लड़की बेहोश थी सो डाक्टर को बुलाया गया और उसे होश में लाया गया।

अब उन तीनों उम्मीदवारों ने आपस में लड़ना शुरू कर दिया। हार्प बजाने वाला लड़का बोला — "मेरी शादी उस लड़की के साथ होनी चाहिये क्योंकि पहले मेरे ही गाने से उस जानवर ने उस लड़की को छोड़ा। अगर ऐसा न होता तो तुम दोनों की कोशिशें बेकार जातीं।"

शिकारी लड़का बोला — "गलत, तुम्हारे संगीत ने मगर को केवल एक मिनट के लिये ही तो रोक दिया था, उसी समय में मैंने उसको मार दिया था। अगर मैं उसी समय मगर को न मारता तो कुछ पल बाद ही वह उसको खा गया होता इसलिये उसकी शादी मेरे साथ होनी चाहिये।"

बलवान लड़का बोला — "गलत, गलत, तुम दोनों ही गलत हो क्योंकि अगर वह मगर से बच भी गयी थी तो भी वह नदी के बहाव में बह जाती अगर मैं उसको बाहर निकाल कर न लाता इसलिये वह मेरी है।"

जैसा कि हमने कहा था कि सोमाली लोग अपनी कहानियों में पहेलियॉ अधिक पसन्द करते हैं। तो अब यह बताओ बच्चों कि

यह लड़की किसको मिलनी चाहिये – हार्प बजाने वाले लड़के को जिसने मगर को लड़की छोड़ने पर मजबूर किया, या शिकारी लड़के को जिसने मगर को मारा और या फिर उस बलवान लड़के को जो उसको नदी में से बाहर निकाल कर लाया।

अगर तुम सोच सको तो हमको जरूर लिखना।

10 बन्दर और उसकी वायलिन[42]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफ्रीका देश की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है। देखो कि इसमें बन्दर की वायलिन क्या क्या करामात दिखाती है।

एक बार जानवरों के देश में अकाल पड़ा तो एक बन्दर को भूख की वजह से अपना देश छोड़ने और किसी दूसरी जगह जाने के लिये मजबूर होना पड़ा जहाँ वह कोई काम ढूँढ सके।

उसके अपने देश में तो बल्ब, बीन्स[43], बिच्छू, कीड़े ऐसी सभी खाने की चीज़ें करीब करीब खत्म हो चुकी थीं। पर उसकी अपनी अच्छी किस्मत से उसको अपने एक चाचा ओरंग ऊटंग[44] के घर में रहने की जगह मिल गयी थी जो उसी देश के दूसरे हिस्से में रहता था।

वहाँ कुछ दिन काम करने के बाद जब वह अपने घर लौटना चाहता था तो चलते समय उसके चाचा ने उसको एक वायलिन[45] और एक तीर कमान दिया।

---

[42] Monkey's Fiddle – a folktale from South Africa. Taken from the Web Site: http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft05.htm

[43] Bulb – a kind of root from which another plant can be grown, e.g. onion bulbs, garlic bulbs, tulip bulbs etc. There are many plants which are grown from bulb. And Beans – they can be green beans as well as dry beans also.

[44] Orang Outang – name of the uncle of the monkey

[45] Translated for the word "Fiddle" – it is like a violin string instrument. See its picture above.

उसने बन्दर को उन दोनों चीज़ों के बारे में बताया कि वायलिन बजा कर वह किसी भी चीज़ को नाचने पर मजबूर कर सकता था और तीर कमान से अपने किसी भी शिकार को निश्चित रूप से मार सकता था।

घर लौटने पर उसको सबसे पहले ब्रैर भेड़िया[46] मिला। भेड़िये ने उसको उसके घर की सारी खबर दी और साथ में यह भी कहा कि वह सुबह से एक हिरन को मारने की कोशिश कर रहा था पर वह उसको मार ही नहीं पा रहा था।

इस पर बन्दर ने उसको अपने तीर कमान का जादू बताया और कहा कि अगर वह हिरन उसको दिखायी नहीं भी दिया तो भी उसका तीर कमान उसको उसके सामने ले आयेगा और मार देगा।

सो भेड़िये ने बन्दर को वह हिरन दिखाया। बन्दर तो तैयार था जैसे ही उसने हिरन देखा उसने उसको अपना निशाना बनाया और तीर चला दिया। हिरन तुरन्त ही मर गया। दोनों ने पेट भर कर उसे खाया।

पर बजाय इसके कि वह भेड़िया बन्दर को उस हिरन को मारने और उसको खाना खिलाने के लिये धन्यवाद दे वह बन्दर से जलने लगा। उसने बन्दर से वह तीर कमान उसको दे देने की प्रार्थना की।

जब बन्दर ने अपना तीर कमान उसको देने से मना किया तो भेड़िये ने उसे अपनी ताकत से धमकाया।

[46] Brer wolf – Brer in South African language means “Brother”.

उसी समय वहॉ से एक गीदड़ गुजर रहा था। गीदड़ को देख कर भेड़िया उससे बोला कि बन्दर ने उसका तीर कमान चुरा लिया है और अब देखने से मना कर रहा था।

जब गीदड़ ने दोनों तरफ की बातें सुनी तो वह बोला कि इस मामले का फैसला वह अकेला नहीं कर सकता। उसने सलाह दी कि इस मामले को तो शेर चीते और दूसरे जानवरों की कचहरी में ले जाया जाना चाहिये।

उसने साथ में यह भी कहा कि जब तक उन लोगों का जिस चीज़ पर झगड़ा हो रहा था उसका फैसला हो वह उस चीज़ को अपने पास रखेगा ताकि वह सुरक्षित रहे।

पर इससे पहले कि बन्दर और भेड़िया कचहरी जाने के लिये आपस में राजी हों वह गीदड़ तुरन्त ही उस तीर कमान की सहायता से खाने का बहुत सारा सामान ले आया।

इस काम में क्योंकि उसको बहुत देर लग गयी इसलिये तब तक बन्दर और भेड़िया कचहरी नहीं जा सके।

और कोई रास्ता न देख कर दोनों कचहरी जाने के लिये तैयार हुए। बन्दर के सबूत बहुत कमजोर थे और उससे भी बुरी बात यह थी कि गीदड़ उसके खिलाफ बोल रहा था।

उधर गीदड़ बन्दर के खिलाफ इसलिये बोल रहा था कि अगर वह बन्दर के खिलाफ बोलेगा तो शायद वह भेड़िये से भी तीर

कमान लेने में कामयाब हो जायेगा क्योंकि वह तीर कमान तो उसको भी अच्छा लगा था।

कचहरी में जाने पर बन्दर को सजा हो गयी। चोरी जानवरों की दुनियॉ में एक बहुत बड़ा जुर्म था और उसकी सजा फॉसी थी। बन्दर बेचारा क्या करता। बन्दर का तीर कमान तो गीदड़ के पास था पर खुशकिस्मती से उसकी वायलिन अभी भी उसी के पास थी।

जैसा कि रिवाज है कि मरने वाले से उसकी आखिरी इच्छा पूछी जाती है बन्दर को मारने से पहले उसकी भी आखिरी इच्छा पूछी गयी तो उसने फॉसी पर चढ़ने से पहले कचहरी से एक बार अपनी वायलिन बजाने की प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना मान ली गयी।

हालॉकि बन्दर तो पहले से ही बहुत अच्छी वायलिन बजाता था और अब तो उसके पास यह जादू की वायलिन थी तो इसकी तो दूसरी वायलिनों से ताकत ही अलग थी।

जैसे ही उसने "मुर्गे की बॉग"[47] धुन का पहला सुर छेड़ा तो शेर की सारी कचहरी जैसे ज़िन्दा हो उठी। और फिर कुछ ही पलों में तो वहॉ बैठा हर जानवर नाचने लगा।

वह बार बार और जल्दी जल्दी उस धुन को बजाने लगा। जितनी जल्दी वह धुन वह बजा रहा था सारे जानवर उतनी ही तेज़ी से नाचते जा रहे थे।

[47] Cockcrow tune – maybe it was some good popular musical tune of South Africa

कुछ ही देर में वे सब जानवर नाचते नाचते इतने थक गये कि उनमें से बहुत सारे जानवर तो थक कर नीचे ही गिर पड़े। पर उनके पैर उनके जमीन पर गिरने के बाद भी हिल रहे थे।

पर बन्दर ने उसके चारों तरफ क्या हो रहा था किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं दिया। वह तो बस अपनी ऑखों को आधा बन्द किये और अपने सिर को वायलिन से टिकाये हुए मग्न हो कर अपनी वायलिन बजाता रहा।

सबसे पहले हॉफता हुआ भेड़िया सहायता की आवाज में चिल्लाया — "ओ बन्दर भाई, बन्द करो अपनी यह वायलिन। हमारे प्यार की खातिर इसे बन्द करो।"

पर बन्दर ने उसको भी नहीं सुना और वह अपनी वायलिन पर वह मुर्गे की बॉग वाली धुन बजाता ही रहा, बजाता ही रहा।

कुछ देर बाद शेर थक गया और जब वह अपनी पत्नी के साथ नाच का एक चक्कर और काट कर बन्दर के पास आया तो चिल्लाया — "मेरा पूरा राज्य तुम्हारा है अगर तुम अपनी वायलिन बजाना बन्द कर दो तो।"

बन्दर बोला — "मुझे तुम्हारा राज्य नहीं चाहिये। तुम बस मेरी सजा वापस ले लो और मेरा तीर कमान वापस कर दो। और हॉ ओ भेड़िये, तुम यह मान लो कि तुमने उसे मुझसे चुराया है। बस मैं तुरन्त ही अपनी वायलिन बन्द कर दूँगा।"

भेड़िया चिल्लाया — "हॉ मैं मानता हूँ, हॉ मैं मानता हूँ कि मैंने ही उसे तुमसे चुराया है।"

शेर भी चिल्लाया — "हॉ मैं तुम्हारी सजा वापस लेता हूँ।"

बन्दर ने एक दो बार वह धुन और बजायी और अपना तीर कमान ले कर एक कैमलथौर्न[48] के पेड़ के ऊपर जा कर बैठ गया।

वहॉ कचहरी में दूसरे सारे जानवर सब इतने डर गये कि वे सब वहॉ से भाग गये कहीं ऐसा न हो कि बन्दर अपनी वायलिन फिर से बजाना शुरू कर दे।

इस तरह बन्दर ने अपनी वायलिन बजा कर अपनी जान बचायी।

[48] Camelthorn tree is one of the most found trees of South African trees even in desert. See its picture above.

11 एक लड़का और वायलिन[49]

वायलिन वाद्य की यह लोक कथा दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के ब्राज़ील देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके एक ही बेटा था। जब वह आदमी मर गया तो वह लड़का इस दुनियॉ में अकेला रह गया। उस आदमी के पास कोई जायदाद नहीं थी – केवल एक बिल्ला था, एक कुत्ता था, एक छोटा सा टुकड़ा जमीन का और उस पर कुछ सन्तरे के पेड़ थे।

उस लडके ने कुत्ता अपने एक पड़ोसी को दे दिया और सन्तरे के पेड़ और जमीन बेच दी। इन सबको बेचने से उसे जो पैसा मिला उससे उसने एक वायलिन[50] खरीद ली।

वह बहुत दिनों से एक वायलिन खरीदने की सोच रहा था। और अब तो उसकी उसको खरीदने की इच्छा बहुत बढ़ गयी थी।

जब उसका पिता ज़िन्दा था तब तो वह अपनी बात अपने पिता से भी कह सकता था पर अब तो उसको बात करने के लिये कोई

---

[49] The Boy and the Violin – a folktale from Brazil, South America. Taken from the Web Site : http://www.worldoftales.com/South_American_folktales/South_American_Folktale_25.html
Taken from the Book : "Tales of Giants From Brazil", by Elsie Spicer Eells. NY, Dodd, Mead and Company, Inc. 1918. 12 Tales.
[My Note: This story is not a unique story of the world. There are a few other stories like this.]

[50] Violin is a string musical instrument. See its picture above.

चाहिये था। सो वह थी अब उसकी वायलिन। पर वह वायलिन जो कुछ भी बदले में उसको जवाब देती थी वह था दुनियॉ का सबसे मीठा संगीत।

लड़का नौकरी की खोज में राजा की भेड़ों की देखभाल करने के लिये राजा के पास नौकरी मॉगने गया पर राजा ने कहा कि उसके पास तो पहले से ही कई सारे चरवाहे थे उसे अभी कोई नया चरवाहा नहीं चाहिये।

सो लड़के ने अपनी वायलिन उठायी जो वह अपने साथ ले कर आया था और उसको ले कर घने जंगल में चला गया। वहॉ जा कर उसने वायलिन पर कई सारी धुनें बजायीं।

वहीं पास में ही राजा के कई चरवाहे राजा की भेड़ों को चरा रहे थे। उन्होंने उसकी वे धुनें सुनीं तो पर वे यह पता नहीं चला सके कि उन्हें कौन बजा रहा था।

राजा की भेड़ों ने भी उस संगीत को सुना। उसको सुन कर कई भेड़ें तो अपना झुंड छोड़ कर उस संगीत की तरफ जंगल की तरफ चल दीं। आखिर वे उस लड़के और उसके कुत्ते और उसकी वायलिन के पास तक पहुॅच गयीं।

जब चरवाहों ने देखा कि उनकी भेड़ें जंगल की तरफ चली जा रही हैं तो वे चरवाहे परेशान हो गये। वे उनको वापस लाने के लिये उनके पीछे पीछे भागे पर उनको तो वे मिली ही नहीं।

कभी कभी उनको लगता कि वे कहीं आस पास में ही हैं जहॉ से संगीत की आवाज आ रही थी पर जब वे उस दिशा में भागते जिधर से संगीत की आवाज आ रही थी तो वहॉ पहुँच कर उनको लगता कि वह आवाज तो कहीं दूर से उनकी उलटी दिशा से आ रही थी।

वे डर गये कि उस घने जंगल में वे कहीं खो न जायें सो निराश हो कर उन्होंने उनकी खोज छोड़ दी।

उधर जब लड़के ने देखा कि उसका संगीत सुनने के लिये कितनी सारी भेड़ें उसके पास आ गयी हैं तो वह बहुत खुश हुआ। उसका संगीत अब दुख का मीठा संगीत नहीं रह गया था जैसा कि वह जब बजाता था जब वह अकेला था। उससे अब खुशी की धुनें निकलने लगी थीं।

इसके बाद तो उसका संगीत इतनी ज़्यादा खुशी का हो गया कि उसको सुन कर उसकी बिल्ली भी नाचने लगी। जब भेड़ों ने बिल्ली को नाचते देखा तो खुशी से वे भी नाचने लगीं।

कुछ समय बाद वहॉ से बन्दरों की एक टोली गुजरी तो उन्होंने भी उसके संगीत की आवाज सुनी तो वे भी नाचने लगे।

नाचते समय वे इतनी ज़ोर ज़ोर से किलकारियॉ मार रहे थे कि उनकी किलकारियों की आवाज में लड़के की वायलिन के संगीत की आवाज डूब गयी।

लड़के ने उनको धमकाया कि अगर वे बिना शोर किये खुश नहीं हो सकते थे तो वह अपनी वायलिन बजाना बन्द कर देगा। उसके बाद बन्दरों का किलकारी मारना कुछ कम हुआ।

कुछ देर बाद एक सूअर[51] ने इस खुशी की आवाज सुनी तो उसने भी अपने अगले पैर उठा कर अपने पिछले पैरों पर खड़े हो कर नाचना शुरू कर दिया। वह अपने पैरों को नाचने से रोक ही नहीं पा रहा था सो वह भी लड़के के पीछे जाते हुए जुलूस में शामिल हो गया – लड़का, बिल्ली, भेड़ और बन्दर।

इसके बाद अरमाडिलो[52] ने यह संगीत सुना तो अपने भारी खोल के बावजूद वह भी नाचने लगा।

उसके बाद छोटे छोटे हिरनों के एक झुंड भी उस जुलूस में शामिल हो गये। एक कीड़े खाने वाला[53] भी नाचता हुआ उनके पीछे पीछे चल दिया। एक जंगली बिल्ला और एक चीता भी आ गये।

इनको देख कर भेड़ और हिरन बहुत डर गये पर फिर भी वे पहले ही की तरह नाचते रहे। उधर चीता और बिल्ले को इस बात का

[51] Translated for the word “Tapir”. Tapir is a small pig-like animal native to South America

[52] Armadillo is a very common animal of South America and very popular in their folktales. It has an armor on his body. See its picture above.

[53] Translated for the word “Anteater”. See its picture below the picture of Armadillo.

पता ही नहीं चला कि भेड़ और हिरन उनसे डर रहे हैं सो वे भी नाचते रहे।

बड़े बड़े सॉप पेड़ों के तनों से लिपट गये और चाहने लगे कि काश उनके भी पैर होते तो वे भी नाचते। चिड़ियों ने भी नाचना चाहा पर वे अपने छोटे छाटे पैरों से नाच ही नहीं सकीं। वे बस खुशी से उड़ती रहीं।

इस तरह जंगल के जितने भी जानवर नाच सकते थे उस लड़के के पीछे नाचते हुए जुलूस में नाचते हुए उसके पीछे पीछे चले जा रहे थे।

इस तरह से यह खुश जुलूस नाचते हुए आगे बढ़ रहा था कि ये सब एक ऊॅची दीवार के पास आ पहुॅचे। यह ऊॅची दीवार बड़े साइज़ के लोगों[54] के शहर के चारों तरफ बनी हुई थी।

एक बड़े साइज़ का आदमी उस दीवार पर खड़ा हो कर अपने शहर की पहरेदारी कर रहा था तो वह तो यह जुलूस देख कर इतने ज़ोर से हॅसा कि बस दीवार से गिरते गिरते ही बचा।

वह तुरन्त ही उन सबको राजा के पास ले गया। राजा भी उन सबको देख कर इतना हॅसा इतना हॅसा कि वह भी अपनी राजगद्दी से गिरते गिरते बचा। उसके हॅसने से तो सारी धरती हिल गयी।

अब धरती तो पहले कभी उस बड़े साइज़ के आदमी के हॅसने से इस तरह से नहीं हिली थी हालॉकि उसने राजा की गुस्से से गरज

[54] Translated for the word “Giants”. Its feminine is “Giantess”.

भरी आवाजें पहले जरूर सुनी थीं। लोगों को पता ही नहीं था कि वे उन सबका क्या करें।

अब हुआ यह कि उस बड़े साइज़ के लोगों के शहर में उनके राजा की एक बहुत सुन्दर बेटी थी जो कभी नहीं हॅसी थी। वह हमेशा दुखी और उदास बैठी रहती थी।

जा भी उसको हॅसा देता राजा ने उसको अपना आधा राज्य देने का ऐलान कर रखा था। सारे बड़े साइज़ के लोगों ने अपनी अपनी सब हॅसाने वाली तरकीबें इस्तेमाल कर ली थीं पर कोई उसको हॅसाना तो दूर उसके चेहरे पर छोटी सी मुस्कान भी नहीं ला पाया था।

बड़े साइज़ के आदमियों के शहर के राजा ने जब एक छोटे से आदमी को वायलिन बजाते और उसके पीछे आते हुए बिल्ली, भेड़ बन्दर और बहुत सारे जानवरों को आते हुए और नाचते हुए देखा तो कहा —

"अगर मेरी बेटी इस दृश्य को भी देख कर भी नहीं हॅसी तो बस समझो कि वह किसी भी तरह नहीं हॅस सकती। उसके बाद तो मैं उसके लिये बिल्कुल ही नाउम्मीद हो जाऊॅगा।"

अगर वह बड़े साइज़ के आदमियों का राजा नाचना जानता तो शायद वह खुद भी नाचने लगता। पर यह बात धरती के लोगों के लिये तो अच्छी ही रही कि वह नाचना नहीं जानता था। अगर वह नाचना जानता होता तो पता नहीं धरती का जाने क्या होता।

यह सोच कर कि शायद यह दृश्य उसकी बेटी को हॅसा सके राजा उस झुंड को अपनी बेटी के महल में ले गया जहॉ वह अपनी दासियों से घिरी हुई बैठी थी। उसका प्यारा सा चेहरा हमेशा की तरह से उदास था।

पर जैसे ही उसने यह दृश्य देखा तो उसके चेहरे के भाव बदल गये। वह खुश मुस्कुराहट जो उसका पिता हमेशा से उसके चेहरे पर देखना चाहता था उस दृश्य को देख कर उसके होठों पर खेल गयी।

वह उसको देख कर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ी। वह पहली बार इतनी ज़ोर से हॅसी थी कि राजा तो उसको हॅसते देख कर बहुत तो इतना खुश हो गया कि उसकी लम्बाई एक लीग[55] बढ़ गयी। और इस लम्बाई बढ़ने से उसका वजन कितना बढ़ गया यह तो पता नहीं।

उसने उस लड़के से कहा — "बेटे तुमको मेरा आधा राज्य मिलेगा क्योंकि मैंने यह कह रखा है कि जो कोई भी मेरी बेटी को हॅसा देगा मैं उसको अपना आधा राज्य दूॅगा। तुमने उसे हॅसा दिया इसलिये मैं तुमको अपना आधा राज्य देता हूॅ।"

उसके बाद से उस लड़के ने उस बड़े साइज़ के लोगों के आधे राज्य पर राजकुमार बन कर राज करना शरू कर दिया। उसको

[55] A league is a unit of length. It was long common in Europe and Latin America, but it is no longer an official unit in any nation. The word originally meant the distance a person could walk in an hour. On land, the league was most commonly defined as three miles, though the length of a mile could vary from place to place and depending on the era.

वहॉ राज करने में कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि बड़े से बड़े बड़े साइज़ के लोग भी उसका छोटे से छोटा हुक्म तुरन्त ही बजा लाते थे अगर वह उनको अपनी वायलिन बजा कर सुनाता।

उसके पीछे आने वाले जंगली जानवर भी वहॉ तब तक रहे जब तक वे बड़े नहीं हो गये। पर वह लड़का और उसकी वायलिन वैसे ही रहे जैसे कि जब वे वहॉ आये थे।

12 राजा का जादू का ढोल[56]

ढोल की यह लोक कथा अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

ऐफ्रियाम ड्यूक[57] नाम का एक राजा राज करता था। वह बहुत ही शान्तिप्रिय राजा था और उसको लड़ाई बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती थी।

उसके पास जादू का एक ढोल था। वह जब भी उस ढोल को बजाता था तो उसमें से बहुत अच्छा अच्छा खाना और पीने के लिये शराब आदि निकलते थे। सो जब भी कोई राजा उस पर चढ़ाई करता था तो बजाय लड़ने के वह अपने दुश्मनों को बुलाता और अपना ढोल बजाता।

तुरन्त ही उन सबके सामने बड़ी बड़ी मेजें लग जाती और उन पर मजेदार स्वादिष्ट खाना और शराब आदि लग जाते – फू फू, मछली, सूप, पकाया हुआ याम[58], भिंडी, कई प्रकार की

[56] The King's Magic Drum – a folktale from Southern Nigeria, Africa.
Adapted from the book : "Folktales From Southern Nigeria" by Elphinstone Dayrell. 1910.
Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free od charge.

[57] Efriam Duke – name of the King of Calabar

[58] Yam is root vegetable and is a very popular stable food of West African countries especially of Nigeria. See the picture of one of the cooked dish of yam.

बीयर आदि आदि। यह सब देख कर उसके दुश्मनों की सेना बहुत ताज्जुब करती।

दुश्मनों की सेना इतना अच्छा खाना खा कर बहुत खुश होती। सारे सैनिक सन्तुष्ट हो जाते क्योंकि उनका पेट भर जाता और वे बिना लड़े ही चले जाते। इस तरह वह राजा अपने दुश्मनों को खुश और दूर रखता था।

उस ढोल में बस एक ही कमी थी और वह यह कि यदि उसके मालिक का पैर सड़क पर पड़ी किसी लकड़ी की डंडी पर पड़ जाये या फिर किसी गिरे हुए पेड़ पर पड़ जाये तो उस ढोल से निकला हुआ सारा खाना खराब हो जाता था और चार सौ ईबो[59] लोग डंडे ले कर प्रगट हो जाते थे और उस ढोल के मालिक और उससे निकला खाना खाने वालों को बहुत मारते थे।

ऐफ़ियाम इ्यूक एक बहुत अमीर आदमी था। उसके पास बहुत सारे खेत थे, सैंकड़ों गुलाम थे और समुद्र के किनारे एक बहुत बड़ा अन्न का गोदाम था।

उसके पास पाम के तेल के बहुत सारे डिब्बे थे। उसकी पचास पत्नियॉ थीं और उनसे उसके बहुत सारे बच्चे थे। उसकी सब पत्नियॉ बहुत अच्छी मॉऐं थीं और वे अपने बच्चों को तन्दुरुस्त रखती थीं।

[59] Igbo people are to maintain discipline

हर कुछ महीनों में राजा अपनी सब प्रजा को अपने घर बुलाता था और एक शानदार दावत देता था। यहाँ तक कि वह अपने राज्य के जंगली जानवरों को भी नहीं छोड़ता था – शेर, चीते, भालू, जंगली गायें, बारहसिंगे आदि आदि सभी जानवरों को वह उस दावत में बुलाता था।

उन दिनों जंगली जानवरों से आदमियों को कोई परेशानी नहीं होती थी क्योंकि सभी आपस में दोस्ती से रहते थे और कोई एक दूसरे को मारता नहीं था।

सारे लोग राजा के ढोल से जलते थे और उसको पाना चाहते थे पर राजा उस ढोल को किसी को देता नहीं था।

एक सुबह राजा की एक पत्नी ऐक्वोर एडेम[60] अपनी बेटी को एक खास झरने पर नहलाने के लिये ले जा रही थी क्योंकि उसके शरीर पर बहुत सारी फुन्सियाँ हो रहीं थीं।

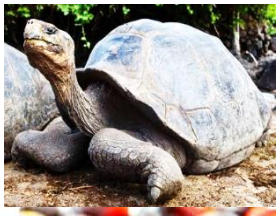

उस झरने के पास पाम का एक पेड़ था और उस पेड़ के ऊपर एक कछुआ बैठा था। वह कछुआ वहाँ बैठा बैठा अपने दोपहर के खाने के लिये पाम की कुछ गिरी[61] तोड़ रहा था कि गिरी तोड़ते समय उसकी एक गिरी नीचे गिर गयी।

[60] Ekwor Edem – name of the king's wife

[61] Translated for the words "Palm Nuts". See their picture above.

बच्ची ने जैसे ही पाम की गिरी जमीन पर देखी तो वह उसे खाने के लिये चिल्लायी। मॉ को कुछ और नहीं सूझा तो उसने वह गिरी उठा कर बच्ची को दे दी।

कछुआ ऊपर बैठा यह सब देख रहा था। वह तुरन्त ही पेड़ से नीचे उतरा और उस स्त्री से पूछा कि उसकी पाम की गिरी कहॉ है। मॉ ने भोलेपन से जवाब दिया कि वह गिरी तो नीचे पड़ी थी सो मैंने उसे बच्ची को खाने के लिये दे दी।

यह कछुआ भी राजा का ढोल लेना चाहता था तो उसने सोचा कि यह अच्छा मौका है राजा के ढोल लेने का। वह इस बात को ले कर खूब हल्ला गुल्ला मचायेगा और राजा को उसका ढोल उसको देने पर मजबूर कर देगा।

यही सोच कर वह बच्ची की मॉ से बोला — "मैं तो बहुत ही गरीब हूॅ। बड़ी मुश्किल से मैं अपने और अपने परिवार के लिये खाना लाने के लिये पेड़ पर चढ़ कर पाम की कुछ गिरी तोड़ रहा था कि तुमने मेरी गिरी ले ली और अपनी बच्ची को दे दी।

अब मैं यह सब मामला जा कर राजा को बताता हूॅ। जब वह यह सुनेगा कि उसकी पत्नी ने मेरा खाना चुराया है तब मैं देखता हूॅ कि वह क्या कहता है।"

जब मॉ अपनी बच्ची को झरने में नहला चुकी तो अपने साथ वह कछुए को भी अपने घर ले गयी और राजा को बताया कि उसके साथ क्या हुआ था।

राजा ने कछुए से पूछा कि वह अपनी गिरी के बदले में क्या लेगा – धन, कपड़े, पाम का तेल, अनाज? पर कछुए ने इन सबके लिये मना कर दिया।

राजा ने फिर कहा और जो भी कुछ तुमको चाहिये तुम वह माँग लो मैं तुम्हें वही दे दूँगा।

अबकी बार कछुए ने तुरन्त राजा के ढोल की तरफ इशारा करते हुए कहा — "मुझे तो केवल आपका यह ढोल ही चाहिये।"

हालाँकि राजा कछुए को वह ढोल देना नहीं चाहता था पर उससे बहस से बचने के लिये राजा ने वह ढोल कछुए को दे दिया पर उसने उसे यह नहीं बताया कि उसकी क्या कमी थी – जैसे कि उसको सड़क पर पड़े किसी लकड़ी के डंडे पर या किसी गिरे हुए पेड़ पर पैर नहीं रखना चाहिये।

कछुआ खुशी खुशी घर चला गया और जा कर अपनी पत्नी को अपनी जीत की कहानी सुनायी।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "मैं अब बहुत अमीर हो गया हूँ अब मुझे काम करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं अब जब भी चाहूँ तभी खाना खा सकता हूँ। मुझे तो बस इस ढोल को बजाने की जरूरत है और यह ढोल मेरे सामने बहुत सारा खाना और शराब ला कर दे देगा।"

कछुए की पत्नी और बच्चे तो यह सुन कर बहुत ही खुश हुए और उन्होंने उससे उस ढोल को बजाने के लिये कहा ताकि वे सब खूब अच्छा अच्छा खाना खा सकें क्योंकि वे सभी भूखे थे।

कछुआ यह सुन कर ढोल बजाने के लिये तुरन्त ही राजी हो गया क्योंकि जो चीज़ वह ले कर आया था और जो अब उसकी अपनी थी उसका कमाल वह अपने परिवार को दिखाना चाहता था।

इसके अलावा वह खुद भी बहुत भूखा था सो उसने वह ढोल उसी तरीके से बजा दिया जैसे उसने राजा को दावत देने के समय बजाते देखा था।

जैसे ही कछुए ने ढोल बजाया वहॉ बहुत सारा स्वादिष्ट खाना प्रगट हो गया। कछुए का पूरा परिवार बैठ गया और उन सबने खूब पेट भर कर खाना खाया।

यह सब तीन दिन तक ठीक ठाक चलता रहा। उसके सारे बच्चे अच्छा और खूब खाना खा खा कर खूब मोटे हो गये।

अब इस सबको दिखाने के लिये कछुए ने सब आदमियों को, जानवरों को और राजा को भी दावत दी। जब सबको यह बुलावा मिला तो सब बहुत हॅसे क्योंकि वे यह जानते थे कि कछुआ तो बहुत ही गरीब है वह इतने सब लोगों को खाना कैसे खिलायेगा। इसलिये बहुत ही थोड़े लोग उसके यहॉ आये।

पर राजा को तो मालूम था कि कछुए के पास ढोल है और वह कितनी भी बड़ी दावत दे सकता है इसलिये राजा उसके यहाँ आया।

जैसे ही कछुए ने ढोल बजाया बहुत सारा मजेदार खाना हाजिर हो गया और सारे लोगों ने खूब खाना खाया।

वे सब यह देख कर हैरान थे कि कछुए के पास इतना सारा खाना आया कहाँ से? जब वे खाना खा कर अपने घर चले गये तो उन्होंने अपने जानने वालों को भी बताया कि आज उन्होंने कछुए के घर कितना सारा और कितना अच्छा खाना खाया था। ऐसा खाना तो उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं खाया था।

जो लोग कछुए के घर नहीं गये थे वे बहुत दुखी हुए कि वे इतना अच्छा खाना खाने क्यों नहीं गये क्योंकि इतना अच्छा मुफ्त का खाना रोज रोज थोड़े ही मिलता है।

अब इस दावत को देने के बाद कछुआ राज्य का सबसे अमीर आदमी हो गया था और अब सब उसकी बहुत इज़्ज़त करने लगे थे।

सिवाय राजा के किसी और को इस भेद का पता नहीं था कि कछुए ने यह दावत कैसे दी पर सबने यह सोच लिया कि अब यदि कछुआ उनको दावत पर बुलायेगा तो वे कभी भी ना नहीं करेंगे।

जब ढोल लिये हुए कछुए को कुछ हफ्ते बीत गये तो वह बहुत आलसी हो गया। अब वह कोई काम करने नहीं जाता था बल्कि

हर समय अपनी अमीरी की ही शान बघारता रहता था। वह अब पीने भी बहुत लगा था।

एक दिन कछुआ दूर किसी खेत पर ताड़ी[62] पीने गया तो वहाँ वह अपना ढोल भी ले गया। वहाँ जा कर उसने बहुत ताड़ी पी। पर जब वह घर लौट रहा था तो रास्ते में पड़ी एक डंडी पर उसका पैर पड़ गया।

डंडी पर पैर पड़ते ही उस ढोल का जू जू[63] तुरन्त ही टूट गया पर उसको इस बात का पता ही नहीं चला क्योंकि उसको तो यह सब कुछ मालूम ही नहीं था।

वह जब घर आया तो बहुत थका हुआ था। घर आ कर उसने वह ढोल एक कोने रख दिया और सोने चला गया। सुबह को जब वह उठा तो उसे बहुत भूख लगी थी। उसकी पत्नी और बच्चे भी खाने के लिये शोर मचा रहे थे सो तुरन्त ही उसने अपना ढोल बजाया।

पर यह क्या? बजाय खाने के वहाँ तो तीन सौ ईबो लोग डंडा ले कर आ गये और उन्होंने कछुए और उसके परिवार वालों को अपने डंडों से खूब पीटा।

यह देख कर कछुआ बहुत गुस्सा हुआ। उसने सोचा मैंने तो बहुत सारे लोगों को दावत के लिये बुलाया था पर बहुत कम लोग

[62] Translated for the word “Palm Wine”

[63] Ju Ju is a kind of magic or Black Magic in West Africa. In Hindi it is called “Jaadoo Tonaa”.

आये थे और हर एक को उस दावत में खूब पेट भर कर खाना मिला और जब मैंने केवल अपने परिवार के लिये खाना माँगा तो ये ईबो आ गये और इन्होंने हमें मारा।

अब मैं सब लोगों को इसी तरह मारूँगा। क्योंकि इस ढोल की दावत तो सारे लोग उड़ायें और मार केवल मैं ही खाऊँ? यह नहीं हो सकता।

अगले दिन उसने फिर सबको शाम को तीन बजे दावत के लिये बुलाया। इस बार बहुत सारे लोग आये क्योंकि वे इतनी अच्छी दावत को खोना नहीं चाहते थे।

बीमार लोग, लँगड़े लोग, और अन्धे लोग भी आये पर राजा और उसकी पत्नियाँ नहीं आये। राजा को पता चल गया था कि उसके ढोल का जू जू टूट चुका है इसलिये अब वहाँ खाने की बजाय मार मिलने वाली है।

जब सब लोग आ गये तो कछुए ने अपना ढोल बजाया और ढोल बजा कर जल्दी से एक बैन्च के नीचे छिप कर बैठ गया जहाँ उसको कोई नहीं देख सकता था।

उसको तो मालूम था कि ढोल बजने पर क्या होने वाला है सो उसने अपनी पत्नी और बच्चों को भी पहले ही दूर भेज दिया।

जैसे ही उसने ढोल बजाया तीन सौ ईबो लोग डंडा लिये प्रगट हो गये और उन्होंने सब मेहमानों को मारना शुरू कर दिया। कोई

भी मेहमान भाग नहीं सका क्योंकि कछुए ने अपने घर के ऑगन के दरवाजे पहले से ही बन्द कर दिये थे।

यह पिटाई करीब दो घंटे तक चलती रही। बहुत सारे लोग तो इतने अधिक घायल हो गये थे कि दूसरे लोग उनको उठा उठा कर ले गये।

एक चीता ही था जो इस पिटाई से बचा रहा क्योंकि जैसे ही उसने ईबो लोगों को देखा वह समझ गया कि अब यहॉ कुछ गड़बड़ होने वाली है सो उसने एक ऊॅची छलॉग लगायी और वह कछुए के घर के ऑगन से बाहर कूद गया।

जब कछुआ सबकी पिटाई से सन्तुष्ट हो गया तब वह अपनी बैन्च के नीचे से बाहर निकला और उसने अपने घर के ऑगन का दरवाजा खोला। तब सारे लोग बाहर निकले। फिर उसने ढोल को एक खास तरीके से बजाया तो वे सारे ईबो लोग गायब हो गये।

कछुए की इस तरह की दावत से सारे लोग कछुए से बहुत गुस्सा थे सो कछुए ने निश्चय किया कि वह अगले दिन वह ढोल राजा को वापस कर देगा। अगले दिन सुबह ही कछुए ने वह ढोल उठाया और राजा के महल की तरफ चल दिया।

राजा के महल में पहुॅच कर वह राजा से बोला कि वह उस ढोल से सन्तुष्ट नहीं था और वह अपनी गिरी के बदले कुछ और लेना चाहता था।

अब उसको इस बात की कोई ज़्यादा फिक्र नहीं थी कि अब राजा उसे क्या देता है क्योंकि राजा की दी हुई पहली चीज़ की तो उसने पूरी कीमत वसूल कर ली थी।

अब वह अपनी गिरी के बदले में कुछ गुलाम या कुछ खेत या कुछ कपड़े या कुछ धन लेने के लिये भी तैयार था।

राजा ने उसे यह सब देने से इनकार कर दिया और क्योंकि राजा कछुए के लिये सचमुच ही बहुत दुखी था इसलिये उसने उसको जादू का एक फू फू[64] का पेड़ देने का विचार किया। कछुआ भी यह जादू का पेड़ लेने के लिये तुरन्त तैयार हो गया।

यह जादू का फू फू का पेड़ साल में फल तो एक बार ही देता था परन्तु फू फू और सूप रोज गिराता था।

उस पेड़ की शर्त यही थी कि कछुए को दिन में केवल एक बार ही यह फू फू और सूप उस पेड़ के नीचे से पूरे दिन के लिये इकट्ठा करना होता था। वह दोबारा उसी दिन फू फू और सूप इकट्ठा करने नहीं आ सकता था। कछुए ने राजा को उसकी दया के लिये धन्यवाद दिया, फू फू का वह पेड़ लिया और घर चला गया।

उसने अपनी पत्नी को बुलाया और उससे एक कैलेबाश[65] लाने के लिये कहा। उस दिन कछुए ने दिन भर के लिये काफी फू फू और सूप इकट्ठा कर लिया

[64] Foo Foo is a kind of Nigeran food.

[65] Calabash is the dry cover of a pumpkin like fruit which can be used to keep dry or wet things. It looks like Indian clay pitcher. See its picture above.

और वे सब उस खाने से बहुत खुश थे। खुशी खुशी वे सब पेट भर कर खाना खा कर सो गये।

लेकिन कछुए के बच्चों में से उसका एक लड़का बहुत लालची था। वह रात भर यही सोचता रहा कि उसका पिता यह सब अच्छी अच्छी चीज़ें लाता कहाँ से है।

सो सुबह उठते ही उसने अपने पिता से पूछा — "पिता जी आप यह इतना अच्छा फू फू और सूप कहाँ से लाये?"

उसका पिता तो चुप रहा पर उसकी चालाक माँ बोली — "यदि हम अपने बच्चों को फू फू के पेड़ का भेद बता दें तो हमारे बच्चों को यदि ज़्यादा भूख लगी तो वे दोबारा उस पेड़ के पास चले जायेंगे और फू फू और सूप इकट्ठा कर लायेंगे। इससे उस पेड़ का जू जू टूट जायेगा।"

लेकिन उस लालची लड़के ने अपने लिये खूब सारा खाना लाने की सोची और अगले दिन वह अपने पिता के पीछे पीछे यह देखने के लिये गया कि उसका पिता कहाँ जाता है और क्या करता है।

हालाँकि यह काम ज़रा मुश्किल था क्योंकि उसका पिता अक्सर बाहर अकेला ही जाता था और बहुत ही होशियारी से यह देखते हुए जाता था कि कहीं कोई उसका पीछा तो नहीं कर रहा पर फिर भी कछुए के उस बेटे ने उसका पीछा करने की तरकीब निकाल ही ली।

उसने एक लम्बी गर्दन वाला कैलेबाश लिया जिसमें दूसरी तरफ एक छेद था। उसमें उसने लकड़ी की राख भर ली। उसने एक थैला भी ले लिया जैसा कि उसका पिता ले कर जाता था।

थैले में उसने एक छेद कर लिया और राख भर कर उसने वह कैलेबाश उलटा कर यानी कैलेबाश की गर्दन नीचे कर के उस थैले में रख लिया। ताकि जब उसका पिता उस पेड़ की तरफ जाये तो वह उसके पीछे पीछे राख बिखेरता जाये।

सो जब उसका पिता अपना थैला लटका कर खाना लेने के लिये चला तो उसके पीछे उसका लालची बेटा भी अपना कैलेबाश वाला थैला ले कर राख बिखेरता हुआ चला।

वह बहुत होशियारी से जा रहा था ताकि उसके पिता को ज़रा सा भी शक न हो जाये कि कोई उसका पीछा कर रहा था।

आखिर कछुआ उस फू फू के पेड़ के पास आ पहुँचा। उसने अपने कैलेबाश उस पेड़ के नीचे रखे और दिन भर के लिये खाना इकट्ठा कर लिया।

उसका बेटा यह सब छिप कर देख रहा था। जब कछुए ने खाना अपना दिन भर का खाना इकट्ठा कर लिया तो वह घर की तरफ चल पड़ा। यह देख कर कछुए का बेटा भी वापस चल दिया। घर आ कर उसने दूसरों की तरह पेट भर कर खाना खाया और सो गया।

अगली सुबह उसने अपने कुछ भाइयों को साथ लिया और जब उसके पिता ने दिन भर का खाना इकट्ठा कर लिया तो वह अपने भाइयों के साथ और अधिक खाना इकट्ठा करने के लिये उस पेड़ की तरफ चल दिया।

वहॉ जा कर उसने जैसे ही खाना इकट्ठा किया उस पेड़ का जू जू टूट गया और उसको दोबारा खाना नहीं मिल सका।

अगले दिन जब कछुआ रोज की तरह उस पेड़ से खाना लेने के लिये गया ता वह पेड़ तो वहॉ था ही नहीं। वह पेड़ तो नजरों से ही गायब हो गया था। वहॉ केवल कॉटे वाले पाम के पेड़ खड़े थे।

कछुआ तुरन्त ही समझ गया कि किसी ने उस पेड़ का जूजू दोबारा खाना इकट्ठा कर के तोड़ दिया था। वह बेचारा दुखी मन से घर वापस आ गया और अपनी पत्नी को बताया कि क्या हुआ था।

फिर उसने अपने परिवार के सब लोगों को इकट्ठा किया और सबसे पूछा कि यह काम किसने किया पर सबने मना कर दिया कि उन्होंने किसी ने ऐसा नहीं किया।

बेचारा कछुआ उन सबको उस फू फू पेड़ के पास ले कर आया जहॉ अब कॉटों वाला पाम का पेड़ खड़ा हुआ था।

उनको वहॉ ला कर वह उन सबसे बोला — "मेरी प्यारी पत्नी और बच्चों, मैंने तुम लोगों के लिये जो कुछ भी कर सकता था किया पर तुम लोगों ने इस पेड़ का जू जू तोड़ दिया इसलिये अब तुम सब लोग इसी कॉटों वाले पाम के पेड़ के नीचे रहो।"

उस दिन से कछुए अब वैसे ही कॉटों वाले पाम के पेड़ों के नीचे रहते पाये जाते हैं क्योंकि उनको कहीं और खाना ही नहीं मिलता।

13 जादू का ढोल[66]

वाद्यों में ढोल की यह लोक कथा भी हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली है और इससे पहले वाली लोक कथा ही जैसी ही है। इसमें भी देखो तो राजा का जादू का ढोल क्या क्या गुल खिलाता है।

बहुत साल पुरानी बात है कि अफ्रीका के नाइजीरिया देश में एक राजा राज करता था जिसका नाम था ओबिओमा[67]। ओबिओमा का मतलब होता है दयालु।

एक बार वह बहुत बीमार पड़ा। और इतना बीमार पड़ा कि लोगों को लगा कि वह मरने वाला था। लोग यह देख कर बहुत दुखी हुए।

पर एक दिन उसको सपने में एक आवाज सुनायी दी — "ओ राजा ओबिओमा, क्योंकि ज़िन्दगी भर तुम सबके लिये बहुत दयालु रहे हो इसलिये मैं तुम्हारी ज़िन्दगी तुमको बख्शता हूँ और तुम्हें एक चीज़ देता हूँ।

[66] The Magic Drum – an Igbo folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Book: "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2001. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

[67] Obioma – the name of the Nigerian King

तुम्हारे अपने कमरे के एक कोने में एक जादू का ढोल रखा है। तुम उससे जो कुछ भी माँगोगे वह तुमको देगा पर तुम उस ढोल को कभी धोना नहीं।"

सुबह को जब राजा उठा तो सीधा अपने कमरे में गया तो देखा तो वाकई उस कमरे के एक कोने में एक छोटा सा ढोल रखा हुआ था। उसने उस ढोल को अपने गले में लटकाया और कमरे से बाहर निकल आया।

उसको वह ढोल बहुत अच्छा लगा। वह ढोल चमड़े का बना हुआ था। उस समय क्योंकि खाने की बहुत कमी थी सो उसने ढोल से खाना माँगा। उसने उसको एक होशियार ढोल बजाने वाले की तरह से बजाया और गाया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

तुरन्त ही उस ढोल से बहुत सारा स्वादिष्ट खाना और शराब प्रगट हो गयी। राजा और उसके आदमियों ने वह खाना खूब पेट भर कर खाया।

एक दिन दूसरे गाँव के लोगों ने राजा ओबिओमा पर हमला कर दिया। उनके सिपाहियों के पास भाले और तीर थे। उनके चेहरे लाल स्याही से रंगे हुए थे और उनकी आँखों के चारों तरफ सफेद चौक से घेरे बने हुए थे।

उनके कमान्डर ने हाथी की शक्ल का चेहरा पहना हुआ था। बाकी सिपाहियों ने शुतुरमुर्ग और सफेद तोते[68] के पंख लगे टोप पहने हुए थे और वे सब लड़ाई के गाने गाते हुए चले आ रहे थे —

उनको हिला दो, दुश्मनों को हिला दो
उनको रौंद दो कुचल दो, दुश्मन को कुचल दो

राजा ओबिओमा ने उनके लड़ाई के गीत सुने तो अपना जादू का ढोल बजा दिया। इससे वह सारी जगह ऐसे बढ़िया बढ़िया स्वादिष्ट खानों से भर गयी जैसे कभी उन दुश्मनों ने देखे भी नहीं थे। उन्होंने अपने भाले और तीर तो फेंक दिये और खाना खाने बैठ गये।

जब उन्होंने खाना खा लिया तो उन्होंने राजा ओबिओमा को उस स्वादिष्ट खाने के लिये धन्यवाद दिया और बिना लड़े ही अपने गॉव वापस चले गये।

हर आदमी और जानवर राजा के इस जादू के ढोल को लेना चाहता था पर राजा इसकी बड़ी सावधानी से रक्षा करता था।

पर कछुआ चुप नहीं बैठा। उसको तो राजा का वह ढोल चाहिये था सो उसने राजा से उस ढोल को लेने की एक तरकीब सोची।

[68] Translated for the word “Cockatoo”

उसको मालूम था कि नदी के किनारे राजा की पत्नी और बेटी अक्सर नहाने और पानी भरने आया करती थीं। सो वह रोज सबेरे सबेरे उस नदी के किनारे वाले पाम के पेड़ पर चढ़ जाता और वहाँ बैठ कर उनके आने का इन्तजार करता।

एक दिन रानी और राजकुमारी नदी पर नहाने आयीं। नहा कर राजकुमारी नदी के किनारे खड़ी ठंडी हवा का आनन्द ले रही थी और कछुआ पाम के पेड़ की चोटी पर बैठा पाम की गिरी[69] तोड़ रहा था। धीरे से उसने पाम की एक गिरी उस लड़की के पैरों के पास गिरा दी।

उस गिरी को देख कर वह लड़की चिल्लायी — "माँ, देखो यह पाम की गिरी जो मैं बहुत दिनों से खाना चाह रही थी आज मेरे पैरों के पास आ गिरी है।

इसको मैं तबसे देख रही हूँ जब मैं नहा रही थी। मुझे लगता है कि मेरी नजरों ने इसको पेड़ से तोड़ कर नीचे गिरा दिया है। मैं इसे खा लूँ?"

माँ बोली — "हाँ हाँ, खा ले पर पहले इसको धो ले। लगता है कि आज तेरी किस्मत अच्छी है इसीलिये कुछ देर पहले तेरे दाहिने हाथ की हथेली भी खुजा रही थी।"

---

[69] Palm Nut – from the palm tree. See their picture above. It is a very popular food item in West African clountries

राजकुमारी बोली — "तब तो मुझे आज कुछ और भी मिलना चाहिये। है न?"

जैसे ही राजकुमारी ने वह पाम की गिरी धो कर खायी कछुआ पाम के पेड़ से नीचे उतर आया और बोला — "कहॉ है मेरी पाम की गिरी? मेरी पाम की गिरी मुझे दो।"

राजकुमारी बोली — "वह तो मेरे पेट में है। और वह तो बहुत ही स्वाद थी।"

कछुआ रोते हुए बोला — "नहीं। तुमने मेरी पाम की गिरी चुरायी है। वह तो मैंने अपने परिवार के खाने के लिये तोड़ी थी। मैं क्या पाम के पेड़ पर तुम्हारे खाने के लिये पाम की गिरी तोड़ने के लिये चढ़ता और अपनी मौत को दावत देता?"

राजकुमारी ने अपनी सफाई दी — "पर मैंने जब यह गिरी उठायी थी तो मुझे यह नहीं पता था कि यह गिरी तुम्हारी है।"

रानी बोली — "ओ अजनबी कछुए, इसमें कोई नुकसान नहीं है। मेरे पति राजा हैं। वह तुमको इस पाम की गिरी के बदले में जो कुछ भी तुम चाहोगे वह तुम्हें दे देंगे। मेरी बेटी को पता नहीं था कि यह पाम की गिरी तुम्हारी है।"

कछुआ बोला — "हॉ यह ठीक है। चलो राजा के पास चलते हैं। मुझे यकीन है कि वह जान जायेगा कि इतने मुश्किल के दिनों में अपने पड़ोसियों की चीज़ें चुराना कितना बड़ा जुर्म है।

और यह कानून तो उसने अपने हाथ से खुद लिखा है। आज उसके अपने परिवार ने इस कानून को तोड़ा है। कोई भी परिवार इस कानून को नहीं तोड़ सकता है। देखते हैं कि यह कानून केवल गरीब लोगों के लिये ही है या फिर देश में सबके लिये है।"

सो वे सब राजा के पास पहुँचे। वहाँ पहुँचने पर कछुए ने राजा को बताया कि राजकुमारी ने उसकी पाम की गिरी चुरा ली है।

दयालु और ईमानदार आदमी होने के नाते राजा यह पक्का कर लेना चाहता था कि कछुए को उसकी मुश्किलों का बदला ठीक से मिलना चाहिये सो उसने कछुए से उसकी पाम की गिरी की कीमत पूछी।

राजा बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि तुमको यह लगा कि राजकुमारी ने तुम्हारी पाम की गिरी चुरायी है। बोलो, मैं तुम्हारे नुकसान का बदला कैसे चुकाऊँ?

तुम्हें जानवर चाहिये, बकरियाँ चाहिये, सोने के सिक्के चाहिये, या खाना चहिये? मैं तुमको उसका सौ गुना वापस कर दूँगा। तुम बस यह बताओ कि तुमको क्या चाहिये।"

कछुआ बोला — "धन्यवाद राजा जी। मुझे केवल आपका जादू का ढोल चाहिये।"

यह सुन कर एक बार तो राजा के दिल की धड़कन रुक सी गयी और उसने कछुए की तरफ बुरी नजर से देखा भी पर क्योंकि वह एक राजा था और इज़्ज़तदार आदमी था और अपने वायदे के

खिलाफ नहीं जा सकता था इसलिये उसने अपना जादू का ढोल उस कछुए को दे दिया।

कछुआ तो उस ढोल को ले कर बहुत खुश हो गया और मन ही मन में हॅसा कि उसकी तरकीब काम कर गयी। उसने वह जादू का ढोल उठाया और घर चला गया।

घर पहुॅच कर उसने अपने परिवार वालों को बुलाया और उनको बताया कि किस तरह से आज उसने राजा को चकमा दे कर उससे उसका यह जादू का ढोल ले लिया।

इसके बाद कछुए ने वह ढोल बजाया और गाया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

और उस ढोल में से बहुत तरह के बहुत सारे स्वादिष्ट खाने निकल पड़े। कछुए का पूरा घर बढ़िया बढ़िया खानों से भर गया। उसके पूरे परिवार ने उस दिन खाना ऐसे खाया जैसे पहले कभी खाया ही न हो। कछुए के परिवार को कछुए पर बहुत घमंड हो आया और वे सब उसकी बहुत तारीफ करने लगे।

इस तरह से उस जादू के ढोल की वजह से कछुए के घर में कई दिनों तक रोज दावत होती रही और वे सब कछुए की रोज ही तारीफ करते रहे।

पर कछुए के लिये यही सब काफी नहीं था। उसको तो यह सब तारीफ और आदर जंगल के सारे जानवरों से भी चाहिये था सो एक दिन उसने जंगल के सारे जानवरों को अपने घर दावत दी।

जंगल के जानवरों को कछुए के ऊपर बिल्कुल भी विश्वास नहीं था इसलिये उस दिन उसके यहॉ बहुत थोड़े से जानवर आये। जब वे सब अपनी अपनी जगह बैठ गये तो कछुआ अपने जादू के ढोल के साथ बाहर आया और सबके बीच में बैठ कर अपना जादुई ढोल बजाना शुरू कर दिया।

सारा मैदान खाने की बहुत अच्छी अच्छी प्लेटों से भर गया। जानवर तो अपनी ऑखों पर और कछुए की दया पर विश्वास ही नहीं कर पाये और खाना खाते रहे। उसकी दया देख कर उनके दिल में भी कछुए के लिये प्यार उमड़ आया।

अब कछुआ अमीर था, दयालु था और जंगल में एक इज़्ज़तदार जानवर था। दूसरे जानवरों ने अब उसको अपने घरों में बुलाना शुरू कर दिया था और वह अब उनमें काफी लोकप्रिय हो गया था।

कई महीनों तक कछुए ने सारे जानवरों को खूब खाना खिलाया और खूब शराब पिलायी। पर काफी दिनों के इस्तेमाल के बाद वह ढोल गन्दा हो गया सो वह उसको नदी पर धोने ले गया। वहॉ उसने उस ढोल को पानी से खूब मल मल कर धोया और घर ले आया।

शाम को जब वे सब खाना खाने बैठे तो उसने वह ढोल बजाना शुरू किया –

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

असल में जैसे ही कछुए ने वह ढोल धोया था उसका जादू टूट गया था सो बजाय खाने के उस ढोल में से गुस्से में भरे लड़ने वालों का एक झुंड निकल पड़ा। उन सभी ने अपनी लड़ने वाली पोशाक पहन रखी थी।

उन सभी के हाथों में बजाय तलवारों और तीर कमानों के गाय की पूँछ का एक एक कोड़ा था जो जब वे उसे मारने के लिये हवा में फटकारते थे तो वह बहुत ही डरावना शोर करता था।

बस निकलते ही उन्होंने सबको मारना शुरू कर दिया। उनकी मार इतनी ज़ोर की थी कि कुछ लोगों की पीठ से तो खून भी बहने लगा।

जब कछुए के परिवार वालों ने हिलना भी बन्द कर दिया तो वे समझे कि वे मर गये और वे सब उस जादू के ढोल में जा कर गायब हो गये।

अगले दिन सुबह जा कर कछुए के परिवार को कहीं होश आया और उनके घाव आदि ठीक होने में तो कई हफ्ते लग गये।

उसकी पत्नी ने गर्म पानी कर कर के सबके घाव धोये और घर की बनी दवा लगायी तब कहीं जा कर वे सब ठीक हुए।

कछुआ बोला — "पता नहीं उस ढोल में क्या गड़बड़ हुई।" एक बार फिर से पक्का करने के लिये कछुए ने उसे फिर से सावधानी से बजाया पर मगर फिर वही हुआ। वे लड़ने वाले फिर उसमें से निकल आये और उन सबको बड़ी बेरहमी से पीटा।

अब उसको विश्वास हो गया था कि इस जादू के ढोल की जादुई ताकत खत्म हो चुकी थी सो उसके नीच दिमाग ने फिर एक चाल खेली कि इस जादू के ढोल से केवल उसका परिवार ही क्यों पिटे।

"अगर जंगल के सारे जानवरों ने इसका आनन्द लूटा है तो वे इसकी मार भी सहें।" सो कछुए ने एक बार फिर से जंगल के जानवरों को दावत के लिये बुलाया।

अब तक क्योंकि कछुए ने अपनी साख जानवरों में खूब जमा ली थी। इसके अलावा उसकी पहली दावत बहुत अच्छी रही थी तो इस बार जानवरों को बुलाने में उसको कोई तकलीफ नहीं हुई।

बल्कि पिछली बार जो जानवर नहीं आ पाये थे पिछली दावत की तारीफ सुन कर इस बार वे भी आ गये।

कुछ जानवरों ने तो कछुए की दावत खाने के लिये अपना नाश्ता भी नही खाया ताकि वे वहॉ अच्छी तरह से खा सकें। इस तरह वहॉ बहुत सारे जानवर आ गये।

कछुए ने अपने परिवार को उनकी सुरक्षा के लिये दूसरी जगह भेज दिया और एक जंगली चूहे को बुला कर उससे अपने लिये अपने घर से ले कर बाजार के मैदान तक एक बड़ी सी सुरंग खुदवा ली।

फिर वह अपना ढोल ले कर बाजार के मैदान के बीच में बैठ गया और जानवर उसके चारों तरफ बैठ गये।

कछुए ने बन्दर से कहा — "मैं तुमको अपना ढोल पीटने के लिये देता हूँ। मैंने तो खाना खा लिया है। तुम लोगों का जब खाना हो जाये तो मुझे मेरा ढोल वापस कर देना।" इतना कह कर कछुआ उस सुरंग में गायब हो गया।

बन्दर तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उसने कछुए से वह ढोल ले लिया और उसको बजाना शुरू किया —

पाम पुटु, पाम पुटु, ओ मेरे जादू के ढोल
पाम पुटु, पाम पुटु, मुझे खाना दे, पानी दे, जो स्वादिष्ट हो

ढोल का बजना था कि उसमें से बहुत सारे गुस्से में भरे लड़ने वाले निकल पड़े और वहाँ बैठे जानवरों को मारने लगे। दावत का आनन्द लेने की बजाय सारे जानवर चीखने चिल्लाने लगे।

बाजार का मैदान लड़ाई का मैदान बन गया। सारे मैदान में सारे जानवर वहाँ से भागने के चक्कर में एक दूसरे के ऊपर गिरने पड़ने लगे।

कुछ जानवर बहुत भूखे थे और वे भागने के लिये बहुत थके हुए भी थे। जब कि हाथी जैसे बड़े जानवर दूसरे छोटे जानवरों को रौंद कर जा रहे थे, जैसे कि खरगोश। कुछ उन लड़ने वालों की मार से मर गये। जो भाग सकते थे वे कछुए को बुरा भला कहते हुए भाग गये।

जब उन लड़ने वालों ने देखा कि सारे जानवर मर गये तो वे भी ढोल में जा कर गायब हो गये।

जब सब कुछ शान्त हो गया तब कछुआ अपनी छिपी हुई जगह से निकल आया। उसने मरे हुए जानवरों को उठाया और अपने घर ले गया। उसने और उसके परिवार वालों ने उस दिन बहुत अच्छी तरह से खाना खाया।

अब उसे पूरा विश्वास हो गया था कि अब उस ढोल का काम खत्म हो गया था। कछुए ने निश्चय किया कि वह इस ढोल को अब राजा को वापस कर देगा।

इस बीच जादू के ढोल और उसमें से निकले लड़ने वालों की कहानियॉ चारों तरफ फैल चुकी थीं सो राजा भी अब कछुए के किसी भी दिन आने की उम्मीद कर रहा था।

राजा सोने के लिये लेटा हुआ था और कछुए के आ कर ढोल लौटाने के इन्तजार में था। वह सोच रहा था कि वह उस ढोल का अब क्या करेगा। तभी वही आवाज फिर आयी और बोली —

"उसका जादू फिर से लाने के लिये तुम उसका जादू का गाना उलटा गाना।"

जैसा कि राजा ने सोचा था वैसा ही हुआ। सुबह सवेरे ही कछुआ राजा का ढोल ले कर राजा के महल में आ गया।

कछुआ बोला — "ओ राजा, यह रहा आपका ढोल। मैं बहुत ही न्यायप्रिय जीव हूँ। मैंने सोचा कि मुझको यह ढोल हमेशा के लिये अपने पास नहीं रखना चाहिये क्योंकि इसकी जगह तो राजा के पास ही है। इसी लिये मैं इसे आपको वापस करने आया हूँ।"

राजा बोला — "ठीक है। तुम बहुत ही न्यायप्रिय जीव लगते हो। धन्यवाद। जाने से पहले खाना तो खाते जाओ।" कह कर उसने अपने हाथ ऊपर उठाये जैसे वह उस ढोल को बजाने के लिये उठा रहा हो।

यह देख कर पहले तो कछुआ डर के मारे अपने खोल में छिप गया पर जब उसने ढोल बजाने की कोई आवाज नहीं सुनी तो फिर उसने धीरे धीरे अपना सिर बाहर निकाला और अपने घर चला गया।

राजा अपने कमरे में गया। वहाँ उसने उसे बहुत धीरे से बजाया और उस जादू के गीत को उलटा गया।

पुटु पाम, पुटु पाम, ढोल जादू के ओ मेरे
पुटु पाम, पुटु पाम, जो स्वादिष्ट हो पानी दे, खाना दे मुझे

उस दिन के बाद से उस ढोल में से राजा और उसके आदमियों के लिये फिर से बहुत सारा खाना निकलने लगा। राजा ओबिओमा लोगों पर फिर से और ज़्यादा अच्छी तरह से राज करने लगा।

उसकी दया के चर्चे दूर पास सब जगह फैलने लगे। उसके दुश्मन अब उससे लड़ना नहीं चाहते थे और सब खुशी खुशी रहने लगे।

14 कछुआ और ढोल[70]

ढोल की यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के देशों में कही सुनी जाती है।

एक दिन एक कछुआ जंगल के रास्ते पर चला जा रहा था कि रास्ते में उसे एक पाम का पेड़[71] दिखायी दिया जिस पर बहुत सारे पाम के फल लगे हुए थे।

कछुए को भूख लगी थी और पाम के फल रसीले और मीठे दिखायी दे रहे थे जो खाने के लिये तैयार थे।

पाम का पेड़ बहुत ऊँचा था और वह उस पेड़ पर चढ़ नहीं सकता था। पर उन फलों को देख कर उसने सोचा कि काश वह उनमें से एक फल भी ले सकता।

फिर उसको एक तरकीब सूझी। उसने एक लम्बा सा डंडा उठाया और उन पाम के फलों में मारा तो कुछ पाम के फल नीचे गिर गये। पर बदकिस्मती से उसके उन फलों को उठाने से पहले ही वे पास के एक छेद में लुढ़क गये।

---

[70] The Tortoise and the Drum – a folktale from West Africa. Adapted from the Web Site: http://allfolktales.com/folktales.php

[71] Palm tree and its fruits. See their picture above.

यह देख कर उसने कुछ और फलों को गिराने के लिये उनमें डंडा मारा। कुछ फल फिर गिर गये पर उनका भी वही हाल हुआ जो पहले वाले फलों का हुआ था। वे भी उसी छेद में लुढ़क गये।

यह देख कर कछुए ने सोचा कि यह देखने के लिये कि वे जाते कहाँ हैं वह उन फलों का पीछा करेगा सो वह उन फलों के पीछे पीछे उस छेद में उतर गया। पर उसको वहाँ कोई फल दिखायी नहीं दिया। वे पता नहीं कहाँ चले गये थे।

पर क्योंकि उसको मालूम था कि वे फल उसी छेद में गये हैं सो उसने उन फलों का और ज़्यादा आगे तक पीछा करने का फैसला किया और वह और आगे और और आगे ही बढ़ता गया।

वह घन्टों तक चलता रहा और आखिर में उस छेद से बाहर आ गया। बाहर आ कर उसने देखा कि वह तो एक बाजार में खड़ा था। वह आत्माओं की दुनियाँ में आ गया था और वह उन्हीं का बाजार था।

कछुए ने इधर उधर देखा तो एक आत्मा वैसा ही पाम का फल खा रही थी जैसा कि उसने तोड़ा था और जिसका पीछा करते करते वह यहाँ तक आ गया था।

उसको देख कर वह तुरन्त चिल्ला पड़ा — "अरे यह तो मेरा पाम का फल है। मेरा पाम का फल वापस दो।"

उस आत्मा ने उससे यह कहते हुए माफी मॉगी कि वह नहीं जानती थी कि वे पाम के फल उस कछुए के थे और उन पाम के फलों के बदले में उसने उसे एक खास ढोल देने का वायदा किया।

वह आत्मा उसको एक बड़े से मकान में ले गयी जहॉ दीवार के साथ साथ बहुत सारे ढोल कई लाइनों में लगे रखे थे। उसने कछुए से कहा कि वह उनमें से कोई सा एक ढोल ले ले।

कछुए ने उनमें से एक छोटा सा ढोल ले लिया जिसे वह आसानी से ले जा सकता था क्योंकि उसको बहुत दूर जाना था।

जब वह अपने घर लौटने लगा तो रास्ते में एक पेड़ के नीचे आराम करने के लिये रुका। वह जब वहॉ आराम कर रहा था तो उसने अपना वह ढोल उठा लिया और उसको डंडियों से बजाना शुरू कर दिया।

उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब ढोल के बजते ही उसके सामने बहुत अच्छे अच्छे खाने आ कर सज गये। उसके सामने वे सब खाने थे जो उसको अच्छे लगते थे। उसने खूब पेट भर कर खाना खाया।

खा पी कर उसको नींद आने लगी और वह वहीं सो गया। अब वह और आगे नहीं जा सकता था। वह सोता रहा और सोता रहा और सुबह तक सोता रहा। सुबह उठ कर उसने अपना ढोल उठाया और अपने घर चला गया।

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने अपने गॉव के सब जानवरों को अपने घर बुलाया। जब सारे जानवर उसके घर में इकट्ठा हो गये तो उसने अपना ढोल पीटना शुरू कर दिया। बस तुरन्त ही स्वाददार खानों से भरे बहुत सारे बर्तन वहॉ आ गये।

उस स्वाददार खाने को देख कर सारे जानवर बहुत खुश हुए। सबने वहॉ तब तक खूब पेट भर कर खाना खाया जब तक वे सब खाते खाते थक नहीं गये।

अगले दिन वे सारे जानवर फिर से कछुए के घर आ गये। कछुए ने फिर अपना ढोल पीटा और फिर से बहुत सारा बढ़िया बढ़िया खाना सबके लिये आ गया। सबने फिर खूब पेट भर कर खाना खाया।

कछुए ने यह सब काफी दिनों तक किया और दूसरे जानवरों ने भी काफी दिनों तक उसके घर बढ़िया खाना खाया।

इसके बाद कछुआ ढोल पीटते पीटते थक गया तो उसने हाथी को अपना ढोल पीटने वाला बना दिया। पर जब हाथी जितने बड़े जानवर ने वह ढोल पीटना शुरू किया तो वह छोटा सा ढोल टूट गया और अब वहॉ कोई दावत नहीं हो पा रही थी।

कछुए ने फिर से उस आत्मा के पास जाने का निश्चय किया ताकि वह वहॉ से एक नया ढोल ला सके। और वह अपनी यात्रा पर चल दिया।

अपनी खुशकिस्मती से उसको वह जगह अभी भी याद थी जहॉ वह पाम का पेड़ खड़ा था। वह वहीं पहुँच गया और वहॉ जा कर उसने फिर वही किया जो उसने पहले किया था।

उसने एक लम्बा सा डंडा उठाया और उससे पाम के फल तोड़ने की कोशिश की। पाम के फल तो उस डंडे से टूटे और नीचे जमीन पर बिखर भी गये पर इस बार वे पिछली बार की तरह से अपने आप उस छेद में नहीं गये।

सो कछुए ने वे सारे फल उठाये और अपने आप ही उन सारे फलों को उसी छेद में डाल दिया। फिर वह उनके पीछे पीछे चल दिया। काफी देर चलने के बाद वह वहीं निकल आया जहॉ वह पहले निकला था।

इत्तफाक से उसको वहॉ फिर वही आत्मा मिल गयी जिसने पहले उसको वह ढोल दिया था। उसके हाथ में पाम के फल देख कर वह उस आत्मा के ऊपर चिल्लाया — "अरे तुम फिर से? तुमने मेरे पाम के फल फिर से खा लिये? तुमको मेरे वे फल वापस देने पड़ेंगे।"

आत्मा ने पाम के वे सारे फल उसको वापस करते हुए कहा — "लो ये रहे तुम्हारे पाम के फल। मैंने तुम्हारे पाम का एक भी फल नहीं खाया है। मैं तो अभी अभी आयी हूँ और मैंने तो इनको अभी अभी नीचे से उठाया है।"

पर कछुए ने कहा — "तुम झूठ बोल रही हो तुमने मेरे कुछ पाम के फल जरूर खाये हैं।" और उसने उससे अपने पाम के उन खाये हुए फलों के बदले में कुछ माँगा। उस आत्मा ने फिर उसको एक ढोल देने का वायदा किया।

वह उसको फिर उसी मकान में ले गयी जहाँ वह उसको पहले ले गयी थी और उसको वहाँ से कोई सा एक ढोल लेने के लिये कहा।

इस बार कछुए ने एक काफी बड़ा वाला ढोल चुना क्योंकि वह चाहता था कि हाथी उस ढोल को पीट सके और उसने यह भी सोचा कि शायद जितना बड़ा ढोल होगा वह उतना ही ज़्यादा वह उसको खाना भी देगा।

उस ढोल को उस छेद से ऊपर लाते लाते भी कछुए को कई दिन लग गये। उसको खींचते खींचते वह बहुत थक गया था सो वह सुस्ताने के लिये एक साफ सुथरी जगह बैठ गया।

उसको अब भूख भी लग आयी थी सो उसने अपना नया ढोल पीटना शुरू किया। पर यह क्या? उसमें से तो खाने की बजाय बहुत सारे कोड़े निकल पड़े।

उनको देख कर तो कछुआ डर गया और अपने घर की तरफ भाग लिया पर कोड़ों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। उन्होंने उसका उसके घर तक पीछा किया।

बड़ी मुश्किल से अपने घर का दरवाजा बन्द कर के उसने उन कोड़ों से अपने आपको बचाया।

15 गाता हुआ ढोल[72]

यह लोक कथा एक ढोल की लोक कथा है और अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में अटीलोला[73] नाम का एक लड़का रहता था। उसके माता पिता उसे बहुत प्यार करते थे क्योंकि वह अपने माता पिता का अकेला बच्चा था। वह हमेशा यही खयाल रखते थे कि उसको किसी बात की कोई कमी न महसूस हो।

वे उसको एक बहुत ही कोमल अंडे की तरह से रखते थे और किसी को भी उसको डॉटने नहीं देते थे चाहे उसने किसी के साथ कितना भी बुरा व्यवहार क्यों न किया हो।

इसी वजह से अटीलोला बहुत ही मतलबी और एक बिगड़ा हुआ बच्चा हो गया था। वह किसी का कहना भी नहीं मानता था।

एक बार की बात है कि बारिश के दिनों में जब अटीलोला दस साल का था उसने अपनी मॉ से कहा कि वह अपने दोस्तों के साथ बाहर खेलने जा रहा है।

---

[72] The Singing Drum – a folktale from Nigeria, Africa.
Taken from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/357/preview

[73] Atilola – name of the boy

मॉ ने उसे सावधान किया — "यहॉ पास में ही खेलना। घाटी में नहीं घूमना। आसमान में बादल घुमड़ रहे हैं बारिश आने वाली है।"

पर हर बार की तरह से अटीलोला ने मॉ की बात को अनसुना कर दिया और अपने दोस्तों के पास चला गया।

जब अटीलोला को गॉव के किनारे पर उसके दोस्त मिल गये तो उसने उनसे कहा — "चलो ओयिन घाटी[74] चल कर शहद की मक्खी के छत्ते से शहद ढूँढते हैं।"

सब लड़के तैयार हो गये और वे सब चार मील के सफर पर शहद ढूँढने ओयिन घाटी चल दिये। जब वे ओयिन घाटी के पास पहुँचे तो उन्होंने देखा कि आसमान के बादल तो काले हो गये हैं। तभी पहली बिजली की कड़क हुई तो अटीलोला के दोस्त तो घबरा गये।

उनमें से एक लड़का आगे बढ़ा और बोला — "इससे पहले कि बारिश शुरू हो हमको घर पहुँच जाना चाहिये।"

यह ठीक सलाह थी सो बाकी सारे बच्चे घर लौटने के लिये तैयार हो गये। पर अटीलोला चिल्लाया — "पर मैं नहीं जाऊँगा। मैं तो यहॉ शहद ढूँढने आया हूँ और मैं यह जगह छोड़ कर नहीं जाऊँगा जब तक मुझे थोड़ा सा शहद नहीं मिल जायेगा।"

[74] Oyin Valley

एक लड़के ने पूछा — "पर तुम इस बारिश में शहद पाओगे कैसे?"

अटीलोला बोला — "अगर मुझे बारिश में शहद नहीं मिला तो मैं यहाँ तब तक रुकूँगा जब तक बारिश रुकती है।"

और जैसे ही वह यह कह कर चुका तो बारिश की छोटी छोटी बूँदें पड़नी शुरू हो गयीं और उसकी नंगी पीठ को गुदगुदाने लगीं।

वारिश देख कर दूसरे लड़के अटीलोला को वहीं शहद ढूँढने के लिये छोड़ कर वहाँ से घर की तरफ भाग लिये। जल्दी ही वे छोटी छोटी बूँदें बड़ी बड़ी हो गयीं और जमीन पर पानी के छोटे छोटे तालाब बनाने लगीं।

अटीलोला ने उनके अन्दर कूदना शुरू कर दिया। वह उनमें कभी छपाके मारता कभी नाचता और कभी अपने हाथ हिलाता।

कुछ किसान अपने खेतों से घर लौट रहे थे उन्होंने अटीलोला को पानी के उन छोटे छोटे तालाबों में नाचते देखा तो उससे घर जाने के लिये कहा। पर वह बिगड़ा हुआ वच्चा तो किसी की सुनता ही नहीं था।

उनकी बात सुन कर उनको चिढ़ाने के मूड में उसने अपनी नाक सिकोड़ी और जीभ बाहर निकाल दी। उसने उन छोटे छोटे तालाबों में अपना नाचना जारी रखा। उधर बारिश भी तेज़ होती गयी होती गयी।

बहुत जल्दी ही बादलों ने अपना पानी नीचे जमीन पर खाली कर दिया और सारे गॉव में पानी ही पानी भर गया। अटीलोला को कहीं छिपने की भी जगह नहीं मिली। उसने चारों तरफ देखा तो उसको ओडन[75] का एक पेड़ दिखायी दे गया। वह उसी की तरफ चल दिया।

पर जैसे ही वह उस पेड़ पर चढ़ने वाला था कि वह फिसल गया और नीचे पानी में गिर गया। बाढ़ उसे बहा कर ले चली।

अब वह घाटी में नीचे की तरफ बड़ी नदी की तरफ बहने लगा था। वह डर के मारे अपनी जान बचाने के लिये चीखने चिल्लाने लगा। पर वहॉ उस डरे हुए लड़के की चीख चिल्लाहट कौन सुनने वाला था।

उसने किसी चीज़ को पकड़ने के लिये अपने हाथ बढ़ाये ताकि वह उसके सहारे तैर सके – कोई भी चीज़ कोई डंडी कोई लट्ठा लकड़ी का कोई खम्भा। पर कोई फायदा नहीं। उसे वहॉ कोई चीज़ दिखायी नहीं दी। और वह बहुत तेज़ बहा चला जा रहा था।

तभी उसको थोड़ी दूर पर एक घर दिखायी दिया तो उसने अपनी सबसे ऊॅची आवाज में चिल्लाने का निश्चय किया। सो वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया — "बचाओ बचाओ। मुझे बचाओ।"

[75] Odan tree

अब उस मकान में इजापा कछुआ रहता था। उसने यह आवाज सुनी तो यह देखने के लिये अपने घर की खिड़की खोली कि यह आवाज कहॉ से आ रही थी।

उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने इतनी भारी बारिश में एक लड़के को तैरने की नाकाम कोशिश करते देखा। वह तुरन्त ही अपने घर से उस बच्चे को बचाने के लिये निकल पड़ा।

उसने अपने शैड से एक लम्बा सा खम्भा लिया और उसको लड़के की तरफ बढ़ा दिया। इजापा चिल्लाया — "जल्दी पकड़ लो इसको जल्दी पकड़ लो।"

अटीलोला ने अपने दोनों हाथ बढ़ा कर उस लट्ठे को पकड़ लिया और इजापा ने उस लट्ठे को अपनी तरफ खींच लिया।

जैसे ही लड़का पानी से बाहर निकला तो इजापा उसको अपने घर के अन्दर ले आया। वहॉ उसने लड़के को गर्म रखने के लिये आग जलायी और उसको सूप पीने के लिये दिया।

पर इजापा स्वभाव से दानवीर नहीं था वह इस सारे समय यही सोचता रहा कि वह अपनी इस सहायता के बदले में उससे क्या ले सकता है।

इस सवाल का जवाब उसे जल्दी ही मिल गया। जैसे ही अटीलोला ने अपने सूप का कटोरा खाली किया तो वह वहीं कमरे में एक कोने में पड़ी एक चटाई पर लेट गया।

इससे पहले कि अटीलोला सोता अटीलोला ने अपनी सबसे मीठी आवाज में एक गीत गाना शुरू किया। यह एक लोरी थी जो जब वह बहुत छोटा था तब उसकी मॉ उसको सुलाने के लिये गाया करती थी।

इजापा तो यह गीत सुन कर खो सा गया। वह उस गीत पर झूमने लगा। जब वह उस गीत पर झूम रहा तो उसके दिमाग में चालाकी का एक प्लान आया और उसने सोच लिया कि वह अपने मेहमान से कैसे फायदा उठा सकता था।

इजापा ने तब तक इन्तजार किया जब तक वह लड़का गहरी नींद सो नहीं गया। जब वह लड़का गहरी नींद सो गया तो कछुआ अपने घर के पीछे की तरफ गया और लकड़ी का एक बड़ा सा ढोल बनाने लगा।

सारी रात वह उस ढोल पर काम करता रहा जब तक कि उसका ढोल बन कर पूरा हुआ। जब सुबह को अटीलोला जागा तो इजापा ने अटीलोला से उस ढोल में बैठ जाने के लिये कहा।

अटीलोला ने पूछा — "पर तुम मुझसे इस ढोल में बैठने के लिये क्यों कह रहे हो?"

चालाक कछुआ भोलेपन से मुस्कुराया और बोला — "मैं केवल ढोल की आवाज देखना चाह रहा था कि वह कैसा बजता है। मैंने बाढ़ से तुम्हारी जान बचायी है तो उसके बदले में मैं तुमसे यह कोई बहुत बड़ा काम करने के लिये तो नहीं कह रहा हूॅ।"

अटीलोला को मानना पड़ा कि वाकई उसने बाढ़ से उसकी जान बचा कर उसके ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है। सो वह उस ढोल में चढ़ गया और कछुए ने उसका मुँह एक खाल से ढक दिया।

एक बार जब अटीलोला ढोल के अन्दर घुस गया और ठीक से छिप गया इजापा ने उसको वही गीत फिर से गाने के लिये कहा। उसने उसको यह भी बताया कि जब वह डंडी उस ढोल में मारे तब वह वह गीत गाये।

उधर अटीलोला के माता पिता उसका बड़ी चिन्ता से घर लौटने का इन्तजार कर रहे थे। लड़का रात भर बाहर रहा था। उसकी माँ तो बिल्कुल आपे से बाहर थी बहुत चिन्तित थी।

जब बाढ़ का पानी उतर गया माता पिता दोनों ही अपने बेटे की खोज में घाटी में गये पर वहाँ वह उनको कहीं नहीं मिला। आखिर वे राजा के महल राजा को यह बताने गये कि अटीलोला खो गया था। वह कहीं नहीं मिल रहा था।

जब राजा ने यह दुखभरी खबर सुनी कि अटीलोला खो गया है तो उसने अपने नौकरों को अपने सारे गाँव में और आस पास के गाँवों मे उनको उसे ढूँढने भेजा। वे भी उस लड़के को कहीं नहीं पा सके तो उसको ढूँढना छोड़ दिया गया।

इजापा इस हलचल के बारे में बिल्कुल अनजान था। वह गाँव के बाजार की जगह खड़ा खड़ा आते जाते लोगों से चिल्ला चिल्ला

कर बड़ी शान से कह रहा था — "लोगों आओ और मेरा गाता हुआ ढोल सुनो। यह मेरी सबसे अनोखी चीज़ है जो तुम लोगों ने पहले कभी सुनी होगी।"

उसकी यह बात सुन कर बहुत सारे लोग उस अजीब ढोल को देखने के लिये वहॉ इकट्ठे हो गये। इजापा जब भी अपने ढोल पर एक डंडी मारता उसके अन्दर बैठा अटीलोला उसमें से गाना गाता।

जिसने भी उसका गाना सुना वही उसकी आवाज सुन कर उस पर मोहित हो गया। कुछ तो इतने खुश हुए कि उन्होंने अपने अपने सिर की टोपियॉ उस ढोल के ऊपर उछाल कर फेंकनी शुरू कर दीं और नाचते रहे जब तक वे नाचते नाचते थक नहीं गये।

कोई भी यह नहीं सोच सका कि ऐसा कैसे हो सकता था। कोई भी उसमें कोई बच्चा या आदमी नहीं सोच सका। सबको बस ऐसा लगा कि वह एक जादू का ढोल है। उन्होंने ऐसा तमाशा दिखाने के लिये उस चालाक कछुए को बहुत सारे पैसे भी दिये।

बहुत जल्दी ही सारे पड़ोस में यह बात फैल गयी कि इजापा कछुए के पास एक गाता हुआ ढोल है सो हर आदमी इजापा के पास उसका गाता हुआ ढोल देखने के लिये आने लगा।

अगले दिन इजापा को राजा ने अपने महल में बुलाया क्योंकि राजा भी ऐसे ढोल को देखने के लिये बहुत उत्सुक था।

इजापा जब महल पहुँचा तो उसने देखा कि वहॉ तो बड़ी भीड़ जमा थी। यह देख कर वह बहुत खुश हुआ। राजा ने यह तमाशा

देखने के लिये सारे गॉव को वहॉ इकट्ठा कर रखा था। वहॉ कोई जगह ऐसी नहीं थी जहॉ कोई आदमी बैठ सके।

चालाक कछुए ने वहॉ पहुँच कर भीड़ का विश्वास जीत लिया और इस बात पर ज़ोर दिया कि ढोल बजाने से पहले ही उसको सोने में पैसा दिया जाये।

राजा ने ऐसा पहले कभी कुछ सुना नहीं था पर क्योंकि वह गाता हुआ ढोल सुनने के लिये बहुत उत्सुक था इसलिये उसने सोने से भरा एक थैला कछुए को उसके ढोल बजाने से पहले ही दे दिया और कछुए को हुक्म दिया कि अब वह अपना ढोल बजाये।

इजापा ने खुश हो कर ढोल पर एक डंडी मारी और अटीलोला ने अपनी मीठी आवाज में गाया। उस मीठे गीत को सुन कर राजा सरदार और वहॉ बैठे हुए दूसरे सभी लोग उस गीत पर नाचने के लिये उठ खड़े हुए।

इतने सब आनन्द और नाच में भी राजा अटीलोला की मॉ को नहीं भूल सका था कि उसका बेटा खो गया था। अटीलोला की मॉ भी वहॉ आयी हुई थी। वह वहीं एक कोने में बैठी थी और बराबर रोये जा रही थी। उसका पति भी उसको बराबर तसल्ली देने में लगा हुआ था पर वह चुप ही नहीं हो पा रही थी।

कुछ सोच कर राजा ने यह तमाशा रुकवा दिया और हुक्म दिया कि अटीलोला को माता पिता को उसके सामने लाया जाये। वहॉ पर यह बहुत बुरा समझा जाता था कि राजा के सामने कोई रोये।

अटीलोला की मॉ ने राजा के सामने सिर झुकाया और कहा कि इजापा का ढोल कोई जादुई ढोल नहीं था। उसको यकीन था कि उस ढोल के अन्दर उसका बेटा था जो यह गा रहा था।

उसने आगे कहा कि कोई भी मॉ यह सहन नहीं कर सकती थी कि उसके बेटे को इस तरीके से बन्दी बनाया जाये।

राजा ने अपने चौकीदारों को हुक्म दिया कि इजापा के ढोल की खाल फाड़ दी जाये ताकि वे सब यह देख सकें कि ढोल के अन्दर क्या था।

जब ढोल की खाल फाड़ी गयी तो उसमें से अटीलोला धीरे से बाहर निकला। उसकी ऑखें सूरज की तेज़ रोशनी में ठीक से देख न पाने की वजह से मिचमिचा रही थीं पर आखिर में वह ढोल में से बाहर निकलने के लिये कृतज्ञ था।

जब लड़के ने अपने माता पिता को देखा तो उनको गले से लगाने के लिये दौड़ पड़ा। दोनों की ऑखों में खुशी के ऑसू थे।

सारे महल में हलचल मच गयी क्योंकि बहुत सारे लोगों को यह देख कर धक्का लगा कि इजापा ने उनको इस तरह से धोखा दिया।

राजा ने अपने चौकीदारों को हुक्म दिया कि वे इजापा को पकड़ जेल में बन्द कर दें। पर इजापा तो बहुत चालाक था। उसने राजा को बताया कि अगर उसने लड़के को न बचाया होता तो वह तो बेचारा बाढ़ से मर ही जाता।

यह सुन कर राजा तो सोच में पड़ गया। उसने बहुत सोचने के बाद इजापा को आजाद कर दिया। पर अक्लमन्द राजा ने इजापा को यह भी चेतावनी दी कि आगे वह ऐसी कोई चाल न खेले और उससे अपना दिया हुआ सोने का थैला भी उसने वापस ले लिया।

जहॉ तक अटीलोला का सवाल था उसने तय किया कि बजाय बिगड़े हुए बच्चे की तरह से बर्ताव करने के माता पिता की बात मानने में ही फायदा था। इस सीख को सीख लेने से वह एक बहुत ही अक्लमन्द और होशियार आदमी के रूप में बड़ा हुआ।

16 ढोल बजाने वाला और मगर[76]

ढोल वाद्य की एक और लोक कथा। यह लोक कथा भी अफ्रीका के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक औरत ऐफियोंग ऐनी कैलेबार के दक्षिण में ऐनसैडुन्ग शहर[77] में रहती थी। उसकी शादी हैनशन शहर के सरदार ऐटिम एकेंग[78] से हुई थी। वे लोग बहुत दिनों तक एक साथ रहे पर उनके कोई बच्चा नहीं था।

सरदार बच्चे के लिये बहुत इच्छुक था कि किसी तरह उसके जीते जी उसके एक बच्चा हो जाये। उसने अपने जू जू[79] को भी बलि दी पर उससे भी उसको कोई फायदा नहीं हुआ।

सो वह एक जादूगर के पास गया और अपनी बात बतायी तो वह बोला कि वह सरदार क्योंकि बहुत अमीर था इसलिये उसके कोई बच्चा नहीं हुआ था। अगर उसे बच्चा चाहिये तो उसे अपना कुछ पैसा खर्च करना पड़ेगा।

उसने सरदार को सलाह दी कि वह अपने कई दोस्त बनाये और उनको दावत दे ताकि उसका कुछ पैसा निकले और वह गरीब हो जाये।

---

[76] The Story of the Drummer and the Alligators – a folktales of Southern Nigeria, Nigeria, Africa

[77] Affiong Any lived in Ensedung town in the South of Calabar (a state of Nigeria)

[78] She was married to Etim Ekeng, the Chief of Hanshan town.

[79] Deities of magic

सरदार ने यह सब जा कर अपनी पत्नी को बताया तो उसने अगले ही दिन अपनी साथिनों को बुलाया और खूब बढ़िया दावत दी। इस दावत में उसका बहुत सारा पैसा लग गया। बहुत सारा खाना बना और खाया गया और बहुत सारी टोम्बो[80] पी गयी।

उसके बाद फिर सरदार ने दावत दी। उसमें भी बहुत सारा पैसा बर्बाद किया गया। सरदार ने ईबो घर[81] में भी बहुत सारा पैसा खर्च किया।

जब करीब करीब उनका आधे से ज्यादा पैसा खर्च हो गया तो सरदार की पत्नी ने सरदार को बताया कि अब उसको बच्चे की आशा हो गयी है। सरदार ने यह सुन कर अगले दिन फिर एक बहुत बड़ी दावत दी।

उन दिनों सब बड़े बड़े सरदार किसी न किसी मगर के समूह के होते थे और आपस में पानी में मिला करते थे।

उनके मगरों के समूह से जुड़े होने की भी एक वजह थी और वह वजह यह थी कि एक तो वे जब व्यापार करने जाते थे तो वे मगर उनकी नावों की रक्षा करते थे।

दूसरे जो मगरों के समूह के नहीं होते थे वे उनकी नावों को और उनकी सम्पत्ति को नष्ट कर देते थे। वे उनका सारा पैसा और सामान ले लेते थे और उनके नौकरों को मार देते थे।

[80] Tombo is a kind of liquor

[81] Egbo House

सरदार ऐटिम ऐकेंग एक बहुत ही दयालु आदमी था इसलिये बहुत बार कहने पर भी वह किसी मगर के समूह में नहीं मिला था।

कुछ समय बाद उसके एक लड़का हुआ। उसने उसका नाम ऐडेट ऐटिम[82] रखा। उसने ईबो लोगों को बुलाया तो शहर के सारे घरों के दरवाजे बन्द कर दिये गये। जब ईबो लोग शहर में होते थे कोई भी स्त्री अपने घर से बाहर नहीं निकल सकती थी। ईबो लोग शहर में कई दिन रहे और इसमें भी सरदार का बहुत पैसा खर्च हो गया।

इसके बाद उसने तय किया कि जब उसका बेटा बड़ा हो जायेगा तो वह अपनी आधी सम्पत्ति अपने बेटे को दे देगा और बाकी बची आधी सम्पत्ति बॉट देगा। पर बदकिस्मती से वह तीन महीने बाद ही मर गया और अपनी दुखी पत्नी को अपने बेटे की देखभाल के लिये अकेला छोड़ गया।

सरदार की पत्नी ने सरदार के मरने का दुख सात साल तक मनाया और उसके बाद वह अपने पति की सारे सम्पत्ति की मालिक हो गयी क्योंकि सरदार के कोई भाई नहीं था।

जब तक उसका बेटा बड़ा नहीं हो गया उसने अपने बेटे की बहुत अच्छी तरह से देखभाल की। जब वह बड़ा हो गया तो वह एक बहुत ही सुन्दर और ताकतवर नौजवान हो गया। वह ढोल भी बहुत अच्छा बजाता था।

[82] Edet Etim – name of the Chief's son

शहर की सारी लड़कियॉ उसको बहुत चाहतीं थीं पर उसकी मॉ ने उसको किसी भी लड़की के साथ जाने से मना कर रखा था क्योंकि उसको डर था कि वे उसको खराब कर देंगीं।

जब भी शहर की लड़कियॉ अपना कुछ प्रोग्राम रखतीं वे ऐडेट ऐटिम को जरूर बुलातीं। वह उनके लिये ढोल बजाता। बहुत सारी जवान लड़कियों ने अपने पतियों को छोड़ दिया था और वह ऐडेट के पास गयीं कि वह उनसे शादी कर ले।

इससे शहर के बहुत सारे नौजवान लड़के उससे जलने लगे थे। एक दिन वे सब नौजवान लड़के रात को इकट्ठा हुए और उन्होंने ऐडेट ऐटिम को मारने की तरकीब सोची। उन्होंने सोचा कि जब ऐडेट ऐटिम नदी पर नहाने जायेगा तब वे मगरों को उकसा कर उसको उनसे पकड़वा लेंगे।

एक रात जब ऐडेट ऐटिम नदी पर कुछ धो रहा था कि एक मगर ने उसका पैर पकड़ा और दूसरे मगर उसको उसकी कमर से पकड़ कर खींचने लगे।

ऐडेट बेचारे ने उनसे छूटने की काफी कोशिश की पर वह उनकी पकड़ से नहीं छूट सका और मगर उसको पानी में खींच कर अपने घर ले गये।

ऐडेट ऐटिम की मॉ ने जब यह सुना तो उसने यह निश्चय कर लिया कि वह अपने बेटे को वहॉ से लाने की पूरी कोशिश करेगी। वह सुबह होने तक चुपचाप रही।

जब लड़कों ने देखा कि ऐडेट ऐटिम की मॉ तो चुपचाप है और रोयी नहीं तो उनको चील और उल्लू की कहानी याद आ गयी और उन्होंने ऐडेट ऐटिम को कुछ महीने तक ज़िन्दा रखने का निश्चय किया।

सुबह होते ही ऐडेट की मॉ ने रोना शुरू किया और अपने पति की कब्र पर उसकी आत्मा से सलाह मॉगने गयी कि उसको अपने बेटे को वापस लाने के लिये क्या करना चाहिये।

उसके कुछ समय बाद वह कुछ हरी ताज़ी डंडियॉ हाथ में ले कर नदी के किनारे गयी और वहॉ जा कर उसने उन डंडियों से पानी को पीटना शुरू कर दिया।

वह कैलैबार नदी के सारे जू जू से और उसकी आत्मा से अपने बेटे को लौटाने की प्रार्थना करने लगी। प्रार्थना करने के बाद वह घर चली गयी।

घर जा कर उसने बहुत सारी डंडियॉ[83] लीं और खेत पर एक जू जू आदमी के पास गयी। उस जू जू आदमी का नाम इनीनैन ओकोन[84] था। उसका यह नाम इसलिये था क्योंकि वह बहुत चालाक था और उसके पास बहुत असरदार जू जू थे।

जब उन नौजवान लड़कों ने यह सुना कि ऐडेट की मॉ इनीनैन जू जू आदमी के पास गयी है तो वे डर गये और ऐडेट को लौटाने

[83] Currency of Nigeria at that time

[84] Ininen Okon – the name of the Ju Ju man who does magic

के बारे में सोचने लगे। पर वे ऐसा नहीं कर सकते थे क्योंकि यह उन लोगों के समाज के नियमों के खिलाफ था।

जू जू आदमी ने यह पता लगा लिया कि ऐडेट अभी जिन्दा था और वह मगरों के घर में बन्द था सो उसने उसकी मॉ को थोड़ा धीरज रखने के लिये कहा।

तीन दिन बाद इनीनैन खुद एक दूसरे मगरों के समूह में जा कर मिल गया और वहॉ से उन जवान मगरों का घर देखने गया जो उसको पकड़ कर ले गये थे।

वहॉ उसने एक नौजवान आदमी को देखा जिसको वह जानता था। दूसरे नौजवान मगर बाहर ज्वार[85] में आये हुए खाने को खाने के लिये गये हुए थे। जाने से पहले उस आदमी को पहरे पर छोड़ गये थे। इनीनैन यह सब देख कर वापस आ गया।

उसने आ कर ऐडेट की मॉ को बताया कि वह एक ऐसा असरदार जू जू बनायेगा जिससे वे मगर सात दिन के अन्दर अन्दर वहॉ से चले जायेंगे और उनमें से कोई भी उस घर में नहीं रह जायेगा फिर उसके बेटे को वहॉ से लाया जा सकता था। उसने वह जू जू बनाया।

जब मगर लोग घर लौट कर आये तो उन्होंने पूछा कि क्या कोई ऐडेट ऐटिम को पूछने के लिये आया था? उस आदमी ने उनको बताया कि कोई भी उसको पूछने नहीं आया।

[85] Translated for the words “High Tide”

यह जान कर वे बोले कि अब वे सब एक साथ खाना खाने बाहर जा सकते थे। पहरे की कोई जरूरत नहीं थी।

उसके बाद वे सब एक साथ खाना खाने बाहर चले गये और जब लौट कर आये तो भी उन्होंने ऐडेट ऐटिम को वहीं पाया जहॉ वे उसको छोड़ कर गये थे और बाकी चीज़ें भी वहीं की वहीं थीं क्योंकि इनीनैन जू जू वाला उस दिन वहॉ गया ही नहीं था।

तीन दिन के बाद वे सब फिर बाहर गये और इस बार वे थोड़ी दूर निकल गये। इसका मतलब था कि वे जल्दी वापस आने वाले नहीं थे और ऐडेट ऐटिम को वहॉ से आराम से निकाला जा सकता था।

जब इनीनैन ने देखा कि ज्वार उतरने वाला है तो इनीनैन उसने अपने आपको एक मगर में बदला और वह जवान मगरों के घर पहुॅच गया।

वहॉ उसने ऐडेट ऐटिम को एक खम्भे से बॅधा पाया। उसने एक कुल्हाड़ी ली और उस खम्भे को काट कर उसे आजाद कर दिया। बहुत दिनों तक पानी में रहने की वजह से वह न बोल सकता था और न ही सुन सकता था।

वहॉ इनीनैन को बहुत सारे कमर में पहनने वाले कपड़े मिले जो वे जवान मगर लोग वहॉ छोड़ गये थे। उसने वे सब कपड़े राजा को दिखाने के लिये उठा लिये और फिर वह ऐडेट ऐटिम को ले कर वहॉ से चल दिया।

घर पहुँच कर उसने ऐडेट ऐटिम की मॉ को उसके बेटे को देखने के लिये बुलाया। वह उसको देख तो सकी पर उससे बात नहीं कर सकी।

उसने अपने बेटे को अपने गले से लगाया पर जैसे उसके बेटे को कुछ महसूस ही नहीं हुआ। ऐसा लग रहा था कि वह कुछ भी समझने के लायक ही नहीं था। पर वह चुपचाप बैठ गया। जू जू आदमी ने उसकी मॉ को बताया कि वह उसको कुछ ही दिन में ठीक कर देगा।

तब जू जू आदमी ने उसके लिये कई जू जू बनाये और उसको कुछ दवा भी दी। कुछ समय बाद वह लड़का ठीक हो गया और उसकी समझ भी वापस आ गयी।

उसके बाद ऐडेट ऐटिम की मॉ ने लोगों को दिखाने के लिये कि उसका बेटा मर चुका है दुख वाले कपड़े पहन लिये और किसी को यह नहीं बताया कि उसका बेटा घर वापस आ गया है।

जब वे नौजवान मगर घर वापस लौटे तो उन्होंने देखा कि ऐडेट ऐटिम तो जा चुका है और किसी ने उनके कमर में पहनने वाले कपड़े भी चुरा लिये हैं।

यह देख कर वे बहुत डर गये और उन्होंने ऐडेट ऐटिम के बारे में पूछताछ की कि किसी ने उसको देखा है क्या पर किसी ने उसको नहीं देखा था। वह तो खेत पर छिपा था और उसकी मॉ ने सबको धोखा देने के लिये अभी भी दुख वाले कपड़े पहन रखे थे।

छह महीने तक कुछ नहीं हुआ ऐसा ही चलता रहा। अब तक सब इस बात को भूल गये थे।

फिर एक दिन ऐडेट ऐटिम की मॉ ऐफ़ियोंग[86] शहर के सरदारों के पास गयी और उनसे एक बहुत बड़ी मीटिंग बुलाने की प्रार्थना की जिसमें जवान और बूढ़े सभी बुलाये जायें ताकि उन सबके सामने उसके पति की सम्पत्ति का वहॉ के रीति रिवाजों के अनुसार बॅटवारा किया जा सके क्योंकि उसके बेटे को मगरों ने मार दिया था।

सरदारों ने अगले दिन एक बहुत बड़ी मीटिंग बुलवायी जिसमें बहुत सारे लोग आये। ऐडेट ऐटिम की मॉ ऐडेट ऐटिम को सुबह ही जहॉ मीटिंग होनी थी उसके पीछे वाले कमरे में ले गयी और वहॉ उसको वे सात नीचे पहनने वाले कपड़े दे कर बिठा दिया जिनको इनीनिन जू जू वाला मगरों के घर से ले कर आया था।

जब सरदार लोग और आये हुए सारे लोग बैठ गये तो ऐफ़ियोंग ने कहना शुरू किया — "ओ सरदारों और बैठे हुए सारे लोगों, आठ साल पहले मेरा पति एक सुन्दर नौजवान था। उसने मुझसे शादी की।

हम लोग काफी दिनों तक साथ साथ रहे पर हमारे कोई बच्चा नहीं हुआ। आखिर मेरे एक लड़का हुआ पर बदकिस्मती से मेरा पति कुछ महीने बाद ही चल बसा।

[86] Affiong – the name of the wife of the Chief

मैंने अपने बेटे को बड़े लाड़ प्यार से पाला और वह एक अच्छा ढोल बजाने वाला और नाचने वाला बन गया। बहुत सारे नौजवान उससे जलने लगे और उन्होंने उसको मगरों से पकड़वा दिया। क्या आप लोगों में से कोई बता सकता है कि आज अगर मेरा बेटा ज़िन्दा होता तो वह इस समय क्या होता?"

फिर उसने उन लोगों से पूछा कि वे मगरों के समाज के बारे में क्या सोचते थे जिन्होंने कितने ही जवानों को मार दिया था।

सरदारों के भी बहुत सारे नौकर मारे जा चुके थे इसलिये उन्होंने उससे कहा कि अगर वह उनमें से किसी एक मगर के समाज के खिलाफ कोई भी सबूत पेश कर सके तो वे उस समाज को तुरन्त ही नष्ट कर देंगे।

तब ऐफ़ियोंग ने इनीनैन जू जू वाले को अपने बेटे ऐडेट ऐटिम के साथ वहॉ आने के लिये कहा। इनीनैन जू जू वाला पीछे के कमरे में से एक हाथ में ऐडेट का हाथ पकड़े और दूसरे में वे सात नीचे पहनने वाले कपड़ों की गठरी लिये हुए सबके सामने आया और वह गठरी सरदारों के सामने रख दी।

जैसे ही नौजवान लोगों ने ऐडेट को देखा तो वे आश्चर्य में पड़ गये और वहॉ से भागने की कोशिश करने लगे। पर जैसे ही वे भागने के लिये खड़े हुए सरदारों ने उनको बैठने के लिये कहा और कहा कि अगर वे नहीं बैठे तो उनमें से हर एक को तीन सौ कोड़े लगेंगे। यह सुन कर वे सभी वहीं अपनी अपनी जगह बैठ गये।

इसके बाद जू जू आदमी ने उन सबको बताया कि कैसे वह मगरों के घर गया था और ऐडेट को उसकी मॉ के पास वापस ले कर आया।

फिर उसने उन सबको यह भी बताया कि कैसे उसने सात नीचे पहनने वाले कपड़े वहॉ देखे जिनको वह यहॉ ले आया पर उनके बारे में वह कुछ भी नहीं कहना चाहता क्योंकि उनमें से कुछ कपड़े सरदारों के अपने बेटों के थे।

वे सरदार जो अपने समाज में बुरे लोगों को रोकना चाहते थे उन्होंने इनीनैन जू जू वाले से सब कुछ तुरन्त बताने को कहा। इस पर इनीनैन ने कपड़ों की वह गठरी खोली और उसमें से एक एक कर के सब कपड़े अलग अलग रख दिये और वे कपड़े जिन जिन के थे उनका नाम ले ले कर उसने उन्हें बुलाना शुरू किया।

तब उन सातों ने अपने समाज के दूसरे लोगों के नाम भी दिये। गिनती में वे सब बत्तीस थे। इन सबको एक लाइन में खड़ा कर दिया गया और सरदारों ने उन सबको सजा दे दी कि अगली सुबह उन सबको नदी के किनारे मार दिया जाये।

फिर उन सबको खम्भों से बॉध दिया गया। सात आदमी उन की पहरेदारी करते रहे। उन्होंने वहॉ आग जलायी और सारी रात ढोल बजाया।

अगली सुबह वहॉ की रीति रिवाज के अनुसार जहॉ मीटिंग हुई थी उस कमरे की छत पर एक बड़ा ढोल रख दिया

गया और वहॉ उसको बुरा काम करने वालों के मरने की खुशी में बजाया गया।

उसके बाद उन बत्तीस लड़कों को खम्भे से खोल दिया गया। उनके हाथ उनकी पीठ पीछे बॉध दिये गये और उनको नदी किनारे ले जाया गया।

सरदारों के सरदार ने तब एक स्पीच दी — "यह एक छोटा सा शहर है जहॉ का मैं सरदार हूॅ। मैं यहॉ के इस बुरे रिवाज को खत्म कर देना चाहता हूॅ क्योंकि इसकी वजह से वहॉ बहुत सारे लोग मारे जा चुके हैं।"

उसने तब एक आदमी को अपने लम्बे चाकू से एक आदमी का सिर काटने का हुक्म दिया। फिर उसने एक दूसरे आदमी को दूसरे आदमी की खाल निकालने का हुक्म दिया। फिर एक तीसरे आदमी को तीसरे आदमी को डंडे से मारने के लिये कहा जब तक वह मर न जाये।

उनमें से कुछ को खम्भे से बॉध कर नदी में डाल दिया गया जब तक ज्वार आ कर उनको डुबो न दे। इस तरह उसने सब लोगों को अलग अलग तरीके से मरवा दिया।

इस घटना के बाद बहुत दिनों तक मगरों ने किसी को नहीं मारा लेकिन कुछ साल बाद नदी के किनारे और शहर के बीच में की जमीन नीचे धॅस गयी जिससे एक बहुत बड़ा और गहरा गड्ढा बन गया जो कहते हैं कि मगरों का घर था।

लोगों ने उस गड्ढे को भरने की बहुत कोशिश की पर वह गड्ढा आज तक नहीं भरा जा सका।

17 कैन्डी वाला आदमी[87]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के तिब्बत देश की है। तिब्बत देश भारत के उत्तर में स्थित है और चीन देश में आता है। यह संसार में सबसे ऊँची जगह है[88] – औसतन सोलह हजार फीट ऊँची। इसे संसार की छत भी कहते हैं। इसमें भी ढोल की करामात दिखायी गयी है।

एक बार की बात है कि तिब्बत के पहाड़ों में दो भाई रहा करते थे। जब उनके माता पिता मर गये तो उनका सब कुछ बड़े भाई को मिल गया जैसा कि वहाँ का रिवाज था। छोटे भाई के पास कुछ भी नहीं था।

सो अब बड़ा भाई बहुत अमीर था। उसके पास तो अपनी जरूरत से भी ज़्यादा पैसा था पर वह खुश नहीं था। उसको जो कुछ पैसा अपने माता पिता से मिला था वह उसने ऊँचे ब्याज पर उधार दे दिया। इससे उसका पैसा और बढ़ गया था पर फिर भी वह खुश नहीं था। वह बहुत ही लालची था।

---

[87] The Candy Man – a folktale from Tibet, Asia. Adapted from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=209
Adopted, retold and written by Mike Lockett.

[88] Tibet is called “The Roof the World”. Its average height from the sea level is 16,000 feet.

छोटे भाई के पास कोई पैसा नहीं था पर फिर भी वह हमेशा मुस्कुराता रहता। वह रोज रोज घर घर काम माँगने जाता था और जो भी काम उसको मिल जाता वह उसी को कर लेता।

वह कभी अपने बारे में भी कोई शिकायत नहीं करता बल्कि अपने बड़े भाई के बारे में भी अच्छा ही बोलता था और अच्छा ही सोचता था।

एक दिन छोटे भाई को एक पहाड़ी पर लगे एक प्रकार के पेड़ के रस की भारी भारी भरी बालटियाँ उठाने का काम मिला। वह रस वहाँ इकट्ठा किया जाता था और फिर वहाँ से वह बालटियों मे भर कर पहाड़ियों के नीचे लाया जाता था जहाँ उसको पका कर उसका मीठा शहद और मीठी गोलियाँ बनायी जाती थीं।

एक बार जब वह रस से भरी उन बालटियों को ले कर नीचे आ रहा था तो उसका पैर फिसल गया और वह गिर पड़ा। वह लुढ़कता चला गया और वह रस उसके सारे शरीर पर लिपटता चला गया। जब वह रुका तो उसके चारों तरफ राक्षस[89] खड़े हुए थे।

राक्षस चिल्लाये — "कैन्डी[90] वाला आदमी। कैन्डी वाला आदमी।"

राक्षसों को कैन्डी बहुत अच्छी लगती थी सो वे बाले — "अरे आज तो हमारे पास खाने के लिये एक कैन्डी वाला आदमी है।"

[89] Translated for the word "Goblin"

[90] Sweet balls of sugar for children

उन राक्षसों ने उस छोटे भाई को उठा लिया और उसको पहाड़ में बनी अपनी एक गुफा में ले गये। कुछ राक्षस तो उसको तभी खाना चाहते थे पर राक्षसों के राजा ने उनको ऐसा करने से रोक दिया।

वह बोला — "यह हमारा तरीका नहीं है।" उसने एक जादू का ढोल बजाया तो कमरे के बीच में एक मेज पर बहुत सारा खाना प्रगट हो गया।

उन राक्षसों की नाकें लम्बी होने लगीं जिनसे वे खाने की खुशबू अच्छी तरह से ले सकते थे। जैसे ही उनकी नाकें लम्बी हुईं तुरन्त ही वे अपने मुँह के एक ही दाँत से मॉस, डबल रोटी और केक पर टूट पड़े।

छोटे भाई को वह खाना सूँघने में बहुत ही स्वादिष्ट लग रहा था। उसने इतने स्वादिष्ट खाने की खुशबू पहले कभी नहीं सूँघी थी।

राक्षसों के राजा ने अपना वह ढोल एक बार फिर बजाया और बोला — "अब तुम लोग नदी तक हो कर आओ फिर हम अपने इस कैन्डी वाले आदमी को खायेंगे।" सारे राक्षस वहाँ से बाहर की तरफ भाग गये और छोटा भाई अब गुफा में अकेला रह गया।

वह बिल्कुल चुपचाप बैठा रहा ताकि राक्षस उसे न खायें। सबके जाने के बाद वह कूदा और वह जादू का ढोल उठा कर गुफा

के बाहर भाग लिया और अपने घर का रास्ता ढूँढ कर अपने घर आ गया।

घर आ कर उसने वह ढोल बजाया तो उसके पास तो खाने के लिये भी खाना था और बेचने के लिये भी खाना था। धीरे धीरे उसके पास भी अब अपने कुछ पैसे हो गये तो उसने भी अपने बड़े भाई जितना बड़ा घर खरीद लिया।

बहुत जल्दी ही उसके बड़े भाई को उसकी खुशकिस्मती के बारे में पता चल गया। उसने अपने छोटे भाई से प्रार्थना की कि वह उसको यह बता दे कि वह अमीर कैसे बना। छोटा भाई तो बहुत दयालु था सो उसने अपने बड़े भाई को सब बता दिया।

सुनते ही उसका बड़ा भाई उसी पहाड़ी के ऊपर दौड़ गया और वहाँ से रस की बालटियाँ ले कर लौटा तो अपने शरीर पर बहुत सारा रस लपेट लिया और पहाड़ी से नीचे लुढ़क गया।

वह भी अपने छोटे भाई की तरह उन राक्षसों के बीच आ पहुँचा। उन राक्षसों में से एक राक्षस बोला — "अरे देखो यह तो हमारा वही कैन्डी वाला आदमी है।"

कहते हुए वे राक्षस उसको घसीटते हुए अपनी गुफा में ले गये। वह वहाँ चुपचाप ही रहा ताकि मौका पड़ने पर वह अपना जादू का ढोल वहाँ से उठा कर भाग सके।

"पिछली बार तो हमारा कैन्डी वाला आदमी हमारे खाने से पहले ही भाग गया था। इस बार हम ऐसा नहीं होने देंगे। चलो इसको

हम पहले पिघलाते हैं और खाना खाने से पहले ही इसका रस पी लेते हैं।"

कह कर राक्षसों ने उस बड़े भाई को एक बड़े से बर्तन में रखा और उस बर्तन को ढक दिया। फिर उन्होंने उसके नीचे आग जलायी। जैसे ही उन्होंने आग जलायी वह बड़ा भाई तो तुरन्त ही उस बर्तन का ढक्कन हटा कर उसमें से बाहर कूद गया।

राक्षस बोले — "अरे यह हमारा वाला कैन्डी वाला आदमी नहीं है। लगता है यह तो कोई मामूली चोर है।"

राक्षसों के राजा ने अपना दूसरा जादू का ढोल बजाया और उस भाई की नाक खींचनी शुरू की। उस ढोल के बजाने से उसकी नाक लम्बी होती चली गयी। वे तब तक अपना ढोल बजाते रहे जब तक कि उसकी नाक सात फीट लम्बी नहीं हो गयी।

राक्षसों को नोचना बहुत अच्छा लगता है सो नाक बढ़ाने के बाद में उन्होंने उसके सारे शरीर को नोचना शुरू कर दिया। बड़े भाई के पास अपने बचाव के लिये और तो कुछ था नहीं तो उसने अपनी लम्बी नाक को ही इधर उधर घुमा कर कोड़े की तरह इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

इस तरह उसने सब राक्षसों को नीचे गिरा दिया और गुफा से बाहर की तरफ भागा। घर आ कर वह अपनी पत्नी से बोला — "जल्दी दरवाजा खोलो।"

उसकी पत्नी ने तुरन्त ही दरवाजा खोला और वह अपनी लम्बी नाक में उलझ कर घर में अन्दर की तरफ गिर पड़ा।

सब कुछ सुन कर उसकी पत्नी अपने पति के छोटे भाई के पास गयी और उससे कहा — "यह सब तुम्हारी अपनी गलती है। अगर तुमने मेरे लालची पति को यह न बताया होता कि तुम अमीर कैसे हुए तो आज उसकी नाक सात फीट लम्बी न हुई होती।"

छोटे भाई को पता था कि उसके भाई की नाक सात फीट लम्बी केवल उसके लालची होने की वजह से ही हुई है फिर भी वह क्योंकि अपने भाई को बहुत प्यार करता था उसने अपने भाई से वायदा किया कि वह उसकी सात फीट लम्बी नाक का कोई हल जरूर निकालेगा।

अगले दिन छोटा भाई फिर से उन राक्षसों की गुफा में गया। वहॉ उसने तब तक इन्तजार किया जब तक वे राक्षस अपनी गुफा से बाहर जाने लगे।

जाते जाते वे आपस में बात करते जा रहे थे — "कल उस चोर की नाक लम्बी करने में कितना मजा आया। यह कितनी बुरी बात है कि उसको यह नहीं मालूम था कि अपनी नाक को पहले जैसा करने के लिये उसको केवल जादू का ढोल पीट कर यह कहना था "मेरी नाक सिकुड़ जाओ।"

बस छोटे भाई को तो यही मालूम करना था। यह सुन कर वह दौड़ा दौड़ा घर आया। उसने अपना वह जादू का ढोल बजाया और बोला "ओ मेरी नाक सिकुड़ जाओ।"

पहली बार इस तरह कहने से उसके भाई की नाक करीब दो इंच सिकुड़ गयी। यह देख कर छोटा भाई बहुत खुश हुआ। वह तब तक उस ढोल को बजाता रहा और "मेरी नाक सिकुड़ जाओ।" दोहराता रहा जब तक उसके भाई की नाक तीन फीट नहीं रह गयी।

पर तब तक उसकी पत्नी से सब्र नहीं हुआ वह बेसब्री से चिल्लायी — "यह ढोल तुम मुझको दो। मैं देखती हूँ।

कह कर उसने अपने पति के छोटे भाई से वह ढोल जबरदस्ती छीन लिया और उसे जल्दी जल्दी बजाना शुरू किया। अब उसके पति की नाक जल्दी जल्दी सिकुड़ रही थी और अब वह बहुत खुश थी।

पर फिर भी "नाक सिकुड़" कह कर उसने वह ढोल बहुत ज़ोर से पीट दिया तो एक ही बार में उसके पति की नाक छोटी हो कर उसके चेहरे से जा कर चिपक गयी।

अब आज तक उस भाई के कोई नाक नहीं है। उसको अपने लालच का फल मिल गया था।

18 बन्दर का ढोल[91]

यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के चीन देश में कही सुनी जाती है और यह भी ढोल वाद्य पर ही आधारित है।

बहुत दिनों पहले की बात है कि चीन में एक बड़ा दयालु नौजवान रहता था जिसका नाम था यान[92]। वह अपने बड़ों की बहुत इज़्ज़त करता था और जानवरों के ऊपर बहुत दया करता था।

वह अकेला ही रहता था उसके कोई पत्नी नहीं थी पर उसकी निगाह में एक बहुत ही सुन्दर लड़की थी जो उसको बहुत अच्छी लगती थी।

वह उससे शादी करना चाहता था पर वह एक बहुत ही अमीर आदमी की बेटी थी और उसका पिता अपनी बेटी की शादी किसी ऐसे आदमी से नहीं करता जो उसको ठीक से "दुलहिन की कीमत"[93] नहीं देता।

अमीर आदमी बोला — "कोई आदमी मेरी बेटी से शादी नहीं करेगा जब तक कि वह शादी की भेंट – एक लाल लिफाफे में काफी जवाहरात या फिर काफी पैसा मुझे नहीं देगा।"

---

[91] The Monkey's Drum – a folktale from China, Asia. Adapted from the Web Site: http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=111
Retold and written by Mike Lockett

[92] Yan – the name of the young man who wanted to marry

[93] Bride Price – is the money paid by the bridegroom to the bride's father to marry his daughter.

"दुलहिन की कीमत" लेना चीन में एक रिवाज था जो चीन में हर लड़की का पिता मानता था। लेकिन यह कीमत इस बात से तय होती थी कि लड़के के पास कितना पैसा है।

बहुत सारे परिवार इस बात का बहुत ध्यान रखते थे कि वे अपनी बेटी के लिये बहुत सारा पैसा न माँगें ताकि लोगों को ऐसा न लगे कि वे अपनी बेटी को बेच रहे हैं।

यान के पास केवल एक ही कीमती पत्थर था और वह उसकी अँगूठी में जड़ा हुआ था जो उसकी माँ ने उसको बरसों पहले दी थी। वह उसको अपने गले में पहने रहता था कि एक दिन शायद उसकी पत्नी उसको पहनेगी। सो वह यह पत्थर इस लालची आदमी को देने वाला नहीं था।

एक दिन यान इस अमीर आदमी के घर काम करने की इच्छा से गया ताकि वह उसको यह दिखा सके कि वह बहुत मेहनती आदमी था और साथ में एक बहुत अच्छा दामाद भी।

फिर भी उस आदमी ने यान के साथ बहुत बुरा बरताव किया और अपने दूसरे काम करने वालों के मुकाबले में उससे बहुत ज़्यादा तो काम लिया और यान को उतना पैसा भी नहीं दिया जितना कि उसको उसे देना चाहिये था।

वह नहीं चाहता था कि यान जैसा गरीब आदमी उसकी बेटी से शादी करे।

एक दिन यान पहाड़ों की तरफ लकड़ी काटने गया। वह सारी सुबह बहुत मेहनत से काम करता रहा। जब उसने दोपहर का खाना खाने के लिये अपना काम बन्द किया तो वह कुछ देर के लिये धूप में अपना सिर कर के लेट गया और ऑखें बन्द कर लीं।

जब वह वहॉ लेटा हुआ था तो उसने बन्दरों की चिचियाने की आवाजें सुनी। वे वहीं उसके पास वाले पेड़ों पर खेल रहे थे। यान देखना चाहता था कि अगर वे बन्दर उसको इस तरह चुपचाप बिना हिले डुले पड़े देखते तो वे क्या करते सो वह वहॉ चुपचाप बिना हिले डुले पड़ा रहा।

कुछ ही देर में बन्दरों ने उसको चारों तरफ से घेर लिया पर फिर भी वह वहीं चुपचाप लेटा रहा और हिला भी नहीं।

एक बन्दर ने यान की एक बॉह में चिऊँटी काटी और पूछा — "यह क्या है?" यान नहीं हिला।

दूसरा बन्दर बोला — "यह तो आदमी की तरह से नहीं हिल रहा।" उसने यान के बाल भी खींचे पर यान नहीं हिला।

वह बन्दर फिर बोला — "लगता है यह तो मूर्ति है।"

तीसरे बन्दर ने यान की पलक उठायी पर यान फिर भी नहीं हिला।

एक और बन्दर ने यान के कान में घास का एक तिनका घुसाया पर यान फिर भी नहीं हिला।

एक बन्दर ने यान का मुँह खोला और उसकी जीभ बाहर खींची पर यान फिर भी नहीं हिला।

एक बन्दर ने यान की नाक में अपनी उँगली डाली पर यान फिर भी नहीं हिला।

बन्दर ने घोषित किया कि वह एक मूर्ति पड़ी थी क्योंकि अगर वह कोई आदमी होता तो वह जरूर ही हिलता।

एक बन्दर ने यान के पेट में मारा तो उसके पेट से हवा निकली जिससे यान के मुँह से निकला "उँह"। यह सुन कर वह बन्दर बोला — "अब मुझे पता चला यह तो मूर्ति भी नहीं बल्कि एक ढोल है।"

उसने यान को दोबारा मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

उसने यान को तिबारा मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

उसने यान को चौबारा मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

यान को पाँचवीं बार मारा तो यान फिर से बोला "उँह"।

बस अब तो वह यान को मारता रहा और उसमें से "उँह उँह" की आवाज आती रही।

बन्दर बोले — "वाह क्या ही अच्छा ढोल है। यह तो बड़ा आदमी वाला ढोल[94] है। चलो हम इसको अपनी गुफा में ले चलते हैं और वहाँ ले जा कर इसको बजायेंगे। अब तो हमारे पास बड़ा आदमी ढोल है।"

[94] Translated for the words "Big Man Drum"

और वे उसको अपने सिर के ऊपर उठा कर ले चले — "उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह.... । इसको हवा में उठाओ और सॅभाल कर ले चलो।" और वे उसको इस तरह से पहाड़ के ऊपर अपनी गुफा में ले चले।

एक बन्दर यान के पेट पर बैठ गया और उसको मारता चला गया जैसे ढोल को बजाते हैं — "हमारे बड़े आदमी ढोल को नीचे मत गिराना, हमारे बड़े आदमी ढोल को नीचे मत गिराना, उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह।"

अब बन्दरों ने एक बड़ी सी गहरी घाटी पार करनी शुरू की जिसमें नीचे नदी बह रही थी। जब वे उस घाटी के ऊपर वाला पुल पार कर रहे थे तो बन्दरों ने यान को बहुत सॅभाल कर पकड़ा हुआ था। यान ने भी अपनी ऑखें बन्द कर रखी थीं और वह बिल्कुल नहीं हिल रहा था।

पुल पार कर के बन्दर पहाड़ों में अपनी गुफा की तरफ चले। उन्होंने यान को अपनी गुफा में एक पत्थर की मेज पर लिटा दिया — "यह बड़ा आदमी ढोल तो हमारा है, हम इसको फूलों से ढक देते हैं। उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह।"

बन्दरों ने यान को फूलों से ढकना शुरू कर दिया। उन्होंने उसके बालों में फूल लगाये, कानों में फूल रखे, नाक में फूल रखा। उसी समय एक बन्दर ने वह चमकीली ऑगूठी देखी जो यान ने अपने गले में पहनी हुई थी।

एक बन्दर बोला — "ओह, कितना सुन्दर पत्थर है।"

फिर वह अपनी सोने वाली जगह गया और वहॉ से कुछ लाल और हरे रंग के पत्थर उठा लाया और उसकी ऑगूठी के पास ला कर रख दिये। दूसरे बन्दर भी वहॉ से दूसरी रंगीन मोतियों की माला, जंजीरें और चमकीले पत्थर लाने के लिये दौड़ गये।

इस बीच यान ने अपनी ऑखें जरा सी खोलीं तो देखा कि बन्दर उसके शरीर को कीमती पत्थरों, गले के हारों, कलाई के कंगनों से ढक रहे थे। उसने अपनी ऑखें फिर से बन्द कर लीं और चुपचाप लेटा रहा।

"चलो अब अपना बड़ा आदमी ढोल बजाते हैं – उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह उॅह।"

बन्दर रात गये तक अपना ढोल बजाते रहे और नाचते रहे। फिर जब वे थक गये तो अपनी अपनी सोने की जगहों पर चले गये।

जब सारे बन्दर सो गये तो यान सावधानी से उस पत्थर के ऊपर से नीचे उतरा। उसने वहॉ से जितने जवाहरात उठा सकता था उतने जवाहरात उठाये और अपने गॉव की तरफ जल्दी जल्दी चल दिया। उसने उस घाटी के ऊपर का पुल बड़ी सावधानी से पार किया।

घर आ कर उसने कुछ जवाहरात बेच कर एक बड़ा सा खेत खरीद लिया और अपने लिये एक बड़ा सा मकान बना लिया। कुछ

पैसा उसने गॉव के गरीबों की सहायता करने में लगा दिया और कुछ जवाहरात उसने उस दिन के लिये अपने पास रख लिये जब उसकी शादी होगी।

जल्दी ही उसके पुराने लालची मालिक को उसके अमीर होने का पता चल गया। उसने यान से कहा — "अब तुम मेरी बेटी की "दुलहिन की कीमत" देने लायक हो गये हो। क्या मैं तुम्हारे लिये वह लाल बड़ा लिफाफा ले आऊॅ जो मैंने अपनी बेटी की शादी के लिये रखा है ताकि हम तुम्हारी शादी के बारे में बात कर सकें?"

यान बोला — "नहीं धन्यवाद। मैं पत्नी खरीदना नहीं चाहता।"

पर वह लालची आदमी यान के पीछे पड़ा रहा जब तक कि यान ने उसको यह नहीं बता दिया कि वे जवाहरात और पैसे उसको कहॉ से मिले थे।

यान की कहानी सुनने के बाद वह लालची आदमी तुरन्त ही बड़े बड़े थैले लाने के लिये अपने घर गया ताकि वह वहॉ से यान से भी ज़्यादा जवाहरात ला सके। और फिर तुरन्त ही उस पहाड़ की तरफ चल दिया जहॉ यान बन्दरों से मिला था।

वह लालची आदमी भी यान की तरह से ऑखें बन्द करके उस पहाड़ पर जमीन पर लेट गया। कुछ मिनटों में ही उसको भी बन्दरों की चिचियाहट की आवाज सुनायी पड़ने लगी। वह हिला नहीं और चुपचाप पड़ा रहा।

जल्दी ही बन्दरों ने उसको घेर लिया। एक ने उसके बाल खींचे, दूसरे ने उसके कानों में, मुँह में, ऑखों में उँगली घुसायी, पर वह नहीं हिला।

एक बन्दर बोला — "यह तो हमारा बड़ा आदमी ढोल है"।

फिर एक ने उसके पेट में मारा तो वह बोला — "आउ आउ।"

फिर दूसरे ने मारा, फिर तीसरे ने मारा तो भी वह बोलता रहा — "आउ आउ आउ आउ आउ।"

एक बन्दर बोला — "हमारा यह ढोल ठीक से नहीं बोल रहा। पर फिर भी हम इसको अपनी गुफा में ले चलते हैं इसको हम वहीं बजायेंगे।"

सो वे उस लालची आदमी को अपने सिर पर उठाकर पहाड़ की तरफ अपनी गुफा में ले चले — "इसको हवा में उठाओ और सँभाल कर ले चलो, आउ आउ आउ आउ आउ।"

एक बन्दर उसके पेट पर बैठ गया और उसके पेट पर मारता रहा। वह लालची आदमी वैसे तो चुपचाप लेटा रहा बस वह जभी बोलता था जब वह बन्दर उसके पेट पर मारता था।

"हमारे बड़े आदमी ढोल को नीचे नहीं गिराना, आउ आउ आउ आउ आउ।"

बन्दरों ने अब वह घाटी वाला पुल पार करना शुरू कर दिया था जिसके नीचे वह बहुत तेज नदी बह रही थी। जब वे पुल पार

कर रहे थे तो वे उसको बड़ी सावधानी से ले जा रहे थे पर उस लालची आदमी ने ऑख खोल कर देखा तो डर के मारे चिल्लाया — "ए तुम लोग गिरा मत देना मुझे।"

उसकी इस चिल्लाहट से बन्दर डर गये और उनके हाथों से वह आदमी छूट गया। वह नीचे पानी में जा गिरा जहॉ से वह तेज़ पानी उसको बहा कर ले गया।

यान ने वह अँगूठी उस लालची आदमी की बेटी को दे दी। उस लालची आदमी के जाने के बाद वह लड़की यान की बहुत प्यारी पत्नी बन गयी। दोनों खुशी से रहने लगे।

उसके बाद बन्दरों को अपना बड़ा आदमी ढोल फिर कभी नहीं मिला इसलिये वे फिर अपने पेट को ही बजा बजा कर गाते रहे — "हमारे पास एक बड़ा आदमी ढोल था, हमारे पास एक बड़ा आदमी ढोल था, आउ आउ आउ आउ आउ।"

19 ऐकन ढोल[95]

यह लोक कथा हमने यूरोप के स्कौटलैंड[96] देश से ली है। इसमें एक आदमी का नाम ही ऐकन–ड्रम है जो लोगों को काम करते समय गाने के लिये कहता है और उनके काम को सरल बना देता है। यह आदमी सबको सबके काम में सहायता करने की प्रेरणा देता है।

क्या कभी तुमने किसी आदमी को काम करते हुए गाते हुए सुना है? अगर सुना है तो वह आदमी जरूर ही कोई खुश आदमी रहा होगा और हो सकता है कि जब वह बच्चा हो तो उसने ऐकन–ड्रम[97] देखा भी हो क्योंकि ऐकन–ड्रम केवल वे ही लोग देख सकते हैं जो खुश हैं और काम करना पसन्द करते हैं खास कर के अपने बचपन में।

एक बार की बात है कि बहुत दिन पहले स्काटलैंड के एक छोटे से गॉव में आदमियों और औरतों को बहुत बहुत बहुत ज़्यादा काम करना पड़ता था।

---

[95] Aiken-Drum – a folktale from Scotland, Europe. Adapted from the Web Site: http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=82 Retold and written by Mike Lockett. The folktale and song of Aiken-Drum goes back to about 1715 when the story and song could both be heard in Scotland.

[96] Scotland – a part of United Kingdom or Great Britain (England, Ireland, Scotland and Wales)

[97] Aiken-Drum

इससे ऐसा लगता था कि जैसे वे हमेशा ही थके हुए रहते थे, हमेशा ही शिकायत के मूड में रहते थे और कभी उनको अपने बच्चों के साथ खेलने का भी मौका नहीं मिलता था।

किसान कहता — "मैं अपना सारा अनाज बर्फ आने से पहले न तो काट सकूँगा और न ही उसमें से दाने निकाल सकूँगा तो मेरा अनाज तो ऐसे ही खेत में ही सड़ जायेगा और मेरे पास अपनी जरूरत का सामान खरीदने के लिये भी पैसा नहीं होगा। काश मुझे अपने काम में कोई सहायता मिल जाती।"

दूध वाला कहता — "मेरे पास दुहने के लिये बहुत सारी गायें हैं। जब तक मैं उनके सामने खाने के लिये ताजा भूसा रखता हूँ और दूसरा काम करता हूँ तब तक उनको दूसरी बार दुहने का समय हो जाता है। काश मेरे पास मेरा काम करने के लिये कोई सहायता होती।"

डबल रोटी बनाने वाला कहता — "मैं हर रोज गॉव के हर आदमी को लिये डबल रोटी, केक, बिस्किट बनाने के लिये जल्दी से जल्दी उठता हूँ पर फिर भी तीसरे पहर तक वे सब खत्म हो जाते हैं।

उसके बाद मुझे अपने ग्राहकों को खाली हाथ भेजना पड़ता है क्योंकि मैं उनके लिये काफी चीज़ें नहीं बना पाता। काश मेरे पास मेरा काम करवाने के लिये कोई सहायता होती।"

मॉ कहती — "मैं रोज सुबह सवेरे जल्दी उठती हूॅ और रोज रात को बच्चों की देखभाल कर के, कपड़े धो कर, खाना बना कर और घर के दूसरे काम कर के इतनी देर से सोती हूॅ कि मुझे अपने बच्चों के साथ खेलने का समय भी नहीं मिल पाता। काश मेरा काम कराने के लिये मेरे पास कोई सहायता होती।"

इससे ऐसा लगता कि सभी थके थके थे और अपनी अपनी ज़िन्दगियों से नाखुश थे।

एक दिन जब वे लोग ऐसी बातें कर रहे थे तो उन्होंने दूर कहीं गाने की आवाज सुनी — "क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है? क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है?"

उन्होंने सड़क पर इधर उधर देखा पर उनको कोई दिखायी नहीं दिया। याद है न? जब कोई नाखुश होता हो या उसको अपना काम पसन्द नहीं होता तो वह ऐकन–ड्रम को कभी नहीं देख सकता था।

उन्होंने कई बार इधर उधर देखा पर उनको कोई दिखायी नहीं दिया। उनको तो बस थम्प थम्प की आवाज सुनायी दे रही थी जैसे कोई चम्मच या चमचा किसी ढोल पर मार रहा हो।

औरतें और बच्चे भी घर से बाहर निकल आये। वे बोले — "हमको किसी के गाने और ढोल बजाने की आवाज सुनायी पड़ रही है।" और यह कह कर उन्होंने भी सड़क के इधर उधर देखा।

सो उन सबने भी देखने की कोशिश की और उन सबने भी सुना — "क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है? क्या तुम्हारे

पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है?" पर किसी को दिखायी कुछ भी नहीं दे रहा था।

तभी अचानक एक खुश लड़की जो अपनी मॉ के कामों में हाथ बॅटाना पसन्द करती थी एक तरफ को इशारा करते हुए चिल्लायी — "देखो देखो, वह एक अजीब सा आदमी सड़क पर इधर ही चला आ रहा है।"

सब लोगों ने उधर देखा जिधर उस लड़की ने इशारा किया था पर उनको तो उधर कुछ भी दिखायी नहीं दिया। उन्होंने उस लड़की को डॉटा कि जब उनको कुछ दिखायी नहीं दे रहा तो उस लड़की को भी कुछ दिखायी नहीं दे रहा होगा।

लेकिन तभी एक लड़का जो अपने पिता के खेत पर खुशी से उसकी सहायता करता था चिल्ला कर बोला — "मैं भी उस अजीब से आदमी को देख पा रहा हूॅ। वह उतना ही बड़ा है जितने हम। वह एक बड़ा आदमी है पर वह साइज़ में बच्चे जैसा है।"

दूसरा लड़का बोला — "वह सबसे पूछ रहा है अगर किसी के पास कोई काम हो जो उसको करवाना हो तो वह उससे करवा ले। वह कह रहा है कि मुझे काम करना अच्छा लगता है। मुझे काम करने में आनन्द आता है।

जब मैं काम करने में सहायता करता हूॅ तब हर एक के पास एक दूसरे के साथ खेलने के लिये बहुत समय होता है। वह तो बस

यही गाता ही जा रहा है — "क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है□क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है?"

एक और लड़का जिसने कभी अपने घर के किसी काम में सहायता नहीं की थी बोला — "मुझे तो वह कहीं दिखायी नहीं दे रहा। वह कैसा दिखायी देता है।"

दूसरे अच्छे बच्चे जो घर में सहायता करते थे उन्होंने सबने उसको एक जैसा ही बताया सो लोग समझ गये कि वे सच बोल रहे थे।

उन्होंने बताया कि वह लम्बाई में छोटा है और पतला दुबला है। वह अच्छा मजबूत लगता है। उसकी ऑखें बड़ी बड़ी और गोल हैं और बहुत काली भी। उसके चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान है।"

तभी एक बूढ़ी दादी सड़क पर आती दिखायी दी। उसने भी उसका गाना सुना पर वह उतनी जल्दी जल्दी नहीं चल पा रही थी जितनी जल्दी कि दूसरे लोग अपना घर छोड़ कर वह गाना सुनने चले आ रहे थे।

वह बुढ़िया बोली — "यह छोटा आदमी कत्थई रंग[98] का है। जब मैं छोटी थी तब मेरी मॉ मुझे कत्थई रंग वाले आदमियों के बारे में बताया करती थी।

[98] Translated for the word "Brownie"

ये कत्थई रंग वाले आदमी छोटे होते हैं और काम करना पसन्द करते हैं। अगर तुम इस कत्थई रंग वाले से ठीक से बर्ताव करोगे तो यह तुम्हारे कामों में सहायता करा देगा।

इसके अलावा सभी को एक दूसरे की सहायता करनी पड़ेगी तभी हर आदमी को आराम करने का और आनन्द मनाने का समय मिल पायेगा।"

इस तरह से वह ऐकन–ड्रम उस छोटे से गॉव में रहने के लिये आ गया। रोज रात को वह बुढ़िया ऐकन–ड्रम के लिये दूध और डबल रोटी रखती और सुबह तक वह गायब हो जाती।

केवल बच्चों ने ही उस कत्थई रंग वाले आदमी को देखा पर दूसरे लोगों ने तो केवल अपना काम खत्म होते ही देखा।

किसान जान गया कि वह कत्थई रंग वाला आदमी उसकी सहायता कर रहा था इसी लिये उसका काम अब जल्दी जल्दी खत्म हो रहा था। इसलिये जब वह अपना अनाज काट रहा था और उसमें से दाने निकाल रहा था तो उसने खुशी से सीटी बजानी शुरू कर दी।

हालॉकि उसने बहुत देर तक और बहुत मेहनत से काम किया फिर भी वह सारा समय बहुत खुश था। उसने सारा अनाज अपने अनाजघर में रख दिया। बाद में उसने उसको बेच कर अपनी सब जरूरतों को पूरा किया।

दूध वाला भी जान गया था कि उसको वाकई वह कत्थई रंग वाला आदमी सहायता कर रहा था। इस खुशी में कि अब उसका काम जल्दी खत्म हो जायेगा जब वह अपनी गायों को खाना खिला रहा था तो गुनगुनाता भी जा रहा था।

उसके गुनगुनाने से उसकी गायें ठीक से खड़ी हुई थीं और इस से वह उनका दूध जल्दी जल्दी निकाल पा रहा था।

डबल रोटी बनाने वाले की सब चीज़ें अब ज्यादा अच्छे से फूल रही थीं। उसकी केक अब उस तरह से दबी दबी नहीं बन रहीं थीं जैसे वे पहले बना करती थीं जब वह अपने खराब मूड में काम किया करता था।

अब वह खुश था और पहले से ज़्यादा चीज़ें बना रहा था जिससे वह सबकी जरूरतों को पूरा कर सकता था और उन गरीबों को भी दे सकता था जिनको खाने की जरूरत थी। इससे उसको पूरा भरोसा था कि वह कत्थई रंग वाला आदमी जरूर ही उसकी सहायता कर रहा था।

मॉ भी हॅसती थी क्योंकि उसको लगता था कि वह कत्थई रंग वाला आदमी उसकी सहायता कर रहा था। वह इतनी खुशी से अपना सारा काम करती थी कि उसके बच्चे भी अब उसके साथ खुशी से काम कराते थे।

अब बिस्तर जल्दी बिछ जाते थे, खाना मेज पर जल्दी लग जाता था, बर्तन जल्दी धुल जाते थे क्योंकि अब घर के सब लोग ये

सब काम करते थे इसलिये अब उसको अपने बच्चों के साथ खेलने के लिये काफी समय मिल जाता था।

इस तरह ऐकन–ड्रम वाकई काम कर रहा था। वह गॉव में थोड़ा थोड़ा काम सबके लिये करता था पर काफी काम तो सारे लोग अपने आप ही करते थे।

यह इसलिये क्योंकि अब वे अपना काम खुशी से करते थे और काम करते समय गुनगुनाते भी रहते थे। जब लोग अपना काम खुश हो कर करते हैं तो काम अच्छा और ज़्यादा होता है और थकान भी नहीं होती।

ऐकन–ड्रम बच्चों को भी काम करने के लिये उकसाता था सो वे अपने माता पिता की उनके कामों में सहायता करते थे और जब उन बच्चों का काम खत्म हो जाता था तो वह उनके साथ खेलता भी था।

एक दिन उस शहर के मेयर[99] ने अपनी पत्नी से कहा — "यह ऐकन–ड्रम तो शहर में सभी के लिये बहुत अच्छा काम कर रहा है। हमको भी उसके लिये कुछ अच्छा करना चाहिये।" उसकी पत्नी तुरन्त ही इस बात पर राजी हो गयी।

मेयर की पत्नी ने ऐकन–ड्रम के लिये बच्चों के नाप की हरे रंग की एक छोटी टोपी बनायी। बच्चों ने कहा कि हॉ यह तो हमारे ही

[99] Mayor is the master of the city.

नाप की टोपी है। फिर उसने उसके पहनने के लिये एक कत्थई रंग का गर्म कोट भी बनाया।

फिर उसने उनको उस दादी को दे दिया ताकि वह उनको अपने दूध और डबल रोटी के साथ ही रख दे जो वह रोज रात को उस ऐकन-ड्रम के लिये रखती थी।

बुढ़िया बोली — "ये कत्थई रंग के लोग उन लोगों के लिये काम करते हैं जिनको काम से प्यार है। उनको कभी कुछ देने की कोशिश मत करना। अगर तुम उनके काम के लिये कुछ देने की कोशिश करोगे तो उनको लगेगा कि वह बेवकूफ हैं और वह छोड़ कर चले जायेंगे।"

मेयर और उसकी पत्नी बोले — "जब वह हम लोगों के लिये इतना अच्छा है तो हमको भी तो उसके लिये कुछ अच्छा करना चाहिये।

इसके अलावा आज शहर में हर आदमी कितना खुश है और कितना ज्यादा काम कर रहा है कि अब उस कत्थई रंग वाले के लिये भी काम बहुत कम रह गया है।"

यह सुन कर दादी ने वे कपड़े अपनी डबल रोटी और दूध के साथ ही रख दिये। ऐकन-ड्रम ने अपने खाने के साथ साथ उस रात उसके लिये बनाया हुआ कत्थई कोट और हरी टोपी भी वहाँ देखे।

उसने अपने मन में कहा — "ओह कितने सुन्दर हैं ये छोटी सी हरी टोपी और यह कत्थई गर्म कोट।" वह जान गया था कि वे

उसी के लिये थे। "पर अब मुझे यहाँ से जाना चाहिये अब मैं यहाँ और ज़्यादा नहीं रुक सकता।"

और उसने वह शहर छोड़ दिया और सड़क पर गाता हुआ चल दिया — "क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है? क्या तुम्हारे पास ऐकन–ड्रम के लिये कोई काम है?"

पहले तो वे बड़े लोग जिन्होंने ऐकन–ड्रम को देखा नहीं था सोचते रहे कि वह अभी भी उनकी सहायता कर रहा था सो वे खुशी खुशी गाते गुनगुनाते हुए अपना काम करते रहे।

और अब क्योंकि वे खुश थे तो उनका काम अभी भी बहुत सारा और बहुत आसानी से हो रहा था पर बच्चों को पता था कि ऐकन–ड्रम उनका गाँव छोड़ कर चला गया है पर फिर भी वे घर में उसी तरह से काम करते रहे जैसे ऐकन–ड्रम के सामने करते थे।

वे चाहते थे कि घर का काम अगर जल्दी हो जायेगा तो उनके माता पिता उनके साथ खेल सकेंगे। कुछ बच्चे बाद में भी ऐकन–ड्रम और दूसरे कत्थई रंग वाले आदमियों के लिये जो इधर उधर घूमते रहते थे दूध और डबल रोटी रखते रहे।

जब वह दूध और डबल रोटी वहाँ से चला जाता था तो उनके माता पिता कहते थे कि उन्हें कोई कुत्ता या बिल्ली खा गयी पर बच्चे तो हमेशा ही ऐकन–ड्रम का नाम लेते थे।

List of Stories of "Musical Instruments in Folktales"

1. The Hunter and His Magic Flute
2. Magical Flute
3. Flute
4. Wonderful Flute Player
5. The Dumb Flute Player
6. The Peacock Feather
7. The Clever Snake Charmer
8. Snowmaiden
9. Three Suitors
10. Monkey and His Violin
11. The Boy and the Violin
12. The King's Magic Drum
13. The Magic Drum
14. The Tortoise and the Drum
15. The Singing Drum
16. The Story of the Drummer and the Alligators
17. The Candyman
18. The Monkey's Drum
19. Aiken-Drum

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022